तीरभुक्ति

मूल्य : ₹ 25

वर्ष : 1, अंक : 1, जनवरी-मार्च 2018

अखिल भारतीय मिथिला संघक शोध पत्रिका

S.K. CHAUDHARY EDUCATIONAL TRUST'S

SHANKARA GROUP OF INSTITUTIONS

Kukas, Jaipur

B.Tech (028) CS, IT, EC, EE, ME, AE | **MBA** (285) Finance, HR, Marketing, IT & Comm. | **MCA** (138) BCA, BBA | **PGDM** SIM (284) SISMR (286)

FOR ADMISSION CONTACT

9950928077 | 9928023777
8178033477 | 9928024777

OR ON TOLL FREE NUMBER
180030020177

www.shankaragroup.in | www.shankaratechnology.org

SOCIETY FOR COMPUTER EDUCATION AND MANAGEMENT'S STUDIES

NDIIT
The Key To Learn & Excel
New Delhi Institute For
Information Technology & Management

NEW DELHI INSTITUTE FOR INFORMATION TECHNOLOGY & MANAGEMENT

Nehru Place, New Delhi

COURSES OFFERED

MBA MCA BBA BCA PGDM
MASS COMMUNICATION HOTEL MANAGEMENT

For Admission Contact us: 011-46515851,
26293177, 26294177, 26295277, 26295177
+91 7042089177, 7042734877

Toll Free No.: 180030020177
for more details visit: www.ndiit.org

तीरभुक्ति

अखिल भारतीय मिथिला संघक शोध पत्रिका

मूल्य : ₹ 25

वर्ष : 1, अंक : 1

जनवरी-मार्च 2018

संरक्षक

प्रभात झा

संपादक

विनीत कुमार झा 'उत्पल'*

ऋतेश पाठक

संपादक मंडल

अवनीन्द्र ठाकुर

रौशन झा

डॉ. प्रवीण कुमार झा

भास्कर ज्योति

प्रबंध संपादक

विद्यानंद ठाकुर

आवरण

संजू दास

डिजाइनर

मणिशंकर कुमार

स्थायी पता

एच-435, गली नं. 7, ई-ब्लॉक,
संगम विहार, नई दिल्ली-110062

पत्राचार पता

20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाऊस,
नई दिल्ली-110001

फोन:

सं.: 9911364316

प्र.: 9650461788, 9717539000

ईमेल:

teerbhuktimaithili@gmail.com

*प्रेस आ पोथी अधिनियमक अधीन

(उपरोक्त सभ टा पद मानद आ अवैतनिक अछि)

विषय सूची

- **संपादकीय** 6
- राजकमल चौधरीक उपन्यास: एकटा विश्लेषण / *देवशंकर नवीन* 7
- दीना-भद्री : उत्पीड़ित समुदायक स्मृति-गाथा / *डॉ. तारानन्द वियोगी* 15
- उदयनाचार्य : न्याय आ वैशेषिक दर्शनक मादे सनातनक संरक्षक / *शिव कुमार झा टिल्लू* 20
- मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास / *डॉ. कैलाश कुमार मिश्र* 23
- तथ्यक अपांयर आ भाषाक खेलाड़ी / *अरुणाभ सौरभ* 28
- इतिहासक हत्यासं व्यथित एक उर्ज्जस्वल व्यक्तित्व / *डॉ. भवनाथ झा* 32
- राजकमल चौधरीक मैथिली-कथामे स्त्री-चरित्रक विश्लेषण / *धर्मव्रत चौधरी* 34
- फेसबुक आ कविता / *गंगेश गुंजन* 37
- चारि टा कविता / *स्वाती शाकम्भरी* 39
- किछु जीबाक लेल, किछु जिएबाक लेल / *मनोज शाण्डिल्य* 41
- बथान (एनिमल फार्म) / *जॉर्ज ऑर्वेल* 43

पत्रिकामे प्रकाशित आलेख आ रचनामे व्यक्त विचार आ दृष्टिकोण लेखक के छनि। संपादक अथवा प्रकाशक केँ ओहिसँ सहमत होयब आवश्यक नञ अछि।

संपादकीय

जहिना आजुक समयमे भाषाक विस्तार भ' रहल अछि, तहिना शोधक आवश्यकता सेहो महसूस कयल जा रहल अछि। शोध अंगरेजीके 'रिसर्च'क अर्थ अछि, मतलब री-सर्च माने फेर सँ खोज। ई खोज कोनो भी दृष्टि सँ भ' सकैत अछि। चाहे ओ कोनो विषय पर भाषाके ल' क' हो, ओकर सामाजिक पक्षके लेल हो, ओकर मनोवैज्ञानिक पक्ष के हेतु हो, विभिन्न 'लेंस' सँ देखल सँ संतुलित दृष्टि बनैत अछि आ ओहि विषयक विश्लेषणसं एकटा नव पक्ष सेहो लोकक आगू आबैत अछि, नव विमर्श होयत अछि, नव लोक जुड़ैत अछि।

बदलल समयमे ऑनलाइन मीडिया वा कहू सोशल मीडिया सभ हाथके लिखय के ठहार देने अछि, जाहि सँ लिखय के प्रवृत्ति जबरदस्त तरीका सँ बढ़ल अछि, फेसबुक पर विचार-विमर्शक दायरा व्यापक भेल अछि, 'वसुधैव कुटुम्बकम' के विस्तार देने अछि, आ जिला, राज्य, देशक सीमा त' ख़त्म भेबे करल वैश्विक सीमा सेहो बिला गेल अछि। एकर परिणाम ई भेल जे आब एकटा मोबाइल आ ओहिमे इंटरनेट जों अहाँ लग अछि त' दुनियाक सभ विधाक विचार-विमर्श आ मीमांसाक रचना 'की-बोर्ड' पर टिप-टिप करैत क' सकैत छी। आब कोनो वेदव्यास के गणेशक आवश्यकता नहि अछि।

ई तथ्य सत अछि जे मिथिला सदिखन सँ विमर्शक केंद्र रहल अछि। मिथिला शास्त्रार्थक धरती सेहो अछि। यैह ओ माटि अछि जतय मीमांसाक जन्म भेल, आदि शंकराचार्य-मंडन-भारतीक शास्त्रार्थ भेल, गार्गी, मैत्रेयी सन स्त्री विद्वानक जन्म आ कर्म स्थली थीक, तखन ई सोचल जा सकैत अछि जे अहि माटिसं जन्म लेबय बला लोकक शोणितमे कतेक विमर्श भ' सकैत अछि। एनामे आय मैथिलीक विस्तार त' भेल अछि, मुदा मिथिला आ मैथिलीक शोध जेना हेबाक चाहि तेना नहि भ' रहल अछि। अहि कमीके महसूस करैत 'तीरभुक्ति' नामक त्रैमासिक शोध पत्रिकाक प्रकाशन अखिल भारतीय मिथिला संघ, नई दिल्ली के द्वारा कयल जा रहल अछि। एहि अंकमे दीना-भद्री, राजकमल चौधरी, तारानंद वियोगी आदि पर केन्द्रित सामग्री अछि। संगहि चंपारणमे जनमल जार्ज आर्वेलक नामी उपन्यास 'एनिमल फॉर्म' के मैथिली अनुवाद सेहो प्रकाशित कयल जा रहल अछि।

एहि अंक पर पाठकक विस्तृत प्रतिक्रियाक प्रतीक्षा रहत।

– विनीत उत्पल

राजकमल चौधरीक उपन्यासः एकटा विश्लेषण

देवशंकर नवीन

राजकमल चौधरीक दोसर उपन्यास थिक–आन्दोलन। अइमे नाटकीय शैली पर विशेष जोर अछि। मुदा इहो उपन्यास मनोविश्लेषणात्मके अछि। नाटकीय शैलीक गद्यमे मनोविश्लेषणक सुविधा ताकब आसान नञ होइत अछि, मुदा राजकमल चौधरीक कथा-कौशलकें ई सब सुविधा तकबामे कोनो तरद्दुत्त नञ होइ छनि। सुगठित शिल्पमे सामाजिक यथार्थक मौलिक चित्र अंकित करब हिनकर रचनाक मूल स्वभाव थिक। व्यतीत आ वर्त्तमानक घटना-चक्रक आश्रयसँ सम्भाव्य दिश इशारा एहेन कौशलसँ करै छथि जे ओ रचना एकदम सहज आ नागरिक जीवनक दैनिक व्यवस्था-जकां लगैत अछि।

मैथिलीमे उपन्यास लेखनक प्रारम्भिक अवधि थिक सन् 1914-1933, अर्थात् 'निर्दयी सासु' सँ 'कन्यादान'क रचनाकाल धरि। अइ मध्य कैक टा उपन्यास लिखल गेल, मुदा अइ समय धरि हिन्दी आ आन भारतीय भाषाक उपन्यासक प्रगति देखैत विषयक विस्तार आ शिल्प-शैलीक नूतनताक दृष्टिएं उल्लेखनीय उपन्यास थिक—जनार्दन झा 'जनसीदन'क निर्दयी सासु (1914), जीवछ मिश्रक रामेश्वर (1916), रासबिहारी लाल दासक सुमति (1918), कुमार गंगानन्द सिंहक मनुष्यक मोल(1924), पुण्यानन्द झाक मिथिला दर्पण(1925), जनार्दन झा 'जनसीदन'क पुनर्विवाह(1926), कांचीनाथ झा 'किरण'क चन्द्रग्रहण(1932), हरिमोहन झाक कन्यादान(1933)आदि।

अइ आंकड़ाकें देखैत ई लगैत अछि जे मैथिली उपन्यासक मूल लेखन नञ किछु तं दू-अढ़ाइ दशक पाछू आबि कए प्रारम्भ भेल, आ शीघ्रे माटि पकड़ि लेलक। ध्यान रखबाक थिक जे पहिने बिहार आ बंगाल एकहि प्रान्त छल, कलकत्ता तकर प्रशासन-केन्द्र छल। सन् 1912मे बिहार-बंगाल विभाजित भेल मुदा मिथिलाक लोकक सम्पर्क कलकत्तासँ बनले रहल। उल्लेखनीय अछि जे स्वातन्त्र्योत्तर काल, अथवा ताहूसँ आगू, आपातकालक बाद धरि रोजगारक टोहमे विभिन्न आयुवर्गक मैथिल दिल्ली, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र दिश अपन रुखि केलनि, मुदा एखनहुं धरि कलकत्ता-प्रेमसँ मैथिल लोकनि पूर्णतया मुक्त नञ भेल छथि।... मैथिली उपन्यासक उद्‌भवक स्रोत बौद्धिक जन'क स्वानुभूति, अन्तःप्रेरणा, मिथिलाक समकालीन परिवेश, मानव जीवनक विसंगति, फिरंगी शासकक अत्याचार...जे किछु रहल हो; मुदा सम्भव ईहो अछि जे बौद्धिक जनकें अइ परिस्थितिसँ 'निज भाषा' अर्थात् 'मातृभाषा'क उन्नति लेल; सर्वथा नव विधा उपन्यासक लेखन लेल प्रेरणा जागल होइन।

मैथिलीमे उपन्यास लिखाएल तं जाए लागल खूब, मुदा तदनुसार सर्वविधि विकास नञ भेल—अइ तथ्यकें स्वीकार'मे संकोच नञ कर'क चाही। मिथिलाक नव बौद्धिक वर्गमे सब तरहक जागरूकता आ चेतनाक अछैत मैथिलीक उपन्यास लेखन मिथिलामे स्त्रीक दयनीयता पर कनैत रहल। एते धरि जे वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' धरिकें सन् 1946मे 'पारो'क परिस्थिति पर कान' पड़लनि, जे सन् 1916सँ 1937 धरिक अन्तरालक दुनियां भरिक औपन्यासिक उत्थान देख चुकल

संपर्क : भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, मो. 9868110994

छलाह। जं पहिनेक उपन्यासकार कनेको साहस केने रहितथि, तं सम्भव छल, जे 'नवतुरिया'मे जे डेग यात्री उठौलनि, से डेग 'पारो'एमे उठि जइतए। चेतना आ बौद्धिकताक दृष्टिएं मिथिला क्षेत्र सदासँ आगु रहल अछि, तथापि उपन्यास लेखनक विकासोन्मुख धारामे मैथिली अइ तरहें पछुआएल रहल, तकर मूल कारण रचनाकारक जीवनानुभूति आ रचना-दृष्टिक कमजोरी नञ छल; मूल कारण छल मिथिलाक जनपदीय परिस्थिति आ आम नागरिकक मानस लोक।

भारतीय स्वाधीनताक दशक भरि बाद सन् 1958मे राजकमल चौधरीक पहिल मैथिली उपन्यास 'आदिकथा' प्रकाशित भेल। अइ समय धरि मैथिली उपन्यासक भण्डार कोनो तेहेन झुझुआनो नञ छल। 'चन्द्रग्रहण', 'पारो' आ 'नवतुरिया' सनक विशिष्ट उपन्यास सब प्रकाशित भ' चुकल छल। 'पारो'क कथावस्तु आ घटनाक्रम पर मिथिलाक कट्टरपन्थी लोकनि वितण्डा ठाढ़ क' चुकल छलाह। असलमे मिथिला क्षेत्रक सामान्य जनजीवनक समस्या ओइ समय धरि विकराल छल। पंजी-प्रथा आ जमीन्दारी संस्कारसँ मिथिलाक जे वर्ग आक्रान्त छल, ओएह वर्ग सामाजिक व्यवस्थाक नीति-निर्धारक होइ छल। पंजी-प्रथाक कारणें मिथिलामे स्त्री जातिक स्थिति दयनीय छल। बाल विवाह, बेमेल विवाह, बहु-विवाह, वृद्ध विवाह सन कुरीति पंजीए प्रथाक परिणति छल। तथाकथित उच्च कुलशीलक पुरुष अनेक बेर विवाह क' लै छलाह। कतोक किशोरी अथवा युवतीक विवाह, पिता आ पितामहक उमेर'क लोकसँ भ' जाइ छल। अइ किशोरी आ युवतीक पितावर्ग ओइ जमीन्दार लोकनिकें अपन उद्धारक बूझै छलाह आ तृप्त भेल घोषित करै छलाह जे बेटी आब रानी बनि राज करतीह, बेटीक मोन आ मनोभावकें बूझब ओ अपन दायित्व नञ मानै छलाह। जाहि समाजमे वैज्ञानिक विकासक कोनो टोप-टहंकार पहुंच नञ सकल छल, ओतएक लोक अपन जीवन व्यवस्थाकें एतेक यान्त्रिक बना नेने छल, जे ओइ बेटीक बाप-माइकें ई नञ बुझाइन जे एकटा स्त्री लेल अन्न-पानि, जमीन-जथा, गहना-जेबरे टा सब किछु नञ होइ छै; कोनो स्त्रीक मनोवेगक उत्ताप-अनुताप, युवावस्थाक दैहिक भार सेहो बड़ अर्थ रखै छै। स्त्री मनोवेगक अइ दशाक बोध ओइ उच्च कुल-वंशीय जमीन्दारकें सेहो नञ होइ छलनि। अइ तरहक विवाहक परिणति दू दिशामे होइ छल—की तं जवानीक उमेर अबैत-अबैत किशोरी विधवा भ' जाइथ, आ कि वृद्ध पति संग जवान पत्नीक रति-विलास सुखकर नञ पाबि कुण्ठित होइत रहथि। दुनू परिस्थितिमे देहक भार कोनो जवान पुरुखकें सौंप देबा लेल ओ युवती विधवा, अथवा अतृप्त सधवा ललायित रहै छलीह। राजकमल चौधरीक 'आदिकथा' उपन्यास एहने अतृप्त सधवा अथवा कामातुर विधवाक कथा थिक जे अभिलाषा आ मर्यादाक दू छोरसँ तानल-छानल छथि।

'आदिकथा'क नायिका सुशीलाक विवाह वृद्ध जमीन्दार अनिरुद्ध बाबूसँ भेलनि। दुनूक वयसमे एक पीढ़ीक अन्तर छलनि। सुशीलाक उमेर अपन सतौत बेटा कुलानन्दसँ मेल-जोल खाइ छलनि। पहाड़ी नदी, अथवा कोशीक बाढ़ि, अथवा समुद्रक ज्वारि सन सनकी जवानी आ देह-तन्त्रक अधीन सुशीलाक मोन कोनो मर्यादाक बन्हन मान' लेल तैयार नञ छलनि, मुदा घून खाएल चौकठि-केबाड़ सन मिथिलाक कौलिक मर्यादामे तकरा छेक क' रखबाक प्रयास कएल जाइ छल। सुशीला अइ जर्जर मर्यादाक पुल पर सम्हरि-सम्हरि क' पैर राखि जीवन पार कर' चाहै छलीह, मुदा बीचहिमे अनिरुद्ध बाबूक भागिन देवकान्तक कान्तिमय रूप, चट्टान सन काया-काठी देखि सुशीला, अर्थात सोना मामीक मोन सम्हरि नञ सकलनि, ओ बहकि जेबाक उद्यम नञ केलनि, मुदा बहकि जएबासँ अपनाकें रोकि राखब एते आसानो नञ छलनि। सुशीलाक अतृप्त वासना आ दमित अभिलाषाक संकेत देवकान्तकें लागि जाइ छनि। अइ दुनू चरित्रक मनोविश्लेषण अइ उपन्यासमे बेस सूक्ष्मतासँ भेल अछि। बीचमे आओरो कतोक घटना-उपघटनाक माध्यमे मूल कथाकें मांसल आ प्रभावकारी बनाओल गेल।

मामि-भागिनक कामातुर अनुराग सामाजिक रूपें स्वीकार्य नञ अछि, तें अइ उपन्यासक कथानक मिथिलाक पुरातन विचारक लोककें पसिन नञ पड़लनि। आदिकथा उपन्यास पर जे लोकनि मर्यादाक उल्लंघनक ढोल बजौलनि, ओ लोकनि अनिरुद्ध बाबूकें अमर्यादित पुरुष नञ कहलनि, जे अपन अशक्य अवस्थामे सन्तानहुंसँ छोट वयसक युवतीकें पत्नीक रूपमे वरन् केलनि। सुशीलाकें जखन अतृप्त मनोवेगक दौरा पड़लनि तखन श्वसुर स्थानीय जोतखी जी आडम्बर पसारलनि जे हुनका पर प्रेतनी सवार भ' गेलखिनहें। आ, भूत झारबाक बहन्नें वधू-स्थानीय सुशीलाक बांहि, पांजर पकड़बाक आचरण गामक लोककें अमर्यादित नञ लगलनि। किऐ तं अइ समस्त आचरणक फैण्टेसीमे मिथिलाक समाज प्रारम्भहिसँ जीबैत आएल छल।

मनुष्य जें कि एकटा जटिल प्राणी थिक, तें मनुष्यक समस्त मानसिक प्रक्रिया विचित्र जटिलतासँ आबद्ध रहैत अछि। हजारह बर्खक विकास-यात्रामे मनुष्यक सभ्यता आइ जाहि स्थिति धरि पहुंचल अछि, ताहिमे विवेक-धारणाक विराट भूमिका अछि। मर्यादाक रक्षा विवेकहीन आचरणसँ नञ भ' सकैत अछि।

मर्यादाक निर्वाहमे एक ठाम देखाओल गेल विवेकहीनता अनेक अमर्यादाक जननी होइत अछि, अइ सत्यक उपेक्षा केनिहार लोक पारो, आकि आदिकथा सन उपन्यासक कथा पर अंगुरी उठबैत छथि। मैथिलीमे लिखल राजकमल चौधरीक तीन गोट उपन्यास उपलब्ध अछि —आदिकथा, आन्दोलन आ पाथर-फूल। एकर अलावा हंसराजक नामे 19.11.1959 सँ 06. 01.1960क बीच एक पत्रमे राजकमल चौधरी लिखने छथि...जनवरीमे एकटा मैथिली उपन्यास लिखब हम—बटगमनी। एकटा एहन युवती पर जे भरि जिनगी विभिन्न लोकक संगें पड़ाएल घुरइ'ए। कथाक विस्तार जनकपुरसँ पूर्णियां धरि रहत। —कहि नञ ई उपन्यास लिखल गेल अथवा नइं। आदिकथा आ आन्दोलन तं पहिनहिसँ पाठक लोकनिकें उपलब्ध छलनि। पाथर-फूल उपन्यास बहुत दिन धरि अनुपलब्ध छल। आखर (राजकमल विशेषांक) पत्रिकामे जीवकान्त अपन निबन्धमे राजकमल चौधरीक पंक्ति उद्धृत कएने छथि—एक गोट उत्साही युवक ओकरा('पाथर-फूल' उपन्यासकें) प्रकाशित करौलनि, मुदा ककरो कहला पर जे उपन्यासक अश्लीलताक कारणें प्रकाशक बन्हा जेताह, प्रकाशित मैटर ओ(प्रकाशक) डैमेज करबा देलनि।—मुदा सुकर भेल जे दू बर्ख पूर्व तारानन्द वियोगी ओइ उपन्यासक एकमात्र प्रति कतहुसँ नष्ट-भ्रष्ट स्थितिमे उपलब्ध केलनि। सम्पूर्ण पोथीमे दीवार महाशय आर-पार एकटा भोकांड़ क' देलखिन। ओही स्थितिमे ओकर छाया प्रति करबा कए बीचसँ पंक्तिकें जोड़ल गेल अछि। जोड़ल शब्दावलीमे राजकमलक शैली आ गरिमा अक्षुण्ण रहि सकल—से कहब कठिन अछि, मुदा एते तय अछि जे उपन्यासक रसबोधमे कोनो बाधा उपस्थित नञ होइत अछि। एकर अलावा आओरो एकाध उपन्यासक चर्चा अछि, मुदा तकर कोनो सूत्र एखन धरि उपलब्ध नञ भेल अछि।

कहल जा चुकल अछि 'आदिकथा'क समय धरि सेहो मैथिलीक पाठक समाजक बोध-शीर्ष आ विचार-फलक उर्ध्वमुखी नञ भेल छलनि, एकदम सपाट भूमि पर जर्जर परम्पराक खुट्टीसँ बन्हाएल घूमि रहल छलनि। पूर्ववर्ती रचनाकार सेहो कम प्रयास नञ केलनि। कविताक क्षेत्रमे कतोक गोटए अपन योगदान देलनि। कथा आ उपन्यासक क्षेत्रमे कांचीनाथ झा 'किरण' आ हरिमोहन झा स्त्री आ विवाहसँ सम्बन्धित मिथिलाक जड़िआएल समस्या पर नजरि द' चुकल छलाह। वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', 'पारो' आ 'नवतुरिया'मे अइ गन्हाएल वैवाहिक पद्धति पर समधानि क' चोट क' चुकल छलाह। तथापि समाज व्यवस्थाक पाखण्ड आ अयथार्थ आदर्शक चांगुर अइ समाजकें जकड़ने छल, स्वाधीनता प्राप्तिक दशक भरि बादहु मिथिलाक लोक अइ वैवाहिक पद्धतिक प्रति घृणा आ विरोधक भाव नञ अवधारलनि। चुतुर्थिएक राति 'पारो' सन बालिकाक संग पति-स्थानीय वृद्ध राक्षस द्वारा बलात्कार; अथवा 'सुशीला' सन उद्दाम यौवनसँ भरल सुकामिनीक यौन-प्रताड़णाक प्रति किनकहु मोन खिन्न नञ भेलनि। पंजी प्रथाक विकृतिक रूपमे भेल एहेन बेमेल विवाह, बाल-वृद्ध विवाह आ बहु-विवाहक कारणें वृद्ध अथवा स्वर्गवासी जमीन्दारक कठमस्त जवान स्त्रीक संग रमणेच्छा सबकें रहै छलनि, गाछमे पाकल लताम देखि कौआ जकां दू लेल मारि अएबाक लालसा सबकें होइ छलनि, मुदा ओइ युवतीक मोन आ सम्वेदनासँ किनकहु कोनो मतलब नञ छलनि। छद्म आ अतिशयोक्तिसँ भरल मिथिलाक जीवन-पद्धतिक इएह विडम्बना छल। विवाहेतर सम्बन्ध रखबासँ परहेज नञ छलनि, भेद खुजि जएबाक डरें आतंकित रहै छलाह। एहेन समाजमे सुशीला आ देवकान्त अपन मोनक समर्थन कोना करितथि—उपन्यासकारक सोझां ई पैघ समस्या छल। आदर्श आ मर्यादाक जर्जरतासँ आच्छन्न अइ प्रवृत्तिक कारणें उपन्यासकार 'आदिकथा'कें सुखान्त नञ बना सकलाह। सम्भवतः इएह कारण थिक जे बाबा यात्री 'पारो'क दुर्दशासँ व्यथित भेलाह, उग्र नइं। रचनाकारक व्यथासँ पाठककें सामान्यतया उग्र हेबाक चाही, मुदा यात्री देखलनि जे समाज एखनहुं उग्र नञ भेल। आठ बर्खक बाद फेरसँ यात्री 'नवतुरिया'कें ठाढ़ केलनि।

मिथिला क्षेत्रक एहेन जड़ मनःस्थितिक समाजमे कोनो प्रगति चेतनासँ सम्पन्न रचनाधर्मी लोकक मानसिक उद्वेलनक कल्पना कएल जा सकैत अछि। निर्दयी सासु, सुमति, मनुष्यक मोल, पुनर्विवाह, चन्द्रग्रहण, कन्यादान आदि पूर्ववर्ती उपन्यासमे मिथिलाक स्त्रीक दुर्दशाक चित्रण भेल, मुदा चित्रणक स्वरूपसँ स्त्री-चेतना आ स्त्रीक दुर्दशाक प्रति पुरुषक वैचारिक उद्वेलनक कोनो उद्यम अइ जनपदमे नञ देखल गेल। स्पष्टतः ई दोष रचनाकारक नइं, रूढ़िग्रस्त मैथिल समाजक धर्मान्धताक छल। 'पारो'आ 'आदिकथा'मे सेहो स्पष्ट विरोध अइ कुरीतिक प्रति नञ देखाइत अछि, मुदा 'पारो'क यौन उत्पीड़न और 'सुशीलाक यौन प्रताड़णसँ पाठकक मोन खिन्न होइत अछि। संख्यामे थोड़े सही, मुदा 'बिरजू'क क्रोध आ 'देवकान्त'क व्यथाक सहयात्री लोक अवस्से बनैत अछि। ई समय समाजक बदलैत मनःस्थितिक छल। उपन्यासकार अपन मोनक नञ क' सकलाह, मुदा संकेत देलनि—समाजक बदलइत धार्मिक नैतिक मान्यतादिक अइ संक्रमित कालमे (आदिकथा)'कॉमेडी' नञ बनि सकल, मात्र एक अपूर्ण 'ट्रेजेडी' रहि गेल। इएह समकालिक यथार्थ थिक।

लोक प्रेम करइए, प्रेमपात्रक लेल बेकल रहइए, मुदा, संस्कारक ससरफानी तोड़ि नञ पबइए। इएह आदि-आदिसँ चल अबइत कथा थिक, आदिकथा थिक।...

मिथिला क्षेत्र भारतक एकटा एहेन भूखण्ड थिक जतए परस्पर विरोधी आचरण आ व्यवस्था निःशंक भ' कए विकसित भ' रहल अछि, होइत रहल अछि। पर्याप्त संख्यामे उद्दाम प्रवाहक नदी अछि, बाढ़िक कारण ओकर प्रवाहमे उद्दाम गत्यात्मकता अबैत अछि, प्रति वर्ष कोसीक बाढ़ि, गंगाक बाढ़ि, बागमती, कमला आदि नदी सभक बाढ़िक कारण तीव्रतासँ नदी-नालाक दिशा, स्थान परिवर्तित होइत रहल, जमीनक तल परिवर्त्तन होइत रहल...मुदा अइ प्रबल प्रभावकारी प्राकृतिक परिदृश्यक प्रतिकूल एतएक जीवन-यापन आ आचरण शिथिल, सुस्त, आ आरामपसन्द बनल रहल। गत्यामकतासँ निर्लिप्त, यथास्थिति पर अतीव आग्रह एतए काएम रहल अछि।. ..विद्वताक लेल मिथिला क्षेत्र पुरातन कालहिसँ नामी-गिरामी रहल अछि। विद्वता आ प्रगतिशीलता आपसमे सहयात्री होइत अछि, अर्थ-धर्म-काम-मोक्षक परिभाषा बुझितहि मनुष्यमे उदारताक प'ट खुजैत अछि, आ कलुष मेटाइत अछि। मुदा, मिथिलामे सब कथूक अछैतो अइ समस्त सद्वृत्तिक लोपे-लोप रहल, उनटे रूढ़ि, पाखण्ड, धर्मान्धता, अस्पृश्यता आदि भावना जड़िआएल रहल। जीवन विरोधी जर्जर व्यवस्थाक अनुपालनमे अपन इच्छा आ नैतिकताकें मारैत रहल, फोंक मर्यादाक प्रदर्शन हेतु छद्म जीवन प्रक्रिया चलैत रहल। अइ छद्मक प्रति जड़िआएल आग्रह एतेक बढ़ल छल, जे छद्मे वास्तविकता लगैत रहल। छद्मक आंचर हटएबाक अर्थ मर्यादाक अतिक्रमण बूझल जाए लागल। राजकमल चौधरीक समस्त रचना अही छद्मक अनावरणमे लागल रहल। आदिकथा उपन्यास सेहो, तकरे प्रमाण थिक। समाज ओइसँ पहिने कनेको प्रगति-बोधसँ युक्त भेल रहितए, तं सम्भव छल जे सुशीला आ देवकान्तक आदिकथा दुखान्त नञ भ' कए सुखान्त भ' जइतए।

आदिकथा उपन्यासक अप्रतिम प्रभावोत्पादकताक मुख्य कारण प्रयुक्त गद्य सेहो थिक। राजकमल चौधरीक गद्य-रचनामे एकटा खास बात रहैत अछि, जे ओ अपन मन्तव्य राख' लेल घटनावलीक कोनो शृंखला नञ तकै छथि; छोट सन कोनो प्रसंगक चारू भर एकटा परिवार, समाज अथवा मण्डली ठाढ़ करै छथि; ओकर आचरणकें ओकर मानसिक व्यापारसँ जोड़ैत जाइ छथि; अन्ततः अइ तरहक चरित्र-चित्रणे हुनक मन्तव्यकें आकार, रचनाकें पूर्णता, अभिप्रायकें सफलता, आ प्रभावकें उत्कर्ष द' दैत अछि। आदिकथा उपन्यासमे मोटा-मोटी घटना तं एतबे अछि जे कोनो विपत्ति-यात्रामे सुशीला आ देवकान्तक भेंट होइ छनि, बीचमे सब तरहक राग-अनुराग चलैत अछि, आ अन्ततः ओ भेंट, ओ अनुरक्ति एकटा अयथार्थ आदर्शक रक्षामे पानि पर लिखल आखर जकां मेटा जाइत अछि। मुदा ई सम्पूर्ण ताना-बाना किछु खास-खास तरहक चरित्रसँ बुनल गेल अछि, ओइ चरित्रेक माध्यमसँ राजकमल चौधरी अइ उपन्यासकें अपन समयक एकटा महत्त्वपूर्ण उपन्यासक रूप देलनि अछि। आदिकथा, एकटा दुखान्त प्रेमकथाक प्रमाण होइतहु समकालीन समाजक मार्मिक आ बेधक दृश्यक कोलाज थिक, जाहिमे पंजी प्रथा, सामन्ती संस्कार आ सामाजिक पाखण्ड पर चोट अछि; जमीन्दारिएक जड़िसँ निकलि कए जमीन्दारी प्रथाक विरोध परिवर्त्तन-चक्रक सार्थकता साबित केलक अछि। समस्त पद-प्रतिष्ठा-सम्पन्नताक अछैत मिथिलामे स्त्री लेल कोन तरहक सोच-पद्धति अपनाओल जाइत रहल अछि, तकर स्पष्ट चित्र बनि सकल अछि।

आदिकथाक मुख्य पुरुष चरित्र छथि—अनिरुद्ध बाबू, कुलानन्द, महानन्द, ज्योतिषी लघुकान्त, आ देवकान्त। किछु गौण पात्र सेहो छथि—डाक्टर वैद्यनाथ, धर्मशालाक मैनेजर, खबास इत्यादि। मुदा हिनका लोकनिक कोनो चारित्रिक विकास उपन्यासक कथाभूमिमे नञ भेल अछि। लघुकान्त ज्योतिषीक अवतारण ाा सेहो सामाजिक धर्मान्धता, पाखण्ड, भीरुता, छद्म आ निर्लज्जता देखएबा लेल भेल अछि। धरमपुरवाली, अर्थात् सुशीला, अर्थात् देवकान्तक सोनामामी, अर्थात कुलानन्द, महानन्दक सबसँ छोट सतमाइ कामोत्तेजनामे, अथवा कोनो मादक पदार्थक सेवनसँ बेहोश छथि। प्रयोजन छलै हुनक सेवा-परिचर्या अथवा चिकित्साक, मुदा ज्योतिषी जी एकटा जवान स्त्रीक कामोत्तेजक बांहि-पांजरक स्पर्श पएबा लेल, कुत्सित लिप्सा तृप्त करबा लेल, अपन फोंक अस्मिता समाजमे ऊंच करबा लेल, आ लोक पर अपन पाखण्डक मनोवैज्ञानिक दबाब बढ़ेबा लेल घोषित करै छथि, जे सुशीला पर ओएह प्रेतनी सवार छनि, जे तीन बर्ख पहिने हुनका हरिद्वारमे भेटल रहनि—ई बात, ज्योतिषीकें भगवती कहि देने छनि...। मुदा उपन्यास मध्य राजकमल चौधरी एहेन एकहु छद्म चरित्रकें क्षमादान नञ देलनि अछि।...जे प्रेतनी छलहे नइं, तकरासँ मान-मनुहार ज्योतिषी करैत रहलाह, श्वसुर स्थानीय होइतहुं, नजरिए आ स्पर्शे टासँ सही, सुशीला सन रसवन्तीक रसपान करैत रहलाह, एही बीच हुनक पोल खुजि गेल, ओ नांगरि सुटका क' पड़एलाह।

अइ उपन्यासमे राजकमल चौधरी जमीन्दार परिवारक सदस्य लोकनिकें ज्यामितीय आकृति पर ठाढ़ क' कए

सामन्ती संस्कार, पंजी-प्रथा आ मिथिलाक स्थगित चिन्तन प्रणालीक धज्जी उड़ा रहल छथि। एहेन विकृत, वीभत्स रूप भरिसके कतहु भेटए। महानन्द, कुलानन्द, सुशीला—तीनू त्रिभुजक तीन कोण पर ठाढ़ छथि। केन्द्रमे बैसल छथि स्वयं अनिरुद्ध बाबू, बेबस, लाचार, खानदानी पराक्रम आ कौलिक मर्यादाक गोबर गीजैत। आ बाहरमे ठाढ़ छथि देवकान्त। त्रिभुज आ त्रिकोण—दुनूसँ सम्वेदना, एक कोन पर अनुरक्ति, मुदा प्रवेश वर्जित, अमर्यादित.. .। विचित्र हाल छल मिथिलाक! अशक्य अनिरुद्ध बाबू केन्द्रमे रहितहु, कतहु नञ रहलाह। अनिरुद्ध बाबूक देहावसान होइतहि जमीन्दारीक पालो थमै लेल कुलानन्द केन्द्र दिश लपकै छथि। त्रिभुज टूटि जाइत अछि, मुदा देवकान्त तथापि बहरइए रहि जाइ छथि। एकटा क्रोधी, नशेरी आ लम्पट पतिक पत्नी द्रौपदी कतहु नञ छथि, किछु नञ छथि। ई मिथिलाक आदर्श आ मर्यादा छल, जकरा, राजकमल चौधरी जीवन लेल अयथार्थ मर्यादा साबित केलनि।

परंच मूल बात अछि सुशीला आ देवकान्तक अनुरक्तावस्थाक मनोविश्लेषण। अइ विश्लेषणमे उपन्यासकार सहजहिं चमत्कृत करै छथि। अइ अनुरक्तिक कथाकें मांसल आ उन्मादक बना क' पाठकक कामेच्छा आ कुत्सा बढ़बै लेल नइं; समाज व्यवस्थामे चलैत अयथार्थ आदर्श आ मर्यादाक प्रति पाठक/ भावककें उद्वेलित करै लेल। अइ चित्रणमे राजकमल चौधरीक मनोविश्लेषणात्मक शिल्प अत्यन्त प्रभावकारी साबित भेलनि अछि। उपन्यास तं मानव जीवनक यथार्थक आख्यान होइत अछि, जाहिमे घटना-चक्र आ स्थान-काल-पात्रक आश्रय लेल जाइत अछि। मूल कथाक संग-संग कतोक आनुषंगिक कथा अबैत अछि आ अइ सब क्रियामे चरित्र-चित्रणक अमूल्य योगदान होइत अछि। चरित्र-चित्रणेक माध्यमे कथानकमे प्रवाह अबैत अछि आ लक्ष्य प्राप्तिक बाट सोझराइत अछि। उपन्यासक पात्रक चारित्रिक फलक जतेक सोझराएल रहत; ओकर अभिक्रिया आ कथोपकथन स्पष्ट आ गत्यात्मक हएत। जें कि कोनो व्यक्तिक एक-एक आचरण ओकर मानसिक हैसियतक परिचायक होइत अछि, चरित्र चित्रणमे मनोविश्लेषणक महत्त्व सर्वोपरि होइत अछि।

गम्भीरतापूर्वक देखल जाए तं अइ उपन्यासक अधिकांश घटनाचक्र चरित्रक मोनहिमे घटित भेल अछि। सभ क्यो अपन मन्तव्य संकेतहिमे व्यक्त केलनि अछि, किनकहु धारणा स्पष्ट बोलीमे सोझां नञ आएल अछि। अइ कथामे पात्रे टा नइं, प्रेम-शास्त्रक सूक्ष्मतम मनोविज्ञानक चित्रण सेहो अत्यन्त व्यापक, चमत्कृत आ प्रभावकारी रूपें भेल अछि। देवकान्त सोना मामीसँ तते बेसी प्रेम करए लागल छथि, जे आओर ठाम ओ जते बेसी व्यावहारिक आ बुद्धिमान होथु, अइ प्रेम-कथामे अत्यन्त डरपोक, तर्कवादी आ संशयवादी भ' गेल छथि। सौंसे कथामे सुशीलाक समर्पण, सुशीला पर अपन अधिकार, समर्पणक संकेत आ आदर्श-मर्यादाक गुणा-भाग करैत रहि जाइ छथि। खन सोचै छथि जे सुशीला पर हुनक की अधिकार छनि? फेर सोचै छथि, अधिकार नञ छनि तं अपन बीमार पतिकें छोड़ि, हुनक सेवा-सुश्रूषा लेल ओ किऐ पहुंचि गेलीह?

अइ उपन्यासमे जतबे विविधता पुरुष पात्रमे अछि, ताहिसँ कनेको कम स्त्री-पात्रमे नञ अछि। मुख्य स्त्री पात्र सब छथि—सुशीला, हरिनगरबाली(अनिरुद्ध बाबूक तृतीया आ द्वितीया), द्रौपदी(कुलानन्दक पत्नी)। हरिनगर वालीक उपस्थिति सौंसे उपन्यासमे ओहने कुटिल आ नाटकीय अछि, जकर चर्चा उक्त उद्धरणमे अछि। मैथिल स्त्रीक समस्त दुर्गुण हिनकर आचरणमे भरल छनि। फूटल ढोल, बिन पेनीक लोटा, चुगलखोरनी, भाभट पसारैमे दक्ष, सौतिनकें दुष्चरित्रा साबित करबामे तल्लीन स्त्री छथि, हरिनगरवाली। कुटिल आदर्शसँ भरल सामाजिकता इएह थिक, जाहिमे मानवीय संवेदनाकें अक्षुण्ण रखबाक तर्क ताकब व्यर्थ थिक। आदिकथाक इतिवृत्ति एकर उदाहरण थिक।

राजकमल चौधरीक दोसर उपन्यास थिक—आन्दोलन। अइमे नाटकीय शैली पर विशेष जोर अछि। मुदा इहो उपन्यास मनोविश्लेषणात्मके अछि। नाटकीय शैलीक गद्यमे मनोविश्लेषणक सुविधा ताकब आसान नञ होइत अछि, मुदा राजकमल चौधरीक कथा-कौशलकें ई सब सुविधा तकबामे कोनो तरद्दुत नञ होइ छनि। सुगठित शिल्पमे सामाजिक यथार्थक मौलिक चित्र अंकित करब हिनकर रचनाक मूल स्वभाव थिक। व्यतीत आ वर्त्तमानक घटना-चक्रक आश्रयसँ सम्भाव्य दिश इशारा एहेन कौशलसँ करै छथि जे ओ रचना एकदम सहज आ नागरिक जीवनक दैनिक व्यवस्था-जकां लगैत अछि।

कथानक एकटा बेरोजगार युवक 'कमल'क कलकत्ता महानगरमे रोजगार प्राप्ति हेतु प्रवेश आ कलकत्ता प्रवासक क्रममे उपस्थित विभिन्न दृश्यावलोकनक क्रमबद्ध नियोजन पर आधारित अछि। मूल कथा भाषा-प्रेमसँ ओत-प्रोत मैथिली आन्दोलनक विविध चरणकें रूपायित करैत अछि। विवरण विस्तारमे अइ आन्दोलनक नग्न स्वरूप सोझां अबैत अछि। मैथिल जातिक मत-भिन्नता, ईर्ष्या-द्वेष, धोखाधरी इत्यादि अपूर्व कलात्मकतासँ चित्रित भेल अछि। कथा-सूत्रक विस्तारमे पात्रक अवतारणा आ उपकथाक समावेश परम विश्वसनीय आ सहज यथार्थक

संग भेल अछि। उपन्यासकारक कहब छनि जे 'आजुक मनुक्खमे तीन प्रवृत्ति मुख्यतः देखल जाइ'ए— क्षुधा, आत्मरक्षा आ यौनपिपासा। एहन तीन प्रवृत्तिक चित्रांकन लेखकक प्रधान प्रयत्न रहल अछि।' वस्तुतः अइ उपन्यासमे ई तीनू प्रवृत्ति बेस फरिच्छ भेल अछि। उपन्यासक पात्रकें जाहि जीवन्त रूपें रचनाकार एतए ठाढ़ कएने छथि, ताहिमे मैथिल चरित्र आ मिथिलाक परिदृश्य पूर्ण विवरणक संग उपस्थित भ' जाइत अछि। राजकमल चौधरीक सृजन-कर्मक ई खास विशेषता थिक जे हुनका ओतए व्यक्ति आ व्यक्तित्व बड़े महत्त्वपूर्ण भ' उठैत अछि। व्यक्तिक जीवन-लीला, रहन-सहन, सोच-विचार, आहार-व्यवहारकें अंकित करैत ओ सम्पूर्ण परिदृश्य गढ़ि दै छथि। तें राजकमल चौधरी द्वारा सृजित चरित्रक मानसिक उद्वेग आ भौतिक करतब पर विवेकपूर्ण दृष्टि राखि ली, तं हुनक सम्पूर्ण रचनाक समालोचना भ' जाएत। राजकमल चौधरीक सकल पात्रक आचरण आ मनोवेग, ओकर आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक, मानसिक हैसियतक परिचायक होइत अछि। कोन परिस्थितिक कोन मनोवेगमे मनुष्य कोन आचरण करै'ए—से पूरापूरी एतए व्यक्त होइत अछि। अइ तरहें चारित्रिक विश्लेषण करैत उपन्यासक मर्मकें बेसी नीक जकां बूझल जा सकैत अछि।

आन्दोलन उपन्यासक नायक 'कमल' मिथिलाक सुशिक्षित आ प्रतिभावान युवक छथि। आत्म-स्थापनक उद्देश्यें कलकत्ताक महानगरीय परिवेशमे बौआ रहल छथि। कमलजी परम विवेकशील छथि। नीलू सन अल्प वयस किशोरी अथवा नव युवतीक उन्मादित समर्पण अथवा अल्हड़ आमन्त्रण नकारि देलनि; मुदा वासनाक राक्षससँ मुक्ति पाब' लेल अन्हार आ बदनाम गली धरि चल गेलाह।

आदर्श आ सद्पात्रताक प्रतिमूर्ति भुवनजी मातृभाषा आ मातृभूमिक प्रसार-प्रगतिमे तल्लीन छथि, मुदा कोनो खास कारणें हुनकहुमे विचलन आबि गेल छनि। निर्मला सन अत्याधुनिक सुकामा, सुवर्णा स्त्री भुवनोजीकें हिला दै छनि। भुवनजीक पत्नी निरक्षरा आ कुरूपा छनि। निर्मला जी सन सुकामा स्त्रीक यौवन, रूप लावण्य, आधुनिक चटक-मटक पर हुनक लहालोट हएब स्वाभाविक आ यथार्थ थिक।

मानव सभ्यताक इतिहास कहै'ए जे मनुष्य अपन विराट छवि ठाढ़ कर'मे तल्लीन रहै'ए, विराट भ' जाइ'ए, मुदा मानवीय कमजोरी ओकरा संग रहै छै। उपन्यासकार अइ उपन्यासमे भुवनजीक छवि अति विशिष्ट आ निविष्ट रूपमे ठाढ़ कएने छथि। मुदा जं सएह टा रहितए, तं भुवन जी कोनो दन्तकथाक नायक बनि जइतथि। समस्त वैशिष्ट्यक अछैत मानवोचित दुर्बलता रेखांकित क' कए उपन्यासकार वस्तुतः भुवनजी आ कमलजी—दुनूकें यथार्थसँ जोड़लनि। सुशीला बहुगामिनी स्त्री छथि, नित्य प्रति नव-नव पुरुखक बांहिमे झूलए चाहै छथि। दोसर स्त्री सुशीला सेहो अनेक पुरुखक संगें समागम करै छथि। मुदा तें, दुनू स्त्री समान नञ छथि। पर-पुरुख समागम सुशीलाक विवशता छनि, अर्थोपार्जनक आधार छनि, जीवन-यापनक ठहार छनि, माइ-बाप संग अपन भरण-पोषण हेतु अन्न-वस्त्र चाही। देहे टा पूंजी छनि, तकरहि भजबै छथि, कूटि-पीसि गुजर करै छथि। मुदा निर्मलाक विवशताक कारण अर्थाभाव नञ छिअनि। ओ कामातुरा छथि। यौन-पिपासासँ व्याकुल रहै छथि। कोनो सम्पूर्ण पुरुखक सम्पूर्ण भोग लेल तत्पर रहै छथि।... एकटा देह बेचै छथि, एकटा देह बिलहै छथि। एकटा आत्मबुभुक्षाक तृप्तिमे कोनो नैतिक-अनैतिक काज लेल तत्पर छथि, दोसर यौनपिपासा शान्त करबा लेल उताहुल।

आत्मबुभुक्षा, यौनपिपासा, आत्म सुरक्षा—अइ उपन्यासक केन्द्र-बिन्दु थिक। सत्य थिक, आ राजकमल चौधरीक मान्यता छनि, जे मानव जीवनक आदिम आवश्यकता इएह तीन होइत अछि। ओना मनुष्ये की, प्राणी मात्र'क आदिम प्रवृत्ति इएह तीन टा होइत अछि। शेष सभ प्रवृत्ति—ईर्ष्या, द्वेष, राग-विराग, लोभ-लालच, पक्ष-विपक्ष, झंझट-फसाद, खून-खुनामय...सब किछु लोक एतए आबि कए, जीवन जीबाक क्रममे विकसित करै'ए; उल्लिखित तीनू प्रवृत्ति मनुष्य जन्महिसँ संग नेने अबैत अछि। अही तीनू प्रवृत्तिक निपटानमे किओ अपन छवि कुतुबमीनार सन ऊंच क' लैत अछि, किओ अपन कुतुबमीनार सन छविकें सड़ल पानिक नाली बना लैत अछि। तें आन्दोलन उपन्यासकें अइ आलोकमे देखब समीचीन थिक।

मैथिलीमे तं निश्चित रूपसँ आन्दोलन उपन्यास एकटा नव शुरुआत थिक। आत्मकथात्मक शैलीमे लिखल जेबाक अछैत अइमे कतहु आत्मश्लाघा अथवा आत्मसंकोचक स्वाभाविक त्रुटि नञ आएल अछि। कथावाचक कमलजी कलकत्ता महानगरमे आत्म-स्थापनरत छथि, भाषाई आन्दोलनमे सहभाग-सहकार द' रहल छथि, आन्दोलनी परिवारक हरेक व्यक्ति लेल तटस्थ आ ईमानदार आचरण रखै छथि। राजकमल चौधरी द्वारा सृजित ई कथानायक आ कथावाचक कमलजी सम्पूर्ण उपन्यासमे कतहु स्पष्ट नञ होअए दै छथि जे ओ किनका पक्षमे छथि। एते धरि, जे जे भुवनजी हुनका कलकत्ता महानगरमे पैर रोपबाक आधार देलकनि, नैतिक समर्थन देलकनि, स्नेह-प्रेम देलकनि, मान-सम्मानक मार्ग प्रशस्त केलकनि, तिनकहु लेल ओ कतहु पक्षपातक स्थिति अपन कथावाचनमे नञ आबए देलनि। नीलू, निर्मला, सुशीला...तीनू तीन आचणक स्त्री छथि; तीनूक खोंइचा छोड़ा क' राखि देलनि, मुदा किनकहु पर अपन निर्णायक

वक्तव्य नञ देलनि। स्वयं बदनाम गली धरि गेलाह, तकरहु उजागर करबामे संकोच नञ केलनि। लक्ष्य सन्धान छलनि मानवीय वृत्तिक स्पष्ट नक्शा उतारबाक, से अइ तटस्थ भावे टासँ सम्भव छल। इएह कारणो थिक जे आइ आ आइसँ पहिनहुं अइ उपन्यासमे मूल मानवीय वृत्तिक एते रास छवि देखाइत अछि, देखाइ छल। महानगरीय परिवेशक प्रवासी मैथिल द्वारा चलाओल जा रहल भाषाई आन्दोलन अइ उपन्यासक आश्रय वृक्ष भने रहल हो, मुदा सम्पूर्णतामे ई मिश्रित चित्र खण्डक कथ्य-बहुल उपन्यास थिक; जाहिमे चारू भर क्षुधा, आत्म-सुरक्षा आ यौन-पिपासाक चित्रखण्डक समायोजन अछि; मुदा तकर अछैत एकटा सुगठित कौशलसँ रचल यथार्थ उद्‌बोधित, समाज सम्मत, विश्वसनीय वृत्तान्तक स्वरूप सोझां आएल अछि। रचनाकालक दृष्टिएं आन्दोलन, आदिकथासँ पूर्वक उपन्यास थिक, मुदा विषय आ शिल्पक दृष्टिएं ई बेसी प्रगतिशील, आधुनिक, आ ऊर्ध्वोन्मुखी अछि।

तुलनात्मक रूपें देखी तं आदिकथाक देवकान्त आ आन्दोलनक कमलजीमे विराट अन्तर अछि। देवकान्त मर्यादा आ मनोवेगमे सामंजस्य स्थापित नञ क' पबै छथि। दुनू स्थितिक संघर्षक ज्वालामे स्वयंकें भस्म करैत रहै छथि। मुदा कमलजी बेसी सहज छथि। नैतिकता आ मर्यादाक रक्षा करबामे कतहु कोनो हूसल डेग नञ उठबै छथि; काम-तृप्ति हेतु समर्पित नीलूकें अपना कोठलीसँ आपस तं क' दै छथि, मुदा मनोवेगकें मारि कए अपनाकें प्रतारित नञ करै छथि। चल जाइ छथि राति बेच'बाली सुशीला नामधारी स्त्रीक खाट पर। ई दीगर बात थिक जे ओतएसँ दोसर मनोवेग बेसाहि अनै छथि। दुनू नायकक दू परिदृश्य, दू जीवन, दू बाट, दू सीमा अछि। आन्दोलन, जीवन-संग्राममे तल्लीन मैथिल नागरिकक चारित्रिक विश्लेषण, सामाजिक-राजनीतिक पर्यवस्थितिक कोलाज थिक, वृत्तान्त थिक; तं आदिकथा सामन्ती संस्कारक कोखिमे पुष्पित-विकसित विकृति आ मानवेतर भाषा, व्यवहार, व्यवस्थादिक कुत्सित स्वरूपक गाथा। आन्दोलनक नीलूक उन्माद वयसोचित आचरण थिक, अजोह वयसक एकटा कन्याक क्षणिक उद्वेग थिक; ओइमे ने तं दुतरफा प्रेमादर्शक कोनो रूपाकृति छल, आ ने वासनात्मक भूखक कोनो नियोजित अवधारणा। ओइमे कोनो स्वस्थ, सुविचारित सोच आ दूरगामी चिन्तनशीलताक कोनो आशा नञ कएल जा सकै छल; सम्भवतः तें ओकरा बुझ-सुझा क' बाट धराएब आसान छल। मुदा आदिकथाक सुशीला परिपक्व, प्रौढ़ आ प्रगल्भ स्त्री छथि। कुलीन घरानाक अइ विवाहित आ अतृप्तकामा नायिकासँ हिनकर स्वस्थ मानसिकता, तीव्र मनोवेग आ ठोस निर्णयक उमेद कएल जा सकैत अछि। हिनकर प्रेम-निवेदनकें नकारल जा सकै छल, तिरस्कृत कएल जा सकै छल, हिनका बुझाओल नञ जा सकै छल। नीलूक उन्माद भेल लुत्ती, जकरा सुनगैसँ पूर्वहि मिझाओल गेल; मुदा सुशीलाक उन्माद भेल दावानल, ओकरा मिझाएब असम्भव छल। दोसर बात ई जे नीलूक उद्वेग एसगर उठल, दोसर मिझौलक; मुदा सुशीलाक उद्वेग जखनहि उठल, देवकान्तक उद्वेगसँ घी-बसात पबैत गेल। दावानल बनि गेल...। दुनू उपन्यासक दू परिदृश्य अछि, दू पर्यवस्थिति अछि...। तथापि लेखकक जीवन-दृष्टिक अन्तर्धारा सब ठां व्याप्त रहैत अछि। दू उपन्यासक दू परिदृश्य आ दू पर्यवस्थितिक नायक छथि—कमलजी आ देवकान्त। मुदा सब किछु भिन्न रहलाक बादहु नायक'क स्वभावमे एतबा साम्य छनि जे कमलजीक नजरिमे चाह-कॉफीमे दूध, चीनी मिलाएब ओकर कौमार्य नष्ट करब थिक(आन्दोलन/पृ.43) दोसर दिश बिना दूध-चीनीक चाह पीब देवकान्तक प्रवृत्ति भ' गेल छनि (आदिकथा/पृ.37)। सामान्य अर्थमे त' ई अत्यन्त सरलीकृत आ चलताउ वाक्य लगैत अछि, मुदा गम्भीरतापूर्वक विचार कएला पर प्रतीक अर्थमे वस्तु आ विचारक मौलिकता बनौने रखबाक, ओकर दोषादोषक संग ओकरा ग्रहण करबाक ईमानदारी थिक।

विद्वान लोकनि तं मानिते छथि, पाठकीय दृष्टिकोणसँ सेहो ई प्रमाणित भ' चुकल अछि, जे कथोपकथन आ वार्तालापसँ कोनहुं कथाकृतिमे नाटकीयता आ जीवन्तता अबैत अछि। उपन्यासक स्थितिमे तं ई सर्वाधिक प्रभावी होइत अछि। कथा-विस्तार आ घटना विकासमे कथोपकथन जते बेसी हो, उपन्यास ओतबे जीवन्त हएत। एतबा धरि अवश्य जे कथोपकथनक सम्वाद भाषण नञ भ' जाए, से भेलासँ उपन्यासक रोचकता आ प्रभाव आहत होइत अछि। हमरा जनैत ओ उपन्यास सर्वाधिक रोचक आ प्रभावकारी होइत अछि, जकर पात्र आपसमे बेसी काल गप-शप करैत कथाकें गति दैत अछि। उपन्यासकारकें कथाभूमिमे जते कम जाए पड़नि, प्रभाव तते बेसी प्रबल हएत। ई गप-शप लद्धर नञ हो, सेहो ध्यान राख'क थिक। सम्वादमे पात्रक मनोभाव आ आचरणक संकेत सेहो हो। अर्थात् नाटकीय शैलीक उपन्यास लिखब एकटा पैघ जोखिमक काज थिक, जे उपन्यासकें संक्षिप्त, दीप्त, रोचक आ प्रभावकारी तं बनबैत अछि, संगहि ई विकराल जोखिम लागल रहैत अछि, जे कौशलमे कनेको चूक भेल तं सब गुर गोबर।

अइ मामिलामे राजकमल चौधरीक तीनू उपन्यास—आन्दोलन, आदिकथा, पाथर फूल—प्रभूत सफल उपन्यास थिक। भिन्न-भिन्न विषय, भिन्न-भिन्न मनोभावक उपन्यासमे कथानककें विस्तार

दैत कथोपकथन, घटना विशेषक परिस्थिति आ वातावरण निर्माणमे अपूर्व सफलता प्राप्त केलक अछि। पात्रक आवेग, प्रेरणा, भावना, घटना विशेष पर ओकर प्रतिक्रिया आ पारस्परिक प्रभावक झांकी अइ उपन्यासक कथोपकथनमे हरदम देखाइत रहैत अछि। छोट-छोट वाक्य आ कथन-खण्डक कारणें ई प्रभाव आओर रोचक भेल अछि आ उपन्यासमे निखार आएल अछि। आन्दोलनमे सुशीला सन वेश्यासँ कमलजीक वार्तालाप(पृ.38-39), निर्मलाजीसँ भेंट-घांटक मादे कमलजी आ नीलूक वार्तालाप(पृ.48), भाषणक रूपमे देल गेल वक्तव्यक अछैत सुदर्शन जीक स्थिति-चित्र विवरण(पृ.51-53), अइ बातक प्रमाण थिक जे छोट-छोट वार्तालापसँ कोना एकटा वेश्याक दारुण कथा, अथवा कोनो पुरुष दिश अनुरक्त एकटा युवतीक दोसर स्त्रीसँ ईर्ष्याभाव, अथवा कोनो अनैतिक-अवांछित घटनासँ कोनो युवकक आक्रोशक उद्वेग स्पष्ट होइत अछि; आ तकर प्रभाव कोन वैशिष्ट्यक संग पड़ैत अछि।

चित्रकलासँ राजकमल चौधरीकें बड़ बेसी अनुराग रहलनि अछि। कतोक बेर मित्र लोकनिकें पत्र लिखैत अपन किछु धारणा चित्रमे अभिव्यक्त केलनि अछि, किछु कविता, चित्रकसंग लिखने छथि। इएह कारण थिक जे हुनक कथा, कविता, उपन्यासमे कतोक ठाम पढ़बासँ बेसी कोनो मनोरम अथवा मार्मिक अथवा हृदयविदारक पेण्टिंग देखबाक अनुभव होइत रहैत अछि, अर्थबहुल आ संकेतबहुल पेण्टिंग देखबाक अनुभव—शरदक पवित्र आकाशमे श्वेत तनु चन्द्रमा उगल छल। कती राति बीतल होएत, किछु ज्ञात नइं। हमर मोन अपन गाम दिश भागि चलल। चरखा काटि कए गुजर करैबाली माइ, बदरिकाश्रम-केदारनाथ-अमरनाथ जएबाक मनोरथ जकर पूर नञ भ' सकलइ...आ हम दू बेर सुमेरु पर्वत आ तिब्बतक अन्तिम सिमान धरि भ' आएल छी। हमर अग्रज गामक हाई स्कूलमे गणितक अध्यापक छलाह...अपन पेट काटि कए हमरा एम.ए. पास करौलनि...गाममे महामारीक उत्पात भेल, टन्नसँ रहि गेलाह। आब विधवा भौजी छथि, सोन-सन हुनक कन्या छनि आ चारू कात भूख, दरिद्रता, संक्रामक बीमारी सभक जाल पसरल अछि...भौजी हमरा संगें नञ रहै छथि, समाजक भयसं...आ हम बिआह नञ करै छी...(आन्दोलन/पृ.21)।

अइ छोट सन स्थिति-चित्रमे उपन्यासकार कैक बर्खक समय, कैक मनोभाव आ स्वप्नखण्डक वितान, कैक मनोवृत्ति आ व्यवस्था-मर्यादा-दायित्वक बन्धन आ कैक विवशताक दारुण विडम्बनाकें जीवन्त क' देने छथि। एतेक छोट चित्रमे विराट परिदृश्यक समावेश कोनो कलाकारक श्रेष्ठ कौशल आ गम्भीर जीवन-दृष्टिक परिचायक थिक। अहिना आदिकथा उपन्यासमे—अहां देवबाबूक संगें सुलतानगंजक जल-मन्दिर देख आउ। हम नञ जा सकब। कैकटा मोकदमाक कागज-पत्र तैयार करबाक अछि...।...सुलतानगंजमे गंगाक बीच धारामे अछि प्रसिद्ध अजगैबीनाथ महादेवक प्राचीनतम मन्दिर।...भागिन आ मामी नाह किराया क' कए मन्दिर पर अएलाह। भोरक आठ-नौ बजल हएत। सूर्यक किरण जाह्नवीक जल पर सतरंग चित्र बना रहल छल।...अकारणे खिलखिलाइत, सुशीला पुछलथिन—महादेवसँ की वरदान मंगबैन?...की कहबैन? लाज किऐ होइ'ए. ..?...तावत तीन-चारि टा पण्डा हिनका सबकें धनीक कुलशीलक दम्पति बूझि कए संग भ' गेलनि ...(आदिकथा पृ. 44-46)...स्थिति चित्रक अइ तरहक उत्कर्ष चमत्कृत करैत अछि। शब्द, कथन, आ वाक्यांशक अर्थ कैक परतमे कैक तरहक व्यंजना दैत रहैत अछि। सन्तुलित आ संयमित कौशलसँ देश-काल-वातावरणक चित्रांकन सर्वथा, सर्वदा कोनो रचनाकें विराट आ शाश्वत साबित करैत रहल अछि, से राजकमल चौधरीक हरेक रचनामे भेटैत अछि।

वस्तुतः राजकमल चौधरी बहुविधावादी रचनाकार छथि। अंग्रेजी आ बांग्लामे त' सब विधामे रचना नञ केलनि मुदा मैथिली आ हिन्दीमे ओ सब विधामे रचना केलनि। विवेचक लोकनिमे बड़ बेसी विवाद अछि, किओ हुनका सफलतम कवि, किओ कथाकार, किओ उपन्यासकार, किओ निबन्धकार मानै छथि। हमरा जनैत, राजकमल चौधरीकें मूलतः कवि माननिहार लोकक धारण ाा ई रहैत हेतनि, जे हुनक भाषा-शिल्प मूलतः कविताक शिल्प थिकनि। सम्पूर्ण गद्य, एते धरि जे डायरी आ पत्र धरिमे कविताक लय भरल रहैत अछि। ई बात उल्लिखित समस्त उदाहरणहुंसँ प्रमाणि ात कएल जा सकैत अछि। छोट सन वाक्य खण्ड लिखि कए विराट व्यंजना दिश संकेत क' दै छथि, आ तखनहिसँ पाठक/भावक दोहरी विचार-व्यवस्था संग वेगमयी जलधारामे बहैत चल जाइत अछि। जखनहि पाठक—भौजी(विधवा) हमरासंगें नञ रहै छथि, समाजक भयसं...अथवा...महादेवसँ की...कहबैन? लाज किऐ होइए. ..? सन-सन उद्धरण देखै छथि, एक टा कथा ओ पढ़ैत रहै छथि, आ एक टा कथा हुनका भीतर सेहो जनमैत जाइत अछि। दू कथाधाराक विकास एक संग होइत जाइत अछि, कखनहुं समानान्तर, कखनहुं ओझराइत, कखनहुं स्पष्ट होइ. ..राजकमल चौधरीक गद्यक ई विशेष छटा थिक। मानव जीवनक पारस्परिक सम्बन्धक विचार, भावना, आवेग, प्रेरणा आदिकें अभिव्यक्ति दै वला महत्त्वपूर्ण विधा, आ महत्त्वपूर्ण रचनामे तकर उपयोग होइत रहल अछि। ❐

दीना-भद्री : उत्पीड़ित समुदायक स्मृति-गाथा

डॉ. तारानन्द वियोगी

सब गोटे अवगत छी जे धर्म केँ जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, झाड़-फूक केँ रूप में परिभाषित करब अविकसित समाजक लक्षण थिक। मुदा जतय पौरोहित्यवाद सन केँ चतुर लुटेरा तंत्र-मंत्र, जादू-टोना ल' क' उत्पीड़न पसारने हो आ अर्थसत्ता आ राजनीतिक सत्ताक संग-संग एहि धर्मसत्ताक उपयोग सेहो वर्चस्व बनेबाक लेल खुलेआम क' रहल हो, ततय एक अस्त्र सँ लड़ने की निस्तार संभव छै? एहि गाथामे फोटरा गीदर आयल अछि। ओ यथार्थमे गीदर माने कि सियार माने कि पशु रहल हएत, से बात तं कोनो 'भक्ते' टा टाइप केँ लोक सोचि सकैत अछि।

दीना-भद्री लोकगाथाक मर्म केँ जे हमरा लोकनि अस्सल निहितार्थमे बूझ चाहि तें हमरा सुदूर अतीत मे, बहुत दूर, बहुत पाछू जाय पड़त। एतेक पाछू जे तहिया दीना-भद्रीक महानायकक जन्मक कोन कथा, जे जगज्जननी सीता मैयोक जन्म नहि भेल छलनि। ओ अतीत-काल कोन काल थिक? ओ काल थिक जखन मिथिला नाम-धारी एहि भूखंड पर प्रथम-प्रथम आर्यक आगमन भेल छल। ई सम्पूर्ण कथा वैदिक वाङ्मय 'शतपथब्राह्मण'मे आएल अछि। ओहि ठाम देखाओल गेल अछि जे कोना ऋषि गौतम रहुगणक नेतृत्वमे वैश्वानर अग्नि जंगल में साफ क' एहि भूमि केँ पवित्र केने छल आ आर्यलोकनि अपन बास लेल एकरा उपयुक्त बनने छला। तात्पर्य स्पष्ट अछि जे ई नदीमातृक देश दुर्गम वन सँ भरल छल आ ओहि वन केँ जरा क' एकरा, 'पवित्र' कएल गेल। प्रश्न उठैत अछि जे एहि दुर्गम वनमे जीव-जन्तु तं ढेरीक ढेरी बसेत हएत मुदा की एतए मनुक्खोक बास छल? वृतान्त सब सँ सूचना भेटैत अछि जे एहि ठाम मनुक्खक मात्र बासे टा नहि छल, अपितु भरल-पुरल समाज बसल छल, ओकर अपन जीवन-पद्धति, अपन सभ्यता-संस्कृति छलै जे निश्चिते आर्य लोकनिक संस्कृति सँ भिन्न छल। अपन एक लेखमे मोहन इतिहास दिस ध्यान देब' पड़त। मिथिलाक भूगोल हिमालयक माटि-बालु थिक। नदीमातृक प्रदेशक एहि भूभाग पर किरात आ कोल रहैत छल। आर्यीकरणक अभियानमे जे किछु बहरिया लोक सभ एहि ठाम अयलाह से द्विज बनि क' एहि प्रदेश पर सत्ता स्थापित केलनि। क्षत्रिय राजसत्ता लेलनि, ब्राह्मणक हाथमे समाज-सत्ता रहलनि आ वैश्यलोकनि अर्थ-सत्ताक स्वामी बनलाह। मूलवासी अर्थात आदिवासी अन्त्यज बनि गेलाह। किन्तु, बहरिया लोक संख्यामे कम आयल छल। तें कृषि-कार्य लेल बा आनो प्रयोजन सं' मूलवासी लोकनिक खगता जोर पकड़लक।

दीना-भद्री मिथिलाक एक दुर्लभ आ विरल गाथा थिक जे ओइ लोकक, जे एहि ठामक मूलवासी छल, केँ स्वप्न आ सेहन्ता, अस्मिता आ अभिज्ञान, स्वतंत्रता आ संघर्षक बात करैत अछि। ई सब तते अभिधामूलक आ स्पष्ट छै जे बहुत साफ-साफ सब कथू केँ देखल आ चीन्हल जा सकैत अछि।

मैथिली लोकगाथाक अनन्य गुणग्राहक मणिपद्म केँ संकलन 'मैथिली लोकगाथाक इतिहास'मे दीना-भद्री केँ स्थान नहि देल गेलैए। यैह स्थिति आनो-आनो आचार्य लोकनिक रहल

संपर्क : *प्रथम तल, शांति निकेतन, डॉ. सी.पी. ठाकुर पथ, शिवपुरी पूरब, पटना-800023, मो. 9431413125*

छनि, जखन कि जॉर्ज ग्रियर्सनक सौजन्य सँ एकर मूल-पाठ सेहो सवा सय बरख पहिनहि सँ उपलब्ध छै। एहि सब कारण सँ 'दीनाभद्री' क विवेचन बहुत ठीक ढंग सँ एखन धरि नहि भ' पाओल अछि। एहि पाछू विचारक लोकनिक अनुत्साह आ अरुचिक कारण सहजहि बूझल जा सकैत अछि। मुदा तखनहु, ओ मणिपद्मे छला जे अपन लेख 'मैथिली लोकगाथाक इतिहास'मे एक छोट-सन पाराग्राफ एहि लोकगाथाक संबंधमे लिखलनि, जाहिमे ई कहलनि जे 'अइ लोकगाथामे फोटरा गीदर पौरोहित्यवाद आ लुल्ही बाघिन सामन्तवादक प्रतीक रूपमे आनल गेल अछि। दीना आ भद्री ट्रेड यूनियनक लीडरक रूपमे शहीद होइत छथि। ईसा मसीह जकां ओ जीबि उठैत छथि आ मुसहरक अधिकार लै संघर्षरत भ' जाइत छथि।'

कहब आवश्यक नहि जे मणिपद्मक एहि कथनमे हम अव्याप्ति दोष देखै छी। तकर कारण अछि जे जानि नहि कोन संकोचमे ओ स्पष्टो तथ्य केँ साफ-साफ नहि कहि क' प्रतीक-रूपमे कहबाक लेल फोटरा गीदर आ लुल्ही बाघिन केँ चुनैत छथि। जखन कि कनक सिंह धामी, ताहिर मियां आ जोरावर सिंह एहि ठाम साक्षात मानवरूपमे उपस्थित छथि जतए पौरोहित्यवाद आ सामंतवाद अपन मूर्त रूप धारण केने ठाढ़ अछि। असलमे जाहि सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व कनक सिंह धामी आ कि ताहिर मियां आ कि जोरावर सिंह करैत छथि, साफ-साफ कहबाक चाही जे ओ आर्य संस्कृति थिक। आर्य लोकनि कृषि-कर्म करै छलाह। एहि ठाम हमरा लोकनि प्रत्यक्ष देखे छी जे कनक सिंह धामी एक सम्पन्न कृषक छथि। दीना-भद्रीक संग जे हिनका लोकनिक संघर्ष होइत छनि से कृषक-मजदूरक रूपमे दासता स्वीकार नहि करबाक कारण ा। ध्यान राखबाक चाही जे ई दासता थोड़े दोसर तरहक दासता थिक। एकर स्वरूप छै बोनिहारक। कृषि-मजदूरक रूपमे काज केलाक फलस्वरूप बोइन भेटै छै। ई बोनिहार केँ जीवन-यापनक लेल जरूरी अछि। मुदा, ओ जकरा खेतमे बोइन करैत अछि से भेला मालिक। हुनक मालिकाना स्वीकार करब बोनिहारक आवश्यक दायित्व थिक। एहि ठाम हम सब देखै छी जे कनक सिंह प्रचलित बोइनक दर चारि सेर प्रतिदिन सँ एक सेर बेसी दीना-भद्री केँ देबाक लेल तैयार होइत छथि। प्रचलित दर सँ बेसी बोइन किए? कारण बताओल गेल अछि जे ई दुनू भाइ बेसी कर्मठ छला। मुदा बात एतबे नहि अछि। ई दुनू भाइ एखनो धरि आर्यीकृत नहि भेला अछि, एखनो धरि दासता नहि गछलनि अछि, एखनो धरि अपन मूल जीवन-दर्शन आ कार्य-व्यवहार आ सभ्यता-संस्कृति केँ पकड़नहि छथि, तकरा अपन गोल सँ बाहर निकालबाक लेल एकरा प्रलोभन कहि सकैत छिऐ, उत्कोच कहि सकै छिऐ। ई प्रलोभन आ उत्कोच बहुत काज करै छल, तकरो दृष्टान्त एहि लोकगाथामे देखार पड़ैए। एही प्रलोभनक चक्करमे मूलवासी कोना आर्य लोकनिक जानमे फंसैत गेला, अपन वर्गक संग विश्वासघात केलनि आ वर्ग-च्युत भ' क' आर्यीकृत भ' गेला तकर उदाहरण गुलामी जाट थिक। गुलामी मूलवासी वर्गक लोक थिका मुदा आर्यक दासता स्वीकार क' लेलनि अछि। एहि दासता-स्वीकारक पाछू मात्र आर्थिक लाभ-लोभ नहि अछि। ई लोभ बहुव्यापक अछि। हमरा लोकनि देखै छी जे गुलामी ताहिर मियां नामक आर्यक दास थिक। ताहिर मियांक बेटी फेकनी हक्कलि डाइन अछि आ ओ दुद्धर्ष पहलवान गुलामी जाट केँ अपन प्रेमी बना क' वशमे केने अछि। एहना स्थिति मे, हमरा लोकनि बुझि सकै छी जे वर्गक संग विश्वासघात क' क' चाहे लोभ सँ हो कि भय सं, आर्यक संग मिलि जेबाक स्थिति एक आम स्थिति छल आ दीना-भद्री एकर प्रतिकार करै छलाह। तें, अधिक बोइनक प्रलोभन देल गेल हो, से संभव भ' सकैत अछि।

सब क्यो अवगत छी जे आर्य लोकनि पशुपालक छला। एहि गाथामे ताहिर मियां पशुपालक छथि। मजा केँ बात ई छै जे ताहिर मियां लगमे दू-दू टा कामधेनु गाय सेहो छै, जखन कि सैकड़ोक संख्यामे तं साधारण गाय छलैके। ई कामधेनु गाय बड़ दुर्लभ। मिथक कथा सबमे हमरा लोकनि स्वर्गमे कामधेनुक उपलब्धताक समाचार देखै छी। मुदा से कामधेनु ताहिर मियां केँ दू-दू टा छलनि। हमरा लोकनि देखै छी जे एहि दुनू भाइ दीना-भद्री केँ कामधेनु गायक दूध पीबाक लिलसा भेलनि आ गुलामी जाट द्वारा अपमानपूर्वक इनकार करबाक कारणे संघर्ष बजरि गेल। एहि लोकगाथाक एक पाठमे हमरा लोकनि केँ विवरण भेटैत अछि जे दीना-भद्री अपन शारीरिक आ तांत्रिक बल सें गुलामी जाट केँ बध क' दैत छथि। मुदा, एकर अन्य पाठमे इहो भेटैत अछि जे ओ गुलामी केँ जीवन-दान दैत छथि। मूलवासी वर्गक संग जे विश्वासघात क' क' ओ वर्गच्युत भ' गेल छला, तकरा दीना-भद्री पुनर्नियोजित करैत छथि आ गुलामी ने मात्र हुनका संग आबि जाइत छनि, अपितु आगू जोरावर सिंहक संग भेल संघर्षमे ओ दीना-भद्रीक सहायक होइ छथि।

प्रसंगवश, एहि ठाम हम एकटा इहो बात कही जे 'दीना-भद्री' गाथा धर्म बनाम जाति केँ प्रश्न पर अत्यन्त मुखरतापूर्वक एक विमर्श ठाढ़ करैत अछि जे मगज केँ हिला दै बला (mind blowing) अछि। ताहिर मियां, जेना कि नामे सँ स्पष्ट अछि, मुसलमान थिका। हुनकर धर्म इस्लाम थिकनि। मुदा, हुनकर जाति? की ओ दीना-भद्रीक लोक थिका? नहि, किन्नहु नहि। ओ ओही वर्गक लोक थिका जाहि जातिक कनक सिंह धामी आ जोराबर सिंह थिका। हुनकर पेशा टा अलग छनि, जीवन-दर्शन आ जीवन-चर्या अलग नहि छनि। ओ ओहिना मूलवासी

लोकनिक विद्वेषी थिका, जेना कनक सिंह आ कि जोराबर सिंह छथि।

मिथिलाक लोकगाथा सभक कालनिर्धारण करैत मणिपद्म विवरण देने छथि जे दुलरा दयाल मिथिलाक सभ सँ प्राचीन लोकगाथा थिक आ एकर काल (अर्थात् घटना-काल) तेसर शताब्दी निर्धारित करैत छथि। एकर बाद सल्हेस। तदुपरान्त लोरिकायन। तखन नैका बनिजारा, जकर काल ओ सातम शताब्दी मानैत छथि। आ एकरा बाद दीना-भद्री। ओ कहैत छथि राय रणपाल कैँ घटना-काल दीना-भद्री सँ परवर्ती अछि। हम मात्र एहि तथ्य दिस ध्यान आकृष्ट करय चाहै छी जे दीना-भद्रीक घटनाकाल एहन छल जखन इस्लामक आगमन एहि देसमे भ' चुकल छल। ताहिर मियां एकर प्रमाण छथि। मुदा, मूल बात ई अछि जे हिन्दू हएब आ कि मुसलमान हएब ई मात्र धार्मिक आस्थाक बात छल। ई केवल मत कैँ अंतर छल। वर्गीय स्वार्थ सँ एकर कोनो लेना-देना नहि छल। साफ-साफ कही तं ई अंगा-टोपीक अंतर छल, जे मात्र बाहर सँ देखार पड़ैत छल। भीतर सँ दुनू एक्के रंग आर्य छला आ एक्के रंग मूलवासीक विद्वेषी आ ओकरा पर वर्चस्व बनौने रखबाक आकांक्षी छला। आइ जे लोकनि हिन्दू आ मुसलमान कैँ अलग-अलग वर्ग, अलग-अलग वर्गीय हितक लोक मनै छथि आ प्रयास करै छथि जे मूलवासी लोकनि हिन्दूक नाम पर एकट्ठा भ' क' मुसलमानक विरुद्ध होथु, हुनका लोकनि कैँ 'दीना-भद्री' लोकगाथाक कने ठीक सँ अध्ययन क' लेबाक चाहियनि।

तखन, एहि लोकगाथामे जोराबर सिंह सन कैँ अत्याचारी, उद्दंड, मनबढ़ू आ आक्रामक सामंत आएल अछि जकर अत्याचार सँ मूलवासी लोकनि त्रस्त आ सीदित छथि। मूलवासी लोकनिक जवान स्त्री पर पहिल हक ओ अपन मानैत अछि आ ओकरा अतिक्रमण क' क' चलबाक ताकत ककरो नहि छै। वर्णन आएल अछि जे एहि जोराबर सिंह कैँ वध जखन दीना-भद्री केलनि तं मूलवासी लोकनिक समुच्चा परोपट्टामे होली-दिवाली सन कैँ खुशी मनाओल गेल रहै।

एहि तरहें हमरा लोकनि देखि सकै छी जे कनक सिंह धामी, ताहिर मियां आ जोराबर सिंह - ई तीनू आर्य संस्कृतिक प्रतिनिधित्व करैत छथि आ तीनूक कार्य-व्यवहार कैँ संग-संग देखने सँ हम बूझि सकैत छी जे आर्य सभ्यताक रुआब की रहैक आ एहि ठामक मूलवासी लोकनि की भोग भोगैत जीवन गुदस्त क' रहल छला आ अपन अस्मिता, अपन स्वतंत्रता लेल संघर्षरत छला।

मुदा, एकटा बेस रोचक तथ्य हमरा लोकनि कैँ एहि गाथामे भेटैत अछि, जाहि पर हठात् विश्वास करबो धरि कठिन भ' जाइत अछि। ओ तथ्य थिक जे राजा सल्हेस सेहो एहि गाथाक एक पात्र छथि आ आश्चर्यजनक थिक जे ओ दीना-भद्रीक पक्षमे नहि, अपितु हुनका विरोध मे, अर्थात आर्य सभ्यताक पक्षमे युद्ध लड़ि रहला अछि। एतय धरि जे दीना-भद्रीक मृत्युक असली जिम्मेवार सल्हेसे छथि। हमरा लोकनि अवगत छी जे काल-निर्धारणक दृष्टि सँ सल्हेसक काल दीना-भद्रीक गाथाकार लोकनि सेहो एहि तथ्य सँ अवगत छथि। कहल जाइत अछि जे उत्पीड़ित समाजक स्मरण-शक्ति बेसी मजबूत होइ छै। शोषक-उत्पीड़क भने दू-चारि सय बरखक बात बिसरि जाउक मुदा उत्पीड़ित समाज बुते से बिसरब बहुत कठिन, कहक चाही जे असंभव होइ दै। तकर एकटा सुंदर दृष्टांत हमरा एतय मोन पड़ैत अछि। आदि शंकराचार्य आठम शताब्दीमे भेल छला आ प्रथम-प्रथम हुनकर जीवनी 'शंकरदिग्विजय' लिखनिहार माधवाचार्य चौदहम शताब्दी मे। दुनूक बीच छौ सय बरखक अंतर रहैक। से, अपन परमगुरु कैँ कोनो ने कोनो जतन सँ दिग्विजयी साबित करबाक उत्साहमे माधवाचार्यक स्मरण-शक्ति भयंकर धोख द' देलकनि आ ओ केलनि की? जे पंडित शंकराचार्य सँ दू-तीन सय बरख पहिने भ' चुकल छला जेना दण्डी, जेना वाणभट्ट, तिनको संग हुनकर शास्त्रार्थ देखा देलखिन; आ जे आदि शंकर सँ दू-तीन सय बरख बाद भेला जेना अभिनवगुप्त, जेना श्रीहर्ष, हुनको संग शास्त्रार्थ देखा देलखिन। 'दीना-भद्री' गाथामे सेहो की तहिना भेल अछि? नै, से किन्हुं नहि भेल अछि। गाथाकार कैँ स्मरण छनि, सैह टा नहि, एहि बिचला पांच सय बरखमे की सब भेल अछि सेहो मोन छनि। अद्यतन परिस्थिति धरि मोन छनि। उत्पीड़ित समाजक स्मरण-शक्ति एहि तरहें कहियों धोखा नहि द' सकैत अछि।

सल्हेस सेहो अनार्य समाजक नायक छला। अपन योग्यता सँ ओ आगू बढ़ला आ राजा भेला तथा समस्त प्रकारक सुखोपभोग केलनि। मुदा ई सब चीज आराम सँ भ' गेल हो से नहि छल। एहि लेल हुनका कठिन संघर्ष कर' पड़लनि। संघर्षेक बदौलत अपन अस्मिता, अपन अभिज्ञान, अपन स्वतंत्रता ओ बचा क' राखि सकला। मुदा जाहि कबीलाक ओ नायक रहथि, हुनका परोक्ष भेलाक बाद, ओहि कबीला पर जे प्रतिक्रिया-स्वरूप आर्य लोकनिक आघात आ प्रहार भेलै, ओ कबीला अपन अस्मिता बचा क' नहि राखि सकल आ आर्य लोकनि हुनका सब कैँ अपन दास बनेबा मे, अपन सभ्यतामे दीक्षित करबामे सफल भेला। आब ओ लोकनि आर्य सभक चौकीदार छथिन, आ स्वाभाविके जे हुनका सभक देवता राजा सल्हेस आर्य-हित कैँ रक्षक छथिन आ एहि तरहें आर्यक दुश्मन हुनको दुश्मन भेलनि। ध्यान देबाक बात थिक जे 'दीना-भद्री' गाथमे जे सल्हेस एला अछि से मनुक्खक रूपमे नहि। जेना दीना आ भद्री मनुक्ख थिका, तेना सल्हेस एहि गाथामे मनुक्ख नहि थिका। ओ आत्मा-रूप छथि आ दैवी शक्तिक रूपमे

थिका। ओ देवता थिका। हमरा लोकनि देखै छी जे फोटरा गीदरक संग युद्ध करबाक क्रममे जखन दीना-भद्री विजयी हेबाक अंतिम क्षणमे रहैत छथि, आ फोटरा गीदर आब मुइल तब मुइल केँ अवस्थामे रहैत अछि, ठीक ताही काल सल्हेस अपन दैवी शक्ति फोटरा केँ प्रदान क' दै छथिन आ ओ जादुई गीदर एकबारगी उग्र आ आक्रामक भ' उठैत अछि आ दीना-भद्री दुनू भाइ केँ नोचैत-पटकैत प्राणान्त पर पहुंचा दैत अछि। दुनू भाइ एक्के संग शहीद भ' जाइत छथि। ई प्रसंग नितान्त देखबा योग्य अछि जे गाथाकार एक अनार्य नायकक विश्वासघात केँ कोना सूक्ष्म आ कलात्मक बना क' प्रस्तुत केलनि अछि। ई प्रसंग आर्य सभ्यताक उत्तरोत्तर प्रभावी आ दबंग होइत जाइत स्थितिक दिस संकेत करैत अछि।

एहि गाथाक अनेक पैघ विशेषतामे सँ एकटा विशेषता ई अछि जे एहि ठाम हमरा लोकनि केँ उत्पीड़ित समाजक धार्मिक मान्यता पर अध्ययनक लेल प्रचुर सामग्री भेटैत अछि। एहि वाक्यक बदला जं हम ई कही जे उत्पीड़ित समाजक धर्म केँ जन्म लैत, उत्पन्न होइत हम एहिठाम देखि सकै छी तं कदाचित अहां आश्चर्य क' सकै छी। कार्ल मार्क्स केँ कहल एक वाक्य केँ आइ धरि दुनियां भरिमे ततेक बेर दोहराओल जा चुकल अछि जे संभवतः संसारमे बेर-बेर दोहराओल जाइ बला वाक्यमे ई सर्वोपरि हएत। ई वाक्य धर्मक बारेमे अछि, जतय ओ कहै छथि जे धर्म हफीम छी। हम मोन पाड़य चाहब जे मार्क्स कोन संदर्भमे ई बात कहने छला। ओ उत्पीड़ित जनता, सर्वहाराक संदर्भमे कहने रहथि जे दुनियांमे चारूभर ओकरा लेल छले-छल छै, धोखे धोखा छै, संघर्षे संघर्ष छै। एहनामे कोना ओ सहज हुअय? कोना ओकरा नित्र होइ? कोना ओकरा मोनमे चैन आबै? कोना ओकरा भीतर ई आस-भरोस जागै जे आब-बला समय किछु बढ़ियां, किछु बेहतर हएत? कोना? मार्क्स कहने छला जे ई आस-भरोस देबाक काज धर्म करैत अछि। चारू भर सँ लतियाएल जाइत, कूही भोगैत एहि उत्पीड़ित समाजक मोनमे एकटा रिलैक्शेसन आनै छै धर्म, तें ओ एकटा उपमा उपयोग केलनि जे धर्म हफीम थिक। आ ओ आगां कहलनि जे हफीम खा क' सूतब उचित नहि थिक। उचित थिक संघर्ष क' क' विजय प्राप्त करब।

अस्तु। एहि संदर्भक तं मात्र हम प्रसंगवश चर्चा कएल। धर्म हफीम कोना छी, तकरा बुझबाक लेल कतहु दूर जेबाक बेगरता नहि छैक। अपना चतुर्दिक समाजमे एकर दृष्टान्त हमरा भेटि सकैत अछि। मुदा, एतय हमर प्रश्न थिक जे आखिर कोन एहन खगता होइ छै जे कोनो समाज अपना लेल धर्म नामक एहि हफीम केँ पैदा करैए। हमर समझ अछि जे एहि प्रश्नक एक नीक उत्तर 'दीना-भद्री' लोकगाथा सँ हमरा भेटि सकैए। दीना-भद्रीक संग एहि ठाम जतेक उत्पीड़न होइत आ अंततः दुनू भाइ केँ मारल जाइत हमरा लोकनि देखै छियै, तकर की औचित्य भ' सकैत अछि? आ जं कोनो औचित्य भइयो सकैत अछि तं से कोन परिप्रेक्ष्यमे भ' सकैत अछि? एक वर्ग अपन वर्चस्व बनब' चाहैत अछि आ दोसर वर्ग अपन स्वतंत्रता लेल लड़ि रहल अछि। वर्ग-शत्रु जं अहां छियनि दीना-भद्रीक तं अहां केँ औचित्य देखार पड़ि सकैत अछि। मुदा ओ वर्ग की करत, जकर स्वतंत्रता, जकर अस्मिता छीनल जा रहल छै आ जे दिन पर दिन कमजोर भेल जा रहल अछि, कारण विश्वासघाती सभक, समझौतापरस्त सभक संख्या दिनोदिन बढ़ल जा रहल छै। एहि प्रकरण ामे स्थिति ई छै जे ओहि जीवन-संघर्षमे बहुतो एहन तत्व छै जे आगू आब बला पीढ़ीक लेल अजस्र प्रेरणाक काज क' सकैए। स्वतंत्रताक रक्षाक एहि आत्मिक तड़प केँ जिन्दा बनौने राखि सकैए। एहि सदिच्छा सँ गाथाकार तथ्य केँ मिथकमे परिवर्तित करैए। ओहिमे दैवी चमत्कार, अनहोनी शक्ति-संगोर केँ शामिल करैए आ एक मनुक्खक खिस्सा केँ धर्मक स्वरूप प्रदान करैए। अपन अस्मिताक संघर्षमे जखन दीना-भद्री मारल जाइ छथि तं ओ प्रेत रूप धारण क' लैत छथि। इच्छाधारी रूप छनि ओ। एहू रूपमे ओ अपन संघर्ष केँ जारी राखै छथि। गाथाक किछु वर्सन तं कहैत अछि जे ओ बारंबार मारल जाइ छथि आ बारंबार जीवित भ' उठै छथि। बारंबार केँ ई पुनरुज्जीवन की थिक? उत्पीड़नक विरुद्ध आ अस्मिता-रक्षाक लेल एक समुदायक लगातार लड़ैत रहबाक मंशा थिक। यैह एहि गाथाक संदेश छै। ध्यान देबाक बात थिक जे एहि गाथाक अंत सुखान्त छै। अर्थात जे ओ आइयो छथि, एखनहु हुनकर सहायता, हुनकर आशीष हमरा लेल प्राप्य अछि। अकारण नहि थिक जे मिथिलाक मुसहर समाज एखनहु दीना-भद्री केँ 'दादादी' कहैत अछि आ अपन परिवारक अभिभावक सदस्यक रूपमे मान्यता दैत अछि।

जं विश्लेषण क' क' देखी आ विचार करी जे वास्तवमे भेल की हेतै, तं हमरा बुद्धिमे दू टा विकल्प देखार दैए। संभव छै जे फोटरा गीदरक संग युद्धमे दीना-भद्री मुइल नहि होथि, कारण नाना प्रकारक तांत्रिक-मांत्रिक आभरण छै, एतय धरि जे स्वयं दीना-भद्री मामा बहोरन केँ अपन मृत्युक सूचना गाम-घरमे पहुंचेबाक आग्रह करै छथि। इहो संभव थिक जे दुनू भाइ जंगले-जंगल कतहु पड़ा गेल होथि आ अतिरिक्त शक्ति-संचय क' क' फेर सँ अपन संघर्ष चालू केने होथि। तकर साक्ष्य तं हमरा लोकनि स्पष्टे देखैत छी जे पुनरुद्भवक बाद ओ अधिक शक्तिशाली भेल देखाब दै छथि। मुदा एकटा दोसरो विकल्प भ' सकैए। से ई जे वास्तवमे फोटरा गीदरक संग युद्धमे दीना-भद्री शहीद भ' गेल होथि आ हुनका बादक नवयुवक पीढ़ी हुनका सँ प्रेरणा ल' क' एहि अस्मिता-संघर्ष केँ जारी राखने होथि। आ बाद मे, गाथाकार एहि समस्त पीढ़ी

सब केँ एक संग, एक मालामे गांथि देने होथि। एहू बातक साक्ष्य एहि गाथामे उपलब्ध अछि। से साक्ष्य तं सभ सँ पहिने यैह जे लोरिक आ कि सल्हेस आ कि नैका जकां ओ एक गोटे नहि छथि। दू गोटे माने एक सँ अधिक। एहि ठाम एक सँ अधिक माने बहुत। माने संगोर। माने सातत्य। एहि सतत संघर्षक एक प्रमाण सप्तरी जिलाक जोगिया जांजरि गाममे हुनक जन्मौटी (जन्मस्थान) तं चिन्हित अछिये, कटैया जंगलमे मरौटी, रखौटी आ जरौटी नामक स्थल सेहो सुरक्षित आ संरक्षित अछि जकरा बारेमे जनविश्वास छै जे एहि स्थल पर क्रमशः हुनका मारल गेल छनि, (शव कें) राखल गेल छलनि आ अन्त्येष्टि भेल छलनि।

सब गोटे अवगत छी जे धर्म केँ जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, झाड़-फूक केँ रूप में परिभाषित करब अविकसित समाजक लक्षण थिक। मुदा जतय पौरोहित्यवाद सन केँ चतुर लुटेरा तंत्र-मंत्र, जादू-टोना ल' क' उत्पीड़न पसारने हो आ अर्थसत्ता आ राजनीतिक सत्ताक संग-संग एहि धर्मसत्ताक उपयोग सेहो वर्चस्व बनेबाक लेल खुलेआम क' रहल हो, ततय एक अस्त्र सँ लड़ने की निस्तार संभव छै? एहि गाथामे फोटरा गीदर आयल अछि। ओ यथार्थमे गीदर माने कि सियार माने कि पशु रहल हएत, से बात तं कोनो 'भक्ते' टा टाइप केँ लोक सोचि सकैत अछि। ओ रहल हएत वर्चस्वी आर्यलोकनिक शक्तिपुंज, जकरा मणिपद्म जी पौरोहित्यवादक मूर्त प्रतीक मानै छथि। एहि बात केँ एकटा दोसर आर्य-दृष्टान्त सँ सेहो बूझल जा सकैत अछि। 'दुर्गासप्तशती'क दुर्गा केँ छली? ओ की वास्तवमे कोनो नारी छलीह? नहि। ओ समस्त देवता सभक शक्तिक पुंज छलीह। ओ नारी-रूपमे किए प्रकट भेली? किए तं महिषासुर नारीक प्रेमी छला। एहि ठाम ई शक्ति-पुंज फोटरा, गीदरक रूपमे किए प्रकट भेल? किए तं दीना-भद्री शिकारक प्रेमी छला। तथ्य केँ मिथकमे परिवर्तित करबाक एकटा सूत्र एहू ठाम देखल जा सकैत अछि।

मुदा, एहि गाथामे हमरा लोकनि देखै छी जे आर्य लोकनिक तंत्र-मंत्रक प्रतिकार आर्ये लोकनिक हथियार ल' क' कएल गेल अछि आ से बेस भारी पड़ल अछि। हुनके हथियार सँ एहि ठाम हुनके मारल गेल अछि। तकरो दृष्टान्त हमरा लोकनि केँ फोटरा गीदरेक प्रसंगमे देखार पड़ि जाइत अछि। मूल गाथाक द्वितीय अध्यायमे फोटरा गीदरक हाथें दीना-भद्रीक मृत्युक घटना वर्णित अछि। ओहि ठाम स्पष्ट कहल गेल अछि जे फोटरा सल्हेस लड़ाका थिक, आ युद्धमे जखन फोटरा मारल जाइत अछि तं सल्हेस ओकरा जीवित क' दैत छथिन। से बारंबार होइत अछि। मुदा आगू छठम अध्यायमे हमरा लोकनि देखैत छी जे ताहिर मियांक लड़ाका गुलामी जाटक संग जखन युद्ध होइ छै, ताधरि दीना-भद्री तंत्र-मंत्रक विभागमे सेहो विशिष्ट सिद्धि प्राप्त क' लैत छथि। दुनू भाइ जनै छथि जे फोटरा गीदर सल्हेसक लोक थिक आ जानता-अनजानता ओकरा सदि घड़ी सल्हेसक दैवी सहायता प्राप्त होइ छै। ई दुनू भाइ फोटरा गीदरक रूप धारण क' लै छथि आ से रूप ततेक सटीक, ततेक विश्वसनीय, ततेक सिद्धि-सम्पन्न छै जे सर्वशक्तिमान सल्हेसक बुते सेहो एहि छद्मवेष केँ चीन्हब असंभव भ' जाइ छै आ ओ अप्पन लड़ाका बूझि क' फोटरा गीदर केँ भरपूर सहायता करै छथिन। आ ई समस्त सहायता वास्तवमे दीना-भद्री केँ प्राप्त होइ छै। दीना-भद्रीक तांत्रिक शक्ति-सिद्धिक बानगी एहि घटनामे देखल जा सकैए, आ अनार्य गाथाकार लोकनिक कल्पनाशीलताक उड़ान, सेहो देखल जा सकैए। अपना लोकमे प्रेरणा आ संघर्ष-क्षमताक वृद्धि कोन-कोन जोगार सँ कएल जा सकैए, एहन समस्त जोगार एहिठाम आजमाओल गेल अछि। एहि गाथामे तांत्रिक अवधारणा सभक बाहुल्य छै, से एक भिन्न विशिष्टता थिक। ई उत्पीड़ित समुदायक प्रेरणा-गाथा थिक, तें एकरा जेहन हेबाक चाही, ठीक-ठीक तेहने अछि।

मैथिली लोक-साहित्यक लेल ई कोनो विराट वरदान सँ कम नहि थिक जे आइ सँ सवा सय बरख' पहिने सर जॉर्ज ग्रियर्सन केँ ध्यान एहि लोकगाथाक विशिष्टता दिस गेलनि आ लोककंठ सँ प्राप्त क' ओ एकरा अभिलिखित क' लेलनि। ओ आधुनिक मैथिली साहित्यक आदिकाल छलै। तहिया तक मैथिली साहित्यक इतिहास धरि नहि लिखायल छल। अहां कल्पना क' सकै छी जे से जं नहि भेल रहैत तं की भेल रहैत? एहि सवा सय बरखमे जाहि तरह सँ मिथिला-समाज पौरोहित्यवाद केँ सहकर्मी बनि क' 'कोंचा झुमकी खोंइछा झुमकी, सरबा झुमकी ढकना झुमकी' करैत रहल अछि, दीना-भद्रीक तेज आ उचिती केँ केँ सहि सकैत छल? जं विश्वास नहि हो तं साहित्य अकादमी सँ प्रकाशित पुस्तक 'दीनाभद्री'क अवलोकन क' सकैत छी, जकर संयोजक पंडित चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' छथि आ सम्पादक महेन्द्र नारायण राम आ फूलो पासवान छथि। ग्रियर्सनक पाठ आ साहित्य अकादेमीक पाठ देखि लियौ, हमर अनुमान अछि जे सभ्यता-विमर्षक लेल कतहु आन ठाम जेबाक बेगरता नहि हएत। ❐

संदर्भ :

- मोहन भारद्वाजः एकैसम शताब्दीमे प्रवेश करैत मैथिली कविताः देशज-2001ः पृष्ठ-62
- मणिपद्म : मैथिली लोकगाथाक इतिहासः पृष्ठ-221-22
- उपर्युक्त
- ग्रियर्सनक पुस्तक 'Selected Specimens of Bihari Language' 1885मे प्रकाशित भेल छल। एहिमे 'गीत दीनाभद्रीक ओ गीत नेवार' संकलित छल। ग्रियर्सनक पोथीक मैथिली अनुवाद पंडित गोविन्द झा केलनि, जे डॉ. रमानन्द झा 'रमण'क संपादनमे 2010मे अखियासल प्रकाशन सँ प्रकाशित अछि।

उदयनाचार्य : न्याय आ वैशेषिक दर्शनक मादे सनातनक संरक्षक

शिव कुमार झा टिल्लू

> कहल जाइछ जे भगवान जगन्नाथक पट ठामहि खुजल आ उदयनाचार्य जगन्नाथ जीक दर्शन केलथि। मूर्तिपूजा आ सनातनक संरक्षक उदयनाचार्य सरल, सुशील आ ईमानदार नास्तिक व्यक्ति केँ सेहो आस्तिक सन स्थान देबाक लेल न्यायकुसुमांजलिमे भगवत प्रार्थना आ तर्क दैत छथि। अनीश्वरवादी होथि मुदा जौं सरल आ मानवीय मूल्यक प्रतिपादक होथि त' आस्तिक। भागवत भक्तक समान आदरणीय आ पुण्यक भागी छथि।

हबी छैक जे वेद, वेदांग, उपनिषद, दर्शन ग्रन्थ, सूक्त आ कर्मकांडिक शोध सर्जित तत्वक अभावमे मिथिलाक रीति आ व्यवहार सम्पूर्ण सनातन संस्कृतिक मार्गदर्शक भ' सकैछ। एहि तरहक अवधारणाक पाछां ई द्रष्टव्य जे मिथिलाक माटि पानि सँ विविध साहित्य आ सांस्कृतिक विधाक रास विद्वत आ विदुषी भेल छथि जनिक मान्यता केँ आर्यावर्त केर विस्तृत आ विविध सनातनी सिद्धांत सकारैत अछि। उदयनाचार्यक चर्च केने बिनु भारतीय न्याय आर वैशेषिक दर्शन अपूर्णे टा नञ वरेण्य अमान्य मानल जाइछ। हिनक जन्म मिथिलाक वर्तमान समस्तीपुर जिलाक ''करियन'' गाममे भेल। गाम करियन समस्तीपुर जिलाक रोसड़ा अनुमंडल सँ 12 किलोमीटर उत्तर आ दरिभंगा जिलाक बहेड़ी प्रखंड मुख्यालय सँ नौ किलोमीटर दक्षिणमे स्थित अछि।

उदयनक काल : उदयन विरचित वैशेषिक ग्रन्थ लक्षणावलीमे उद्धृत रचनाकाल 906 शक (984 ईस्वी) केर आधार पर हिनक काल दशम सदीक उत्तरार्ध मानल जाइछ। महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज सन विद्वान हिनक आविर्भावक एहि काल केँ मान्यता दैत छथि। किछु अन्य मान्यताक अनुसार (जेना: 1 दिनेशचंद्र भट्टाचार्य: हिस्ट्री ऑव नव्य न्याय इन मिथिला (मिथिला संस्कृत इंस्टिटयूट, दरभंगा, 1958.2, सतीशचन्द्र विद्याभूषण: हिस्ट्री ऑव इंडियन लाजिक (कलकत्ता, 1921); केँ संग संग महामहोपाध्याय डॉ. सर गंगानाथ झा आ प्रसिद्द इतिहासकार डॉ. राधाकृष्ण चौधरी उदयनाचार्यक समय 976 शक अर्थात 1054 ईस्वीक आसपास मानैत छथि। संस्कृत साहित्यक प्रसिद्ध विद्वान डॉ. काशीनाथ मिश्र आ डॉ. किशोरनाथ झा हिनक एहिकाल आ जन्मस्थान ''करियन'' केँ ठोसँ प्रमाण 1क संग मान्यता दैत छथि (पुस्तक : भारतीय साहित्यक निर्माता उदयनाचार्य : डॉ. काशीनाथ मिश्र, साहित्य अकादेमी नई दिल्ली, मैथिली अनुवादक डॉ. किशोर नाथ झा)

दिनेशचंद्र भट्टाचार्य लिखैत छथि जे 'नैषधीयचरित्' केर रचनाकार श्रीहर्ष उदयन मत केँ खंडन करैत छलाह। श्रीहर्ष "काव्यप्रकाश'' पुस्तक केर प्रणेता मम्मट केर भागिन छलथि। 'खण्डन-खण्ड-खाद्य' नामक ग्रन्थमे श्रीहर्ष अद्वैत मत आ न्याय सिद्धान्तक खंडन केलथि, एकर कारण छल जे उदयनाचार्य श्रीहर्षक पिता हीरपंडित केँ पराजित केने छलथि, जाहि सँ भारतक

संपर्क: *जे.एम.ए. स्टोर्स लिमिटेड, फेयरडील काम्प्लेक्स (तृतीय तल्ला), राममंदिर के सामनेमेन रोड बिस्टुपुर जमशेदपुर-831001, मो. 9204058403*

मध्य भूभागक राज कन्नौज आदि क्षेत्रमे स्थानीय विद्वान श्रीहर्ष सँ बेसी उदयन – दर्शन लोकप्रिय भ' गेल छल।

अपन प्रकांड, पांडित्य, अलौकिक शेमुषी तथा प्रोढ़ तार्किकताक केँ कारण ''उदयनाचार्य'' नाओं सँ प्रसिद्ध एहि विद्वानक लगभग आठ गोट दर्शन विषयक सर्जना ग्रन्थ छनि।

1. **किरणावली:** प्रशस्तपादभाष्य विषयक टीका;
2. **तात्पर्यपरिशुद्धि:** वाचस्पति मिश्र द्वारा रचित 'न्यायवार्तिक' केर व्याख्या तात्पर्यटीकाक विश्लेषण ात्मक व्याख्यान जाकर दोसर नाओं 'न्यायनिबंध' अछि
3. **लक्षणावली:** वैशेषिक दर्शन सार संग्रह
4. **बोधसिद्धि:** न्यायसूत्र वृत्ति
5. **आत्मतत्वविवेक:** एहिमे बौद्ध विज्ञानवाद तथा शून्यवाद केर विस्तार सँ खंडन क' क' ईश्वर केर सिद्धि नैयायिक पद्धति सँ करबाक दिशा निर्देशन अछि। ई उदयन केर कृति सभमे बेसी परिपक्व आ तर्कबहुल मानल जाइछ। रघुनाथ शिरोमणि, शंकर मिश्र, भगीरथ ठक्कुर तथा नारायणाचार्य आत्रेय सन प्रसिद्द दार्शनिक विद्वान लोकनिक टीका केर प्रमाणिकता एहि ग्रानक मान्यताक प्रत्यक्ष प्रमाण माने जाय। उदयनाचार्य जीक एहि कृति केँ सर्वश्रेष्ठ दर्शन सर्जना मानल जाइछ।
6. **न्यायकुसुमाञ्जलि:** विविध तार्किक संग एहि पुस्तकमे ईश्वरक सिद्धि, प्रमाणिकता, सनातनक सार्थकता आ मूर्तिपूजक समर्थन तत्वक रास तर्क उपलब्ध अछि।
7. **रत्नावली:** न्याय दर्शन रहस्य
8. **रत्नदीपिका:** न्याय दर्शन मौलिक तत्व।

द्रष्टव्य जे न्यायमतमे जहानक प्रति सम्यक कर्म आ निष्ठा सँ ईश्वरक सिद्धि मानल जाइछ। बौद्ध नितांत निरीश्वरवादी छथि षड्दर्शनमे सेहो ईश्वरसिद्धिक अनेक प्रकार छैक। एहि तरहक मतक विस्तृत समीक्षण क' आचार्य उदयन सिद्धांत प्रदर्शित कयलनि। हिनक विषयमे एकटा किंवदन्ति प्रसिद्ध अछि जे जखन उद्यानक असमय पहुंचला सँ जगन्नाथपुरीक फाटक बंद छल तखन ई भगवान् विष्णु (जगन्नाथ) केर ऐश्वर्य केँ चुनौती दैत कहलनि जे ऐश्वर्यक गुमानमे अहन हमर तिरस्कार क' रहल छी मुदा ई जानि लिय' जे अनीश्वरवादी बौद्धक प्रसारक कारणे अहांक शक्ति हमर अधीन अछि। हम सनातन संरक्षक छी, हम नञ अपनेक शक्तिक संरक्षा करब त' बौद्ध आ सिद्धान्तक लग अपनेक कोन समरथ।

ऐश्वर्य मद मत्तोऽसि मामवज्ञाय वर्तसे।

उपस्थितेषु बौद्धेषु मदधीना तव स्थिति

कहल जाइछ जे भगवन जगन्नाथक पट ठामहि खुजल आ उदयनाचार्य जगन्नाथ जीक दर्शन केलथि मूर्तिपूजा आ सनातनक संरक्षक उदयनाचार्य सरल, सुशील आ ईमानदार नास्तिक व्यक्ति केँ सेहो आस्तिक सन स्थान देबाक लेल न्यायकुसुमांजलिमे भगवत प्रार्थना आ तर्क दैत छथि। अनीश्वरवादी होथि मुदा जौं सरल आ मानवीय मूल्यक प्रतिपादक होथि त' आस्तिक। भागवत भक्तक समान आदरणीय आ पुण्यक भागी छथि।

इत्येवं श्रुतिनीति संप्लवजलैर्भूयो भिराक्षालिते

येषां नास्पदमादधासि हृदये ते शैलसाराशया:।

किन्तु प्रस्तुतविप्रतीप विधयोऽप्यु-च्चैर्भवच्चिन्तका:

काले कारुणिक त्वयैव कृपया ते भावनीया नरा:।

एकर आशय जे हे कृपासिंधु, एहि तरहें वेद, न्याय, तर्क आदि रूपमे हम निर्झणीक नीर एहि ग्रन्थमे देने छी जे ओहि नास्तिक केर हृदय केँ ओहि तरहें धो देत जाहि सँ ओ अपन सरलताक संग अपन निवासक अनुकूल वासँ करबाक योग्य भ' जाथि।

उदयनाचार्य न्यायशास्त्र पर 'तात्पर्य परिशुद्धि', 'आत्मतत्वविवेक' आ 'न्यायकुसुमांजलि' सन ग्रन्थ लीखि तत्कालीन बौद्ध दार्शनिक सभ सँ शास्त्रार्थ क' ओहिमे बौद्ध समर्थन केँ पराजित क' अपन तर्क केर आर ठोसँ मान्यता प्रदान केलथि। अपन जन्मभूमि सँ सदति आत्मिक रूप सँ जुड़ल एहि महान दार्शनिक केँ कहियो कोनो राजाश्रयक खगता नञ प्रतीत भेलनि। राजाश्रय सँ दूर रहबाक कारण आ देवभाषामे क्लिष्ट तत्वक समावेश करबाक संग संग दर्शनमे गूढ़ रहस्य केँ क्लिष्ट साहित्यमे रचबाक कारणे एतेक विलक्षण कृतिक प्रणेता आम जनमानसक मध्य ओहि लोकप्रियता केँ प्राप्त नञ क' सकल जकर ई अधिकारी छल।

वैशेषिक दर्शनमे उदयन विरचित दो गोट ग्रन्थ अछि:, किरणावली तथा लक्षण ावली।

किरणावली प्रशस्तपाद भाष्य केर परिपक्व व्याख्या अछि आओर लक्षण ावली एकटा स्वतंत्र वैशेषिक ग्रन्थ। किरणावली बुद्धि प्रकरण मात्र धरि प्रकाशित अछि आ एहि विषय पर बहुत रास व्याख्या लिखल गेल जाहिमे वर्धमान केर किरणावली प्रकाश आ पद्मनाभी मिश्र केर किरणावली-भाष्कर मुख्य अछि।

उदयनाचार्य द्वारा रचित किरणावलीमे भाव आओर अभावक भेद सँ पदार्थक विभाजन कएल गेल अछि। भावक अंतर्गत: द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष आओर समवाय नामक छह पदार्थक गणना क' ओकरा अभाव सँ अलग मानल गेल। अभाव केँ अंतर्गत प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव आर अन्योन्याभाव नामक चारि भेद मानल गेल अछि। लक्षणावली

वैशेषिक दर्शन केर एकता स्वतंत्र आ गूढ़ ग्रन्थ अछि।

लक्षणावली पर तीन गोट प्रसिद्ध व्याख्या लिखल गेल अछि। लक्षणावली न्यायमुक्तावली/एहि टीका केँ रचयिता शेष शार्ङगधर केर काल 1500 ई. मानल जाइत अछि। सन् 1900 ई. एकरा सम्पादित क' वाराणसी सँ प्रकाशित कएल गेल।

लक्षणावलीप्रकाशः आचार्य विश्वनाथ झा द्वारा रचित एहि टीकाक प्रकाशन दरभंगासँ 1822 शक (1897 ई.)मे भेल।

लक्षणावलीप्रकाशः सरस्वती भवन पुस्तकालय केँ पाण्डुलिपि विभागमे सुरक्षित एहि टीकाक लेखक महादेव छथि।

हिनक ज्ञान तर्क वितर्क आ सरल जीवन शैलीक संदर्भमे बहुत रास किवदंती प्रचलित आ चर्चित अछि। ओल आ दूधक आहारी उदयन केँ एक बेरि लगलनि जे मिथिलामे उचित सम्मान नञ भ' रहल छनि ।पलायन केर योजना बनबैत गंडक नदी पार करबाक लेल सिंघिया घाटपर घटबार सँ बिनु खेबाक आग्रह केलथि। हम पंडित छी कैंचा नहि। मल्लाहक प्रत्योत्तर छल जे एहि देशकोसमे एक्केटा पंडित छथिः उदयनाचार्य, हुनका छोड़ि हम खेबा ककरो नञ छोड़ब। उत्तर सुनि अतिप्रसन्न उदयनाचार्य ठामहि घुरि गेलथि। हिनक तर्क वेद सत्य आ बौद्ध भिक्षुक केर तर्क वेद असत्य तदांतर दुनूक ताड़क गाछपर सँ कुदबाक जनश्रुति (जाहिमे बौद्ध भिक्षुक केँ मृत्यु भ' जाइछ आ उदयन सुरक्षित रहि जाइत छथि) बहुत विख्यात अछि।

वर्तमान परिपेक्ष्यमे उदयन दर्शन कतेक प्रासंगिक ई दर्शनक लेल चिन्तनक विषय मुदा उदयन डीहक ''अनमोल माटि'' अपन उद्धारक बाट धरि अवश्य जोहि रहल अछि।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद, राम मनोहर लोहिया सँ ल' क' शंकराचार्य स्वामी निश्च्छलानन्द केर संग संग बिहारक प्रायः बहुत रास मुख्यमंत्री एहि डीहक अनमोल माटिकेर टीका लगौने छथि, मुदा एकाध छोट छीन उपलब्धि केँ छोड़ि उदयनाचार्यक गाम आ डीह एखनधरि उपेक्षित अछि।

❐

लेखकसं अनुरोध

मैथिली भाषाक शोध जर्नल 'तीरभुक्ति' अखिल भारतीय मिथिला संघक त्रैमासिक प्रकाशन अछि। अहिमे मैथिली भाषा साहित्य आ कलाक संग मिथिलाक संस्कृति आ समाजसं जुड़ल विभिन्न विषय पर शोध-पत्र प्रकाशित कयल जायत। अहि मंचक विकास लेल लेखकक भूमिका बड महत्वपूर्ण अछि, ताहि सं 'तीरभुक्ति' मे प्रकाशित लेखमे निहित जानकारी आ विचारक श्रेय आ जिम्मेवारी लेखकके छनि। एकरा लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ बा संपादकक वैचारिक सहमति आवश्यक नहि अछि। विचारमे विविधता लोकतंत्रक आ मिथिलाक शक्ति अछि।

लेखकसं निवेदन अछि जे ओ शोधपरक लेखमे सेहो सरल भाषाक उपयोग करैथ, जाहि सं विशेषज्ञक संग-संग सामान्य पाठक आ छात्र सेहो नीक जेकां बुझि सकय। मैथिलीक अलावे, दोसर भारतीय आ विदेशी भाषाक साहित्य दिस सेहो 'तीरभुक्ति' के लेखककेँ ध्यान देबाक चाहि।

'तीरभुक्ति' मे प्रयोगक लेल पठाओल गेल सामग्रीक जों कोनो कारणवश उपयोग नाहि भ' सकल त' एकरा अन्यथा नहि लेल जाय। लेखकक सहयोग, धैर्य आ संयम 'तीरभुक्ति' मिथिलाके मैथिली भाषामे एकटा उत्कृष्ट प्रकाशन बना सकैत अछि।

अहाँ हमरा अप्पन लेख ई-मेल सँ सेहो पठा सकैत छी, हमर पता अछि-
teerbhuktimaithili@gmail.com

मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

मिथिला आ माछ एक दोसरक पूरक अछि। पंचदेवताक एकहि संगे उपासना करए बला मैथिल समाज जाहिमे ब्राह्मण सेहो सम्मिलित छथि, कुनो दिन आ कुनो मास माछ खएबासँऽ परहेज नहि करैत छथि। माछकें जल-पड़ोर, जल-फूल आदि नामसँ बजा कतेक गोटे तँ एकरा मांसाहारी भोजनक श्रेणी तकमे नञ राखए चाहैत छथि। कातिक आ साओन मासमे जखन लोक सामान्यतया मांसाहारी भोजन त्यागि दैत छथि, अपन मैथिल अहू मासमे खूब चटकारसँऽ माँछ खाइत छथि, संगहि एहि मासमे माँछ खाएबलाक हेतु बैकुंठमे जगह बना दैत छथि।

मैथिली लोकगीतक संसार स्त्रीगणक संसार थिक। पुरुष पक्षक भूमिका गीत निर्माणक आओर किछु गीतक गायन तक सीमित अछि। मैथिलानी एक बेर अर्जित कयल गेल अमूर्त धरोहर जेनाँकि गीत-नाद, पाबनि-तिहार, विध-व्यवहार, व्रत-निष्ठा, कथा-पीहानी; अरिपन काढ़ब, ठांव निपब, कोबर लिखब; केथरी, सुजनी सीयब; सीकीसँऽ पौती-मौनी बुनब, माटिक महादेब, सामा-चकेबा, खेलोना, कोठी, चूल्हा आदि बनेबाक परंपरा माए, पितियाइन, दाइ, नानी, सासु आदिसँऽ सिखैत छथि आ सभटा लुइर अपन बेटी, पूतहु, पोती, नातिन आदिकें अदौसँऽ एहि कलाक पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तारंतरित करैत निमाहि रहलि छथि। हलांकि आधुनिकता आ उपभोक्तावादक युगमे एहि परंपराक पतन भेल जा रहल अछि परञ्च मूल भावमे थोड़-बहुत जोड़-तोड़क संग इ परंपरा महिला वर्गमे एखनो शाश्वत अछि।

दुःख तखन होइत अछि जखन एहि समाजक स्त्रीगनक चर्चा होइत छैक। आजुक परिवेशमे बहुत स्त्रीगन पुछला पर निधोख कहैत छथिछ “हम किछु नहि करैत छी, निठल्ली छी कियाएक तऽ हाउसवाइफ/गृहणी छी”। पुरुष पात्र बहुतो एहेन छथि जे पुछला पर कहता- हमर घरनी किछु नहि करैत छथि। घरमे रहैत छथि, हलांकि ओकर बाद कहता- “हमर आँगनसँऽ हाउसवाइफ छथि।'' औजी, कहियो अपन आँगनबालीक भूमिकामे जीवन जीब कै तै देखियौ तखन पता लागत जे आहाँक घरवाली कतेक पैघ जवाबदेहीकें निमाहि रहलि छथि ! हुनका नहितँऽ कहियो छुट्टी, ने कहियो आराम, आने कहियो कियो मदति केनिहार, आओर ताहि जवाबदेहिक मतलब किछु नहि? एहि पर विचार जरूर करक चाही।

भोजन आ भोजनक विन्यास सभसँऽ पैघ, त्वरित आ शाश्वत कला अछि। एकटा कहबी छैक- “जे नीक खएत सएह नीक भोजन बनाएत”। इहो कहल जाइत छैक, जखन कुनो महिला सुचिता आ समर्पणक भावसँऽ भानस बनबैत छथि तऽ भोजन सुअदगर आ रुचिगर हेबेटा करत। यैह कारण छैक जे भगवान राम माता कौशल्या, सुमित्रा, कैकेई, सासु सुनयना, गुरुपत्नी अरुंधती, पत्नी सीता सभक हाथक रान्हल भोजन केलाह, मुदा जे स्वाद हुनका भीलनी सबरीक आंइठ बैरमे लगलनि तेहेन सुआद कत्तहु नए लगलनि। ई भेल भोजन बनोनिहारिक अनुराग। आजुक समयमे नाना तरहक सुविधा जेनाँकि रसोईगैस आकि आनो तरहक जारनि उपलब्ध अछि जाहिसँऽ चट्टहि भानस भऽ जाइत अछि।

संपर्क : बी-2/333, तारा नगर, ओल्ड पालम रोड, ककरौला, सेक्टर 15, द्वारका, नई दिल्ली 110078, मो. 8076208498

कल्पना ओहि समयक करू जखन साओन-भादबक मुसलाधार बरखामे खड़हक छप्पर चुबैत घरमे मिथिलाक नारी कोन धराने भानस करैत छली! जारनिमे भीजल चेड़ा, गोइठा, करची, झाँखी चुल्हामे घोंसिया कखनो मूँहसँ तऽ कखनो बिएनि होंकि आँच पजारब, धुआंसँ आँखिमे नोर भरल आ तैयो रंग-बिरंगक पकमान आ भोजनक सचार। ताहूमे अगर घरमे कियो पैघ पाहुन जेनांकि जमाए, समधि इत्यादि आबि गेलाह तऽ घोर बिकट, तथापि मोन मलीन कएने बिना हुलसित मोनसँऽ भोजनक विन्यासमे लागि जइत छली। तरकारीक अभावमे बारीक़ साग, कंद, खम्हारु, ओल, लती-फत्तीक पात जेना कन्ना, तिलकोड़क पात; लटकल चारक सजमनि, कदीमा; झाड़क झीमनी, करैल; घर-पछुआरमे लागल गाछक फल: केरा, कटहर आदिसँऽ चीज़ ओरिया अनेक तरहक तरकारी, तरुआ-बघरुआ, भुजिया-सन्ना-चटनी बनबैत छली तकरा बादो टारासँऽ नाना तरह अंचार जाहिमे फारा, कुच्चा, खटमिट्ठी आदि ब्यंजन परोसि पाहुनक सत्कारमे 20-25 तरहक सचार लागि जइत छलैक। जखन पाहुन भोजन पर बैसता आ महिला लोकनि गीत नहि गेती से कोना हेतैक तें बिनु थकने विहुँसैत मोनसँऽ दाई-माई सभक संगौर कऽ गीत-नाद शुरू होइत छल। पाहुन खाईतो रहैत छलाह आ गीतक आनंद लइत छलाह। जखन कखनो कोनो पांच सितारा होटलमे भोजन करैत छी आ कोनो गीतगाइन गबैत छथि तऽ होइत अछि जे एहिसँऽ बढ़ियाँ कोरसमे गीत मैथिलानी गबैत छथि। वएह खानसामा, वएह परोसए बाली, वएह गीत गेनिहारि, वएह वस्तुक व्यवस्था केनिहारि। मल्टीटास्किंगक अहिसँऽ पैघ उदाहरण भला आर की भऽ सकैत अछि?

पहिनुका समयमे लोकसभ बियाहसँ पहिने एहि बातक खाँझ-भाँझ करैत छलाह जे जाहि घरमे कन्यादान करबाक अछि ओहि घरक चीनबार कहेन छैक। मतलब कतेक साफ़-सफाई, कोन तरहक द्रव्य केर बरतन-बासन बर पक्षक ओहिठाम उपयोग होइत छैक। हिनका लोकनिक खान-पान कहेन छन्हि, घर-परिवारक भोजनक विन्यास, दुःखक भोजन, सुखक भोजन, पाबनि-तिहारक भोजन, यात्रा पर जएबाक काल बाटमे खेबाक जोग भोजन, खाद्य भोजन, अखाद्य भोजन, पथ्य बला भोजन, कोन समयमे की खाइ आओर की नञ खाइ, इत्यादि नाना तरहक जानकारीक अगर ठीकसँऽ ओहि भावक विवेचना कएल जाए आओर विभिन्न अवसर पर मैथिलानीक द्वारा गाओल गीत देखलासँऽ एहसास हएत जे ओ गीत सब विधपुरौआ आकि मनोरंजने वला गीत मात्र नहि अपितु ज्ञानक खान अछि। ओहि गीतमे ज्ञान, विज्ञान, संस्कार, सामग्रीक वर्णन आ विवरण सब किछु समाविष्ट अछि।

मैथिलीमे अगर अंग्रेजीक शब्द 'कल्चर' के अनुवाद कएल जाए तऽ हमरा बुझने ओ शब्द जे 'कल्चर' सभसँऽ लग अछि मैथिलीमे ओकरा "मिथिलाम" कहल जाएत आओर इयैह मिथिलाम अछि जे मैथिलकेँ भारते टा नहि अपितु समस्त संसारमे अलग पहचान दैत अछि। मिथिलामक चर्चा बिनु भोजन विन्यास, बिनु महिला सभक भूमिका, बिनु गीत-नाद आकि विध-व्यवहारक संभव नहि अछि। वस्तुतः भोजन विन्यास, गीत-नाद, विध-व्यवहार, जीवन जीबाक अंदाज़, वस्त्र विन्यास, धर्मक आचरण, प्रकृति आ संस्कृतिक समन्वयक नाम भेल मिथिलाम।

बात भोजन विन्यासक चलि रहल अछि तऽ कनेक मिथिलाक इतिहास के सेहो ध्यान देमय पड़त।

ज्योतिरीश्वर अपन कृति *वर्णरत्नाकरमे* 12म् शताब्दीक मिथिलाक भोजन विन्यास पर प्रकाश देलनि अछि। हिनका अनुसारे मिथिलाक प्रमुख भोजन भात, दालि, तरकारी, चूड़ा, दही, शक्कर, फल तथा दूध छल। ज्योतिरीश्वर अपन दोसर पोथी *प्राकृति-पैँगलम्*मे कहैत छथि जे "ओ गृहणी धन्य छथि जे अपन पतिकेँ केराक पात पर भात आ घी परोसि खोअबैत छथि"। एहि पोथीमे रंग-बिरंगक माँछ रान्हव आ तरकारी बनेवाक विधि सेहो लिखल अछि। *वर्णरत्नाकर*मे जे मिथिलाक प्राचीन परम्परागत भोजन सामग्रिक सूची प्रस्तुत कएल गेल अछि ताहिमे "चाउर, चूड़ा, मुंगबा, लड़ुबी, सरुआरि, माँठ, फ़ेना, मधुकूप्पी, तिलबा, सिरोल, खिरसा, सिरनी, झिल्ली, फरही, भूजा, मोतीचूड़, अमृतकुंड आदिक उल्लेख अछि, संगहि भोजनमे दहीक प्रधानता सेहो भेटल अछि।

खानपान कोनो समाजक संस्कृतिक मूल होइत अछि। परम्पराक बात करी त' मैथिल चारि बेर भोजन करैत छथि:

1. पनपियाइः किछु आहारग्रहण उपरांत जलग्रहण।

2. कलउ, मँझिनीः मध्याह्न भोजन कायाकल्प तृप्यान्त स्थुल शरीर तृप्त्यार्थ अन्न-फल-जल सँ परिपूरित भोजन।

3. बेरहटः दिनक चारिम पहरमे लेल जायवला आहार।

4. रातुक भोजन। कतेक लोक रातिक हल्लुक आ सुपाच्य आहार लैत छथि जकरा "हलझप्पी" कहल जाइत अछि।

आब लोकगीत पर अबैत छी, लोकगीतमे फकरा, पीहानी, गीत, लोकवृति आदि सब किछु समाहित अछि। एहिठाम दू गोट फकरा मैथिल समुदायक भोजन विन्यास आ भोजनक प्रति आसक्तिक बुझबाक हेतु पर्याप्त अछि।

मिथिलाक भोजन तीन
कदली, कबकब, मीन
तीन तीरहुतीया तेरह पाक
ककरो लेल चुडा दही
ककरो लेल भात

अही दू गोट गीतक आधार बना सब विवरण देखल जा सकैत अछि।

मिथिलाक भोजन तीनः कदली, कबकब, मीन

एकर अर्थ भेल जे मिथिलाक लोक सभ लगभग नीकसँऽ लकऽ अधलाह तकमे जेनाँकि: उत्सव, काज-राज, संस्कार, पाबनि-तिहार धरिमे केरा, ओल बा ओले परिवारक आन कंद जेनाँकि खम्हरुआ; आओर अंतत: नाना प्रकारक माछक प्रयोग भोजनमे करैत छथि। विवाह-दान, मुड़न, उपनएन, पाबनि तिहार सबमे केराक प्रयोग हेबेटा करैत अछि। ओहुना लोकसब केराकें पाकल, काँच आ केराक फुलक सेहो खेबाक विन्यासमे प्रयोग करैत छथि। केराक तरुआ, तरकारी, सत्यनारायण भगवानक कथामे घोरुआ प्रसाद आ ओहुना पाकल केराक प्रयोग शाश्वत अछि।

कबकबक बात करैत ई कहब जरूरी अछि जे ओल मिथिलामे बहुत प्रिय अछि। एक फकरामे भादबक ओल केर बारेमे कहल जाइत छैक:

भादवक ओल की खाए राजा आकि चोर

मिथिला आ माछ एक दोसरक पूरक अछि। पंचदेवताक एकहि संगे उपासना करए बला मैथिल समाज जाहिमे ब्राह्मण सेहो सम्मिलित छथि, कुनो दिन आ कुनो मास माछ खएबासँऽ परहेज नहि करैत छथि। माछकें जल-पड़ोर, जल-फूल आदि नामसँ बजा कतेक गोटे तँ एकरा मांसाहारी भोजनक श्रेणी तकमे नञ राखए चाहैत छथि। कातिक आ साओन मासमे जखन लोक सामान्यतया मांसाहारी भोजन त्यागि दैत छथि, अपन मैथिल अहू मासमे खूब चटकारसँऽ माँछ खाइत छथि, संगहि एहि मासमे माँछ खाएबलाक हेतु बैकुंठमे जगह बना दैत छथि।

कातिक मास जे गैंचा खाए।
ससरि-फ़सरि बैकुंठे जाए।।

एक बारहमासा एहेन भेटल जाहिमे मिथलामे उपलब्ध लगभग सब माछक वर्णन तँऽ अहिए ओकरा कोना बनाबी कोना खाइ, कथीक संगे खाई सब वर्णित अछि। एतबे नहि लगभग 75 प्रतिशत माँछ जे मिथिलाक पानिमे भेटैत अछि तकर वर्णन छैक:

मास हे सखि सरस अगहन भूजल चूड़ा संग यो
तरल चेचड़ा माछ कुरमुर लागए मोन भरि संग यो
पूस हे सखि अन्न नवका संग मांगुर झोर यो
कबइ कुरमुर दाँत दबइत करय जनजन शोर यो
माघ बदरी जाड़ थरथर काँपए तन बड़ जोर यो
सुख बोआरी खंड लखि कए मन विनोद विभोर यो
मास फागुन मदक मातल बहए पछबा बसात यो
बढ़ल स्वादक माछ टेंगड़ा रान्हल सानल भात यो
चैत हे सखि रोग सभदिस रूप नाना देखि यो
तरल भुन्ना पलइ रान्हल खाइत बड़ सुख लेखि यो
मास हे सखि आबि पहुँचल गरम बड़ बइसाख यो
गेल मन रुचि माछ गामर खंड सभ दिन चाख यो
जेठ हे सखि हे हेठ बरखा मुंड भाकुर पात यो
पड़तु बिसरतु आबि ससरतु कऽर नवका भात यो
मेघ सखि बरसत अखाढ़ जत रसालक डारि यो
तोड़ि काँचे आम आमिल देल सौरा पाल यो
मास हे सखि आओल साओन भरल अंडा घेंट यो
तरल दही माछ मारा खाथि भरि पेट यो
माछ इचना भेटल कहुना खाए भरलहुँ कोठि यो
मास आसिन देवपूजा शंख घंटा नाद यो
रान्हि रहुआ माछ बइसब पूर्ण भेल परसाद यो
मास कातिक बारि मरूआ बऽड़ तरल-अपूर्व यो
पूरल बारहमास हरिनाथ गाओल सगर्व यो...

माँछ खेबाक वर्णन तँ अहिए माछक शिरा खेबाक परंपरा प्रबल सेहो अछि, घरक मुखिया, पाहुन, बरियाती आदिकेँ शिरा परोसल गेल आ बुझू हुनकर उचित सत्कार भेल। निम्नलिखित फकरा एहि कथ्य के प्रमाणित करैत अछि:

शिरा खाए से मीरा।
पूच्छी खाए गुलाम।।

जमाए जखन भोजन करऽक हेतु बैसइत छथि तँऽ नाना तरहक गीत गाबि हुनक मनोरंजन कएल जाइत अछि। एकटा डहकन जाहिमे देखियौ, ओना तँ गारि देबाक परंपरा अछि मुदा गारिक संग-संग भोजन विन्यासक वर्णन सेहो अछि।

खाजा मूंगबा आर पिरिकिया
ता पर गरम सोहारी जी
माजी के गारी पिताजी के गारी
आ बाबाजी के पढथि गारी जी
पढु हे सारि हमरो के गारी
हम लेब देह के पसारी जी

एहि गीतमे गारि तँ छैहे जे डहकनक मूल प्रकृति अछि, मुदा गारिक संग-संग भोजन सामग्री - खाजा, मूंगबा, पुरुकिया, सोहारी आदिक विवरण सेहो छैक।

सामा-चकेबाक एक गीतमे बहिन सब भोजनक बात करैत छथि:

साम-चको साम-चको अबिह हे अबिह हे।
जोतला खेतमे बैसिह हे बैसिह हे।
लाले रंग पूरी पकबिह हे पकबिह हे।।

मिथिलामे साग खेबाक परंपरा सेहो अदौसँ अछि। अयाची मिश्रक जीवनवृत्त ककरा नहि बुझल छैक। मात्र 11 कट्ठा खेतमे साग-पात कंद-मूल खाकऽ जीवन यापन करैत छलाह आ अध्ययन-अध्यापन करैत छलाह। कतेक बेर राजा बजौलखिन मुदा अपन गामक गुरुकुल छोड़ि कत्तहु नहि गेला। स्वाएत संप्रभुताक सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत करैत छलाह। माँछक

तुलनामे सागक अधिक प्रधानता देबाक प्रथा मिथिलामे सहज अछि। एकटा फकरा एहि बातक प्रमाण अछि:

माछ-भात पांच हाथ।
साग-भात सात हाथ।।

विन्यासमे सागक अलावे सागकें आन चीज़ सब जेना अरिकोंच, गुजिया, इत्यादि बनबैत छथि, खेसारी, बथुआ, केराव, चना, करमी, गेनहारी, पटुआ आदिक साग मिथिला लोक खाइत छथि। अपना ओतय साग तोड़ल नहि अपितु खोटल जैत अछि। कोनो भोजमे साग एक महत्वपूर्ण तरकारी होइत अछि। मिथिलाक एहि परंपरासँ प्रभावित होइत ठीके कहल गेल अछि:

कोकटा धोती पटुआ साग।
तीरहुत गीत बड़े अनुराग।
भाव भरल तन तरुणी रूप।
तैंए तँऽ तिरहुत होइछ अनूप।।

अपन माटिसँऽ गुजरियाक एतेक सिनेह जे साग-पात खोंटि लेती, साग-भात खा लेती मुदा रहती मिथिलेमे :

साग-पात खोंटि- खोंटि दिवसों गेमेबए यौ हम मिथिलेमे रहबै
नहि चाही हमरा सुख-आराम यौ हम मिथिलेमे रहबै।।

तिलकोर आ कन्ना साग बिना की मिथिलाक पाहुनक सचार लागि सकैत अछि? चाउरक पीठारमे डुबल शुद्ध सरिसबक तेलमे छानल तिलकोर दुरो देसमे रहनिहार मैथिलक जीभमे पानि आनि दैत अछि।

सजमनि, भाटा इत्यादिमे अदौरी तँ चाहबे करी तखनने भाटा-अदौरिक चहट्गर तरकारी बनत! भाँटाक तरुआ, भटबर आर की-की नहि बनैत अछि। बारिक भाँटातऽ बेर बिपत्तिक समय इज्जत रखइत अछि।

भांटाक भटबर, ठोपेके तेल।
खेलक जमैया ठेलम ठेल।।

लोक खिच्चरिमे सेहो पापर, घी, दही, अचार, चटनी इत्यादि संग खाइत छथि। खिच्चरिमे चारि बस्तु नहितँ केहन खिच्चरि?

खिच्चरि के चार यार।
घी पापर दही अचार।।

इ तऽ भेल पद परन्तु सही अर्थ में खिच्चरिक छौ यार थिक: घी, पापर, दही, अचार, चटनी, तरुआ।

एक उचती गीतमे जखन विवाहक बाद वर भोजन करबा लेल बैसएत छथि तऽ सासु आ आन स्त्रीगन गीतमे व्यंजनक वर्णन करैत छथि:

जाहि दिन राम जनकपुर अयला देखहु दुनिया के लोके
भाँति-भाँति के भोज्य लगाओल नयना बिनु परकारे जी
केरा नारियल खण्ड सोहारी परबल केर तरकारी जी
जीमय बैसला ओ चारू भाई परसथु प्रेम पीयारी जी

दोसर उचतीमे बरकेँ कृष्ण स्वरुप मानि किछु अहि तरहक विवरण भेटैत अछि:

खाजा खुरमा तपत जिलेबी तापर सक्त सुपाड़ी जी
जेमए बैसला कृष्ण-कन्हाई सारि जे पढ़थिन गारि जी

भगबान कृष्णक बालकालक भक्ति गीतमे भोजनक किछु वर्णन भेटैत अछि:

करथि पुकार जशोदा माई मोहन प्रात नाहाई
दही केरा गरम जिलेबी खोआ भोग लगाई

बरियातीक भोजनक समयक प्रचलित 'जेवनार' गीत आब लुप्तप्राय अछि। परंपरा सँऽ ई प्रचलन रहल जे जखन बरियाती भोजन जेमय बैसथि तँऽ हुनक स्वागत जेवनार गीत सँऽ कएल जाए। एहि गीतमे हास्य विनोदक शब्द, स्वर आ प्रस्तुतिसँऽ परिपूर्ण बरियातक भोजन सेहो देखऽ जोग होइत छल। आब ओहन पद सभक गायन लुप्तप्राय अछि। ओहने एकटा 'जेवनार' गीत अछि छ

भोर भए मिथिलापति मंदिर समधी जेमन आयो जी
खोआ के गिलाबा बना के बरफी के इटावा जोरायो जी
इमरती जिलेबी के जँगला लगायो गुलजामुन के खंभा लगायो जी
पापड़ के सखी छवनी छवायो निमकी के फाटक बनायो जी
दही चीनी के चूना पोतायो रचि रचि महल बनायो जी
पूड़ी कचैड़ी बिछौना बिछायो मलपूआ के चनमा टँगायो जी
लड्डू के लटकन लटकायो खाजा के झाड़ लगायो जी
मंदिरमे बइसल समधी जन बाजे आनन्द बधाबा जी
छप्पन भोग बत्तीसो बेअंजन भरि भरि सोने के थारी जी
भोर भए मिथिलापति मंदिर समधी जेमन आयो जी

लोकगीतमे भूख, निर्धनता, कुअन्न आदिक ऐतिहासिक संदर्भक वर्णन

लोकगीत लोकविद्या होइत अछि, लोकइतिहास होइत अछि। एहेन इतिहास जे अपन प्रमाणिकता एवं शैलीक कारण जन-जनक कंठमे लिखा जाइत अछि। एहेन लिखान जकरा ने कुनो पानि गला सकैत अछि ने कुनो आगि जड़ा सकैत अछि आने कुनो कीड़ा खा सकैत अछि। एकबेर जनकंठमे रचि गेल तऽ पीढ़ी-दर-पीढ़ी अबाध गतिसँऽ चलैत रहैत अछि। मधुबनी ज़िलाक शाहपुर गाममक जनमान्ध लोककवि फतुरी लाल एक बेर मिथिलाक भयानक अकालक सामना केलनि आ अकालक विभीषिकाक ह्दयविदारक विवरण अपन कवित्तमे केलनि। ओ रचना अकालकवित्तक नामसँऽ जानल जाइत अछि। अब्राहम ग्रिएर्सन 1887 ईस्वीमे फतुरी लालक अकाल कवित्त हुनके मुहें सुनिकऽ लिखलनि। एहि कवित्तमे विवरण अछि जे भुखमरीक अवस्थामे लोक प्राणरक्षा हेतु की-की नहि करैत अछि। किछु पंक्ति मात्र देखलासँऽ दुखक असीम वेदनाक अनुभूति सहजे भऽ जाइत छैक:

भेल धनतरि दुई फ़ासिल जग-राहड़ि और मकई

अकाल पड़ल तिरहुतिमे भारी-तैं बही गेल हवा

घर-घर मांगन करे नर नारी-फाँकि मकई केर लावा

मालीक आउर महाजन सभ-कै-घर-घर ढेरीक अन्न

लोक बुझओल ओहो तकै छथि मुंह्गा ऋणक शान

सभै देखि बनियान सभ सनकल-डरें लगाओलक टट्टी

सुन्न दोकान शहरमे परि गेल-सुन्न भेल सभ चट्टी

सूखल गात भात भौ लटपट-कतेक बात अब सहना

नर नारी सभ सान तेआगल-बेकारी भेल अब गहना

बारहमासा एवं अन्य गीतमे गरीबीक चित्रण करैत कोना कियोक महिला कम भोजन अथवा कुअन्न खा कऽ दिन खेपैत छथि तकर मर्मस्पर्शी वर्णन कएल गेल अछि। करीब 30-35 सालक इतिहासमे अगर जा सकी आ अपन मानसपटल पर ओहि स्थिति आ गरीबीक ऐनाँक रिफ्लेकशन जकाँ देख पाबी तऽ सहज रूपमे इ अनुमान लगा सकैत छी। बारहमासा एहेनो भेटल जाहिमे एक निर्धन महिला जिनकर पति परदेस गेल छथिन कोन धराने अपन समय नितांत निर्धनतामे बिता रहलि छथि तकर विवरण देल गेल अछि:

पूस गोइठा डाहि तापब
माघ खेसारिक साग यो
फागुन हुनका छिमरि माकरि
चैत खेसारीक दालि यो
बैशाख टिकुला सोहि राखब
जेठ खेरहिक भात यो
अखाढ़ गाड़ा गाड़ि खायब
साओन कटहर कोब यो
भादव हुनको आंठी पखुआ
आसिन मडुआक रोटी यो
कातिक दुख-सुख संगहि खेपब
अगहन दुनू सांझ भात यो

उपरोक्त गीतमे कोना एक महिला खेसारीक साग, खेसारीक दालि आमक टिकुला, खेरहिक उसिना, पाकल आमक गाड़ा, कटहरक कोआ, नेढा, आमक पखुआ, मडुआ रोटी, एक मास अनिश्चितताक स्थिति आ अंतत: अगहनमे भात। कहूतऽ कतेक सत्यक जे आई लगभग इतिहास भऽ चुकल अछि तकरा अपन मानसमे रखने अछि मिथिलाक गीत-नाद।

गरीबीक बिपत्तिसँ मारलि आ असहाय विधवा कंद मूल आ कुअन्न बांसक ओधिसँ अपना टूटल मड़ैयामे नीक जकाँ नीपल-पोतल चुलहामे पका रहल अछि। बांसक ओधि धुआंक घर होइत अछि। फटने ने फटैत अछि। जरने नञ जरैत अछि। ओहने विधवाक दु:खसँऽ द्रवित होइत बाबा "यात्री" लिखैत छथि:

बांसक ओधि उपारि करै छी जारनि...

हमर दिन की नै घुरतै जगतारिनि...

मैथिली लोकगीतमे भोजन विन्यास आ औषधि

लोकगीत लोकविद्या अंग अछि। लोक विद्याक अनेक पक्ष वैज्ञानिक होइत अछि। कृषिकार्य एवं अन्य सब कार्यमे डाक बचन कतेक सटीक अछि से हमरा लोकनि बहुत नीक जकाँ बुझैत छी। बहुतो लोकगीत एहेन अछि जे केहन अन्न अथवा भोज्य सामग्री सेहो कुन दिन, कुन मासमे खेलासँ की भऽ सकैत अछि तकर तथ्यपरक जानकारी दैत अछि। गीत सुनब अथवा पढ़ब तँऽ लागत जेना आयुर्वेदक कोनो वैद्यक देल नुस्खा हो। हरेक गाछ आ हरेक भोज्य सामग्रीमे प्राचीन भारतीय परंपराक अनुसार किछु-ने-किछु औषधिक तत्व छैक। भारतीय परम्परामे औषधि आ भोजन अलग-अलग चीज़ नहि छैक। ताहि अपना सबहक भोजनमे पथ्य आ कुपथ्यक बात प्रबल मानल जाइत अछि।

जखन मिथिलाक गाम सभसँऽ गीतक संकलन करैत रही तऽ एकटा गीत एहेन भेटल जाहिमे ओ ई बतबैत छल जे कोन दिन कथिक प्रयोग भोजनमे करक चाही जाहिसँ तन आ मन दुनू स्वस्थ्य रहत। ई वर्णन ज्योतिष विचार पर सेहो आधारित अछि।

रबिक पान सोमक दर्पण
मंगलक किछु धनियाँ चर्वण
बुधक गुड़ बृहस्पतिक राइ
शुक्र कहए मोहे दही सुहाइ
शनिबार जे अदरख खाइ
कालौं काल कटति घर जाइ

एक आन गीत जे बारहमासा अछिमे सभ मासक वर्णन अछि जाहिमे कुन मासमे कथी खेलासँऽ लोक स्वस्थ्य रहि सकैत अछि:

सावन हरैं, भादो चीता
आश्विन गुड़ खाहू मीता
कार्तिक मूरै अगहन तेल
पूसमे करु दूध सँ मेल
माघमास घी खीचरि खाय
फागुन उठिकै प्रात नहाय
चैत मास जे नीम सेवती
बैशाखहि में खाय बासमती
जेठ मास जो दिन में सोवे
तिनकर ज्वर आषाढ में रोवे

इ त भेल कहिया की खेबाक चाही। एक एहेन गीत भेटल जे बारहमासाक रूपमे रचित भेल अछि। इ एकटा वैद्य जकाँ बहुत वैज्ञानिकताक आधार पर लिखल अछि। गीत अर्थकेँ स्वत: प्रमाणित करैत अछि:

सावनक साग ने भादबक दही
आसिनक ओस ने क़ातिकक मही
अगहनक जीर ने पूसक धनी
माघक मिसरी ने फ़ागुनक चना
चैतक गुड़ ने बैसाखक तेल
ज़ेठक चलब ने अषाढ़क बेल
कहे धनवनतरि अहि सँ बचे
वैद्यराज काहे पुरिया रचे

मैथिली लोकगीत अनंत महासागर अछि। अहि महासागरमे सँ भोजनक सम्बन्धमे जे किछु जानकारी छल से समयसीमाक ध्यान राखि पाठकक समक्ष राखल। नीक लागल तऽ मैथिली लोकगीत परम्पराक महानता अधलाह लागल तखन हमर ज्ञानक विपन्नता। ❒

तथ्यक अपांयर आ भाषाक खेलाड़ी

अरुणाभ सौरभ

'बहुवचन', 'कर्मधारय' केर विस्तार छी। वा आलोचनामे एगो नव हस्तक्षेप। मैथिलीमे लिखनाय एकटा नैतिक जिम्मेदारी बुझैत छथि। नहि त' की हतय एहि निष्काम साधनाक? तैयो ई बुझवामे संशय नहि हेबाक चाही जे मैथिलीमे मौलिक सृजन कतेक कविताक अछि ताहूमे आलोचना आरो कठिनाह। तें जे एकरामे अवैत छथि कें विरल लोक छथि। 'बहुवचन'मे तारानन्द वियोगी आधुनिक मैथिली साहित्यमे नवधारण संदर्भ केर व्याख्या करबाक चेष्टा केलनि अहि। मुदा नवजागरण वला गप्प ओतेक उभरिक' सोझां नहि अबैत अछि।

तारानन्द वियोगी मैथिलीक बहुविधाधर्मी लेखक छथि। कविता लिखबाक काल मैथिली अस्मिता संग-संग मिथिलाक गाम घरक सुच्चा कवि छथि। कथा लिखबा काल हमरा नजरिमे ओ असफल होइत छथि, तथापि कथा आ लघुकथाक एक-एकटा संग्रह हिनकर छनि। 'अतिक्रमण' कथा-संग्रहक किछु कथामे वितान छनि त' कथा-तत्वक अकाल, समस्या छनि त' शिल्पक दुर्बल पक्ष सेहो। यएह समस्या 'शिलालेख' लघु कथा-संग्रहमे सेहो। अछि ओना कही त' ओ कथा मैथिलीमे रिक्त स्थानक पूर्ति करबाक लेल तेहन सन लिखलनि। तें कथा-तत्वमे तेहन सूक्ष्मताक परिचय वियोगी जी नहि देने छथि। हुनकर समुच्चा परिचिति कवि-आलोचक आ आलोचक कविक बनैत अछि।

मैथिली आलोचना केर एकटा प्रस्थान-बिंदु रखबाक सामर्थ्य हुनक दुओ आलोच्य ग्रंथ 'कर्मधारय' (2005) आ 'बहुवचन' (2015) राखैत अछि। तारानन्द वियोगी एही दुओ ग्रंथमे अपन गहींर अध्येता, सूक्ष्म निरीक्षक आ व्यवस्थित मूल्यांकन कर्ता वला तेवरक संग उपस्थित होइत छथि। दस वर्षक गप आ तकरा बीचमे पोनकैत नव-नव रचनाशीलता आ अपन परिपक्व होइत माथक संग हुनक आलोचना-दृष्टिक विस्तार होहू छनि। कर्मधारय सँ बहुवचन केर यात्रा वियोगीजीक सृजनात्मक आलोचना-यात्रा थिक। जतेक नमहर आलोचना-ग्रंथ हिनक छनि से अपन-आकार-प्रकारमे जे छनि, विचार-संस्कृतिमे ओतबे नमहर। तें कही जे मैथिली आलोचना पर कोनो गप्प वियोगी जी पर गप्प कें छोड़ि असंभव अछि।

वियोगीक आलोचना दृष्टिमे परंपराक प्रति एकटा प्रगतिशील आग्रह छनि। ओ प्रगतिशीलता हिनका परंपरा आ जाग्रत चेतस सौंदर्यबोध दिसि झीकैत अछि। मैथिली आलोचनामे अखन जे गहीर गप्प रचबाक सामर्थ्य छनि तकर जड़ि परंपरामे अछि। ओकर जड़ि आचार्य रमानाथ झा सँ डॉ. जयकांत मिश्र, डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', प्रो. आनन्द मिश्र, मोहन भारद्वाज, डॉ. रामदेव झा, प्रो. मायानन्द मिश्र, डॉ. महेन्द्र नारंग राम, रमानन्द झा रमण धरि आ तकरा बीचमे तारानन्द वियोगी परंपरा आ परंपरा कें चिंहबाक प्रगतिशील मूल्य संगे चलैत अछि।

लेखक समाजक सभसं पैघ आलोचक होइत अछि। ताहि अर्थमे हरिमोहन झा मिथिला समाजक सबसं पैघ

संपर्क : जे-23, जैतपुर एक्सटेंशन, पार्ट-1, अर्पण विहार बदरपुर, नई दिल्ली-44, मो. 9871969360

आधुनिक आलोचक छथि। मुदा विधाक रूपें आलोचना मैथिलीक एकटा कमजोर कड़ी रहल अछि। आलोचकक उपस्थिति बड्ड कम रहल अछि आ जे रहल छथि से अपनामे बेछप छथि। हल विद्वता, आलोचना, विवेक आ दृष्टि संपन्नतामे हमरा सबकेँ मिसिया संदेह नहि। तखन उपस्थिति बड्ड कम अछि। आधुनिकताक संग परंपरा पर गप्प करनिहार जे आलोचक छथि जे इतिहासवेता छथि, कवि-कथाकार-उपन्यासकार-बाल साहित्य आदि विविध विधामे अपन हाथ मांजल विद्वान लोकनि छथि। तैयो जे गप्प केलनि से अपन दृष्टि सँ अपन भाषाक रचनाशीलताक उचित मूल्यांकन केलनि। तखन जाहि भाषामे आलोचक कम होइ तकर स्थिति स्वाभावत: दयनीय भ' जाएत। सएह मैथिली संग भेल/एहि भाषामे रचनाक' रंक खगता आ आलोचकक नगण्य उपस्थिति चिंतित करैत अछि।

तारानन्द वियोगी अपन सभटा लेखमे एकटा पैघ चिन्ताक उपस्थिति करैत छथि। समाज, रचना आ आलोचना तीनेक वितान अदभुत! गद्य रचनाक उद्बेग तेहन जे कोनो भारतीय भाषाक आगू हिनक गद्य राखि सकैत छी से बीस नहि पड़त' उनैस सेहो नहि हएत। अपन मैथिली केँ भेटल एगो अद्वितीय लेखक सभ पर गप्प करबा काल विमर्शकारी स्वरूपमे वियोगी अबैत छथि। समकाल आ युवा लेखन सभ पर गप्प करबाक काल सेहो ततबे चिंतनशील। कोनो खास आग्रह, दुराग्रह सँ फराक, कोनो पार्टीबद्ध आलोचना विवेक सँ दूर निच्छछ मैथिल आंखि-पॉखि राखनिहार समग्र लेखक रूपमे हिनक उपस्थिति उभरैत अछि। माने ई भेल जे हिनकामे आलोचना दृष्टि जतने सापेक्ष छनि, पाठकेर प्रति आग्रह सेहो ओतने सोझ। पाठ-कें पाठ्य-सामग्रीक आधार पर, आ विचार केँ वस्तुनिष्ठ ढंग सँ सोझा रखबामे वियोगी सर्वथा सामर्थ्यवान आलोचक छथि।

वियोगी जीक पहिल आलोचना पोथी 'कर्मधारय' पांच खंडमें बंटल अछि। हिनक मूल चिंतन धारो यात्री जी छथि। ओ यात्री जी सँ मूलवर्ती आस्था ग्रहण करैत छथि। तकर कारण यात्री जीक शिष्यत्वमे बड्ड रास समय बितेबाक अनुभव छनि। तैयो वियोगी मैथिली साहित्यक समस्त पहलू पर गप्प करबा काल एकदम तटस्थ रहैत छथि। एहन वृहद आलोचना ग्रंथ छपेबाक साहसि मैथिलीमे बड्ड कम लोक लग अछि। विविध साहित्यक वस्तु आ व्यक्ति पर लिखैत रहलाह अछि। ओहि लेख सबहक दू टा बृहद जिल्दमे सोझां अनबाक जिद केर नाम थिक- 'कर्मधाराय' आ 'बहुवचन'। 'कर्मधारय' आ 'बहुवचन' दुओ पोथीक लेख सभ केँ एक्के बेर पढ़ला सँ ई एकटा समग्र पोथी बनैत अछि।

मैथिलीक आलोच्य जगत केँ वियोगी सन लेखक उपहारमे भेटल अछि। अय दुओ आलोचना पोथी (बृहदाकार-वस्तुनिष्ठ) केँ भारतीय भाषाक कोनो श्रेष्ठ आलोचना (समकालीन आलोचना पोथी) संग ठाढ़ क' सकैत छी। सूत्रात्मकतामे वियोगी पाकल पंडित बुझबैत छथि आ व्यावहारिक आलोचनाक आगमन-निगमन निधि सँ आगूक गप्प करैत छथि। 'कर्मधारय' पोथीक पहिल खंड छी - 'शताब्दीक सूत्रधार'। बीसम शताब्दीक चारि गोट लेखक जे सुचितावादी आ वर्ण शुद्धतावादी मैथिल समाज केँ सर्वाधिक परेशान कयलथिन से छलाह -यात्री जी, हरिमोहन झा, किरण जी आ राजकमल चौधरी। ई चारू गोटेक मौलिक क्रांतिकारी अवधारण ाा सँ बीसम शताब्दीक मिथिला समाजक प्रतिबिम्ब उपस्थित होइत अछि। वियोगी जी लिखने छथि-

''हिनका लोकनिक उपस्थिति आ हस्तक्षेपक आहट एहि शताब्दीक समुच्चा परिदृश्य पर चिन्हित देखल जा सकैए। एकटा विशाल परम्परा प्रकाशमे आयल- भावना केँ विचारक संग मिला क' देखबाक परंपरा।

आइ जं मैथिली साहित्य एहि स्थितिमे अछि जे एकटा कोनहु दोसर भारतीय साहित्यक समक्ष राखल जा सकैए तें ई एही नवीन परंपरा आ तकर विकासक अवदान थिक।'' छह गोट अलग-अलग आलेखमे वियोगी अपन प्रगतिशील आलोचना दृष्टि संग एही मूल्यांकन केँ मजबूत आधार दैत छथि। प्राय: नीक आ गंभीर आलोचक केँ अपन एकटा प्रिय कवि होइत अछि। जे हुनकर आलोचना दृष्टि निर्माणमे केन्द्रीय भूमिका निभहैत अछि। वियोगी जीक 'यात्री बाबा' एहने प्रिय कवि छथि। प्रगतिशील आलोचक तेवर केँ वियोगी नीक सँ चीन्हैत छथि आ ओकरामे रचब, खपब आ रमब तीनू बुझैत छथि। इएह कारण अछि जे सर्वथा प्रगतिशील हथियार संग ओ पाठ केर संग निसाफ करैत छथि। तागत, अध्ययन आ चिन्तनक जे प्रगतिशील भाषा परंपरा अछि तकरामे रमल दृष्टि संग पाठ आ पुनर्पाठ फेर ओकर व्याख्यामे बेसी सँ बेसी ऊर्जा लगबैत छथि। ओ जतबे नीक सँ यात्री जीक वैचारिकता पर गप्प करैत छथि ओतबे गंहीर गप्प हरिमोहन झा पर सेहो। ई चिन्ता राखैत जे - हरिमोहन झाक परम्पराक विकास किए नहि भेल?' ई प्रश्न सभटा मैथिल समाजक आगू तहिना ठाढ़ अछि आइयो। तथापि किछु गप्प सँ असहमति हएब स्वाभाविको। किछु गप्प अनसोहांत लागि जायत सेहो। तैयो ई कहब सर्वथा उपयुक्त अछि जे मैथिलीक प्रगतिशील आलोचना केँ तारानन्द वियोगी समग्र भारतीय पहिचान हैत छथि। 'कर्मधारय' पोथीक लेख सभ केँ किछु नाम बदलि आ किछु यथावत सेहो 'बहुवचन'मे राखि लेने छथि, जे कैकटा आपत्ति उठाएल जा सकैछ। जेना जे लेख कर्मधारयमे प्रियमान सभ्यतामे

जीवनेच्छांक, अभीव्सा शीर्षक सँ छपल अछि ओ हुबहू वैह लेख 'मरणमुख सभ्यतामे चेतनाक प्रश्न शीर्षक से ओकर पहिल खंड आ ओकरामे नवगप्प जोड़ि दोसर खंड सेहो। शताब्दीक सूत्रधार शीर्षक पहिल खण्डमे छह गोट आलेख अछि– 'चर हे भिक्खव बहुजनहिताय', 'यात्री जीक वैचारिक', तत्वचिंतक महानायक', 'प्रियमाण सभ्यता मे', 'जीवनेच्छाक अभीप्सा', 'हरिमोहन झाक परंपराक विकास किए नहि भेल' आ किरण जीक महत्व'।

दोसर खण्ड अछि समय-साक्षी जकरामे कविवर सीताराम झा, किसुन जीक आलोचना दृष्टि, जीवकान्तक सृजन-प्रक्रिया आ मानस लोक, धुमकेतुक साहित्य किछु टिप्पणी, प्रभास कुमार चौधरी, व्यक्ति-चित्र, कुलानन्द मिश्र, विचार सँ दीप्त व्यक्तित्व' छह गोट आलेख अछि। सीताराम झा सँ कुलानन्द मिश्र धरि अबैत मैथिली साहित्य कतबा, की देखलक तकरा सबहक समुच्चा लेखा-जोखा एत' नीक सँ भेटल। तेसर अध्याय अछि 'कथा-साहित्य: परिदृश्य' शीर्षक सं। ई अध्याय 14 छोट-पैघ उपशीर्षकमे बांटल अछि। मैथिली कथाक विविध वरूप, वर्गीकरण, आ समस्त कथा-यात्रा कें एकसूत्रमे बन्हबाक व्यापक परियोजना एहिठाम भेटाएत अछि। विद्यापतिक आत्मकथा आ मैथिली अन्यास पर सेहो विश्लेषण गंभीर रूपें कएल गेल अछि। मैथिलीक समकालीन कविताक विविध स्वरूप कें वियोगी बुटिया क पकड़ैत छथि। समकालीन कविता शीर्षक अध्याय तीन उपशीर्षक आलेख संगे अछि– समकालीन कविताक पृष्ठभूमि, समकालीन कविता आ नवकविक स्वागत'। ई तीनूटा आलेख समकालीन कविता कें नीक सँ बुझबाक चेष्टा अछि। चतुर्दिक शीर्षक अंतिम खण्ड वा अध्यायमे छह गोट आलेख अछि – विद्यापति आ देसिल बयनाक अवधारणा' अनुदित मैथिली साहित्यक गद्य, गद्यक स्तर आ समकालीन लेखन, मैथिली पत्रकारिता : सम्मोहन सँ बहयबाक बेगरता, मैथिली परिक्षक दायित्व', समकालीन मिथिला पर एक दृष्टि'।

ई समुच्चा पोथी मैथिलिये टा नहि, भारतीय आलेखमे एकटा नीक स्थिति बनवैत अछि। मैथिली आलोचनाक कैनन निर्धारणमे तारानन्द वियोगी एकटा स्थान रखैत अछि। कने व्यवस्थित स्वरूपमे पोथी खटकत। ई आलेख सबहक संग्रह छी जकरा अलग-अलग समय, मूड आ खरा संग लिखल गेल अछि। तथापि पोथीक प्रस्तुतीकरणक तरीका रामविलास शर्मा वला अछि। ओना पढ़ने त' छथिये वियोगी आ से रचल, गुनल सेहो छनि तें आलोचना कें अपन जिम्मेदारी बुझैत छथि।

'बहुवचन', 'कर्मधारय' केर विस्तार छी। वा आलोचनामे एगो नव हस्तक्षेप। मैथिलीमे लिखनाय एकटा नैतिक जिम्मेदारी बुझैत छथि। नहि त' की हतय एहि निष्काम साधनाक? तैयो ई बुझवामे संशय नहि हेबाक चाही जे मैथिलीमे मौलिक सृजन कतेक कविताक अछि ताहूमे आलोचना आरो कठिनाह। तें जे एकरामे अवैत छथि कें विरल लोक छथि। 'बहुवचन'मे तारानन्द वियोगी आधुनिक मैथिली साहित्यमे नवधारण संदर्भ केर व्याख्या करबाक चेष्टा केलनि अहि। मुदा नवजागरण वला गप्प ओतेक उभरिक' सोझां नहि अबैत अछि। जतेक अन्यान्य गप्प-शप्प सभ। हरिमोहन झा पर लिखल लेख सभ तरह अछि जे कर्मधारय'मे आबि गेल अछि ओकरे दोहराइति वा विस्तार क' एहिठाम आनि लेबाक हुनक चेष्टा छनि। मात्र एक टा लेख 'नवधारण आ मैथिली जागरण' तथा 'मिथिलामे नवजागरणक किछु संदर्भ' नवधारण पर मूलत: केंद्रित अछि। तकरा बाद 'आधुनिकता आ चन्दा झा', 'जीवन झाक भाषा चेतना' सब आलेख अछि। 'नवजागरण आ हरिमोहन झाक साहित्य' कर्मधारयमे आबि चुकल अछि – ओकरामे एक खण्ड आओर जोड़ि अतीत कें देखवाक हुनर नीक आलेख बनल अछि। लोक साहित्य आ दलित साहित्य शीर्षक लेख कैकटा प्रश्न उठबैत अछि, समाधानक रस्ता तय करैत अछि। 'आदिकालीन मैथिली साहित्यक प्रवृति', तकरा बाद 'स्वातंत्र्योत्तर मैथिली कथाक परिदृश्य' आ फेर मैथिली उपन्यास आ राजनीतिक विचारधारा। तकरा बाद मैथिली कविताक वर्तमान। तारानन्द वियोगी अपन पोथी कें अव्यवस्थित अंदाज दैत छथि। जेना आदिकालीन विषय वस्तु कें एकठाम रहबाक चाही, कथा पर लिखल लेख एकठाम। कविता पर एकठाम। आलोचना पर एकठाम। से क्रमबद्ध करबाक परिपाटी तोड़ि दएमे हिनक मोन लागै छनि। ई हिनक मजबूती, तागत आ कमजोरी सेहो छनि। कोनो आलोचना पोथीक डिजायनमे जे अनुक्रमक व्यवस्थित स्वरूप हेबाक चाही तकर सर्वथा अभाव एत खटकैत अछि। आब अगिला पोथीमे ओ एही पक्ष पर ध्यान दैथ त' सेहो नीक रहत।

युवा मित्र तक पर लिखैत छथि। बहुवचन 2015मे अछि। या एकैसम शताब्दीक जुआन देबाक क्रममे अछि। कतेको युवा लेखक 2000 ई. क बाद लिखनाय शुरू केलाह। कतेको लेखक एहि बीच एकाध जकर जिक्र एही पोथी सँ गायब अछि। एहू सभ लेख अगिला पोथीक इंतजार रहत। हमर पीढ़ीक कवि कथाकार लोकनि जे मजबूती सँ बढ़ल छथि तकर नोटिसक अभाव अनसोहात लगैत अछि। बहुवचन अपडेट नहि अछि। रमानाथ बाबू, किरण जी, यात्री जी, बलराम जी, रामदेव बाबू, प्रभास बाबू, जीवकान्त बाबू, सुभाष बाबू,

महाप्रकाश जी, हरेकृष्ण जी, अशोक जी, सुस्मिता जी, गौरीनाथ जी, रमेश रंजन जी सभ विभिन्न खाढ़ीक उत्कृष्ट लेखक लोकनि पर खूब मोन सँ कलम चलेलनि अछि। स्थापना आ विमर्श संग-संग ठाढ़ करैत। डॉ. रामदेव झा मैथिली भाषा साहित्य केर बेछप चिंतक छथि। हुनक आलोचक रूप बेसी चिन्हार भेल छनि। कथाकार रूपमे रामदेव बाबू 'आजीमां' सब अद्‌भुत कथा लिखलनि आ एक खीरा तीन फांक सब उत्कृष्ट उपन्यास - तैयो हुनकर कथाकारक पक्ष केँ वियोगी नीक जकां चिन्हलनि अछि। महाप्रकाश जी, हरेकृष्ण झा सब महत्वपूर्ण कवि, रमेश रंजन जे नेपालक मैथिली कविताक प्राण छथि हुनका सभ पर मनोयोग पूर्वक लिखलनि। आओर कतेको बात जे खटकल जेना माया बाबू, भाइ साहेब (राजामोहन झा), उदय नारायण सिंह नचिकेता, उषा किरण खान, तहियो सँ पूर्व प्रबोध नारायण सिंह (प्रबोध बाबू) लिली रे, आशा मिश्रा, नीता झा, ज्योत्सना चन्द्रम आदि पर हिनक कलम किएक नहि चललनि। देवशंकर नवीन महेन्द्र ना. राम, भोला पासवान 'शास्त्री' आदि लेखक आकि कुणाल, अग्निपुष्प, शुकान्त सोम सभ कवि पर कोनो गप्प नहि। स्त्री लेखन पर ठोस चर्च नहि अछि।

नाटक पर कोना गप्प नहि केलनि अछि। ई सभटा कमियो केँ पोथी संग पढ़बाक चाही। ओना जे भेल अछि से आ जतभे आएल से विलक्षण कएक अर्थमे अछि।

तारानन्द वियोगीक आलोचना केँ भाषाक बहुत मजबूत पक्ष अबैत अछि। गद्यमे जतने विश्लेषणपरकता आ गंभीरता हेबाक चाही तारानन्द वियोगी ओकरा नापि-जोखि क' गप्प कहैत छथि। भाषामे प्रवाह आ विलक्षण ाता दुओ छनि। 'तुमि चिर सारथी' यात्री-नागार्जुन पर लिखल एकटा एहन संस्मरण अछि जकरा भारतीय भाषाक क्लासिकल संस्मरण श्रेणीमे राखल जा सकैछ। रूप आ अन्तर्वस्तु दुओ धरातल पर हिनक गद्य कवित्त विवेक सँ भरल रहैत छनि। ओएह वियोगी केँ एकटा समग्र सामर्थ्यवान आलोचक बनबैत छनि। संस्मरण आ कथेतर गद्य केर शृंखलामे तुमि चिर सारथी अद्‌भुत कृति अछि।

वियोगी जी अपन प्रयोग भाषामे बेसी सँ बेसी करैत छथि। से भाषामे ओ तथ्यात्मकता सँ एक्को मिसिया भटकै नहि छथि। ईहो नहि जे भाषा सँ खेलौड़ करैत छथि। तखन ई कहब अतिशयोक्ति नहि जे तारानन्द वियोगी भाषाक खेलाड़ी आ तथ्यक अंपायर छथि। भाषामे बैटिंग करबा काल ई हर गेंद पर लॉग शॉट लगेबाक इच्छा रखैत छथि आ तथ्यमे एकदमे सुय्या अंपायर जकां आंगुर भांजैत छथि। एहन भाषाक बैट्समैनक जरूरति मैथिली क्रीज पर सभ दिन रहलै अछि। से तकरा जे लोकनि पूर केँलनि ओहिमे वियोगी जी केँ राखि सकै छी। आलोचनाक एकटा ठस्सा आ निचाट गद्य वला बोरिंग बैट्समैन आ सस्तामे आउट होमय वला खेलाड़ी सँ मैथिलीक पाठक (दर्शक) स्टेडियम बैंस क' हक्कन कनैत छलाह।

रूप आ अन्तर्वस्तु संग पूर्णतः निसाफ करबाक योग्यता वियोगीमे भरल छनि। कर्मधारय आ बहुवचन पढ़लाक बाद आ तुभि चिर सारथी पढ़ालक बाद वियोगी केँ अहां हिनकर पीढ़ीक भारतीय भाषाक कोनो आलोचक संग ठाढ़ करब तखन बड्ड बेजारू गप्प नहि होयत।

बहुलार्थ तत्वक प्रधानता हिनकर आलोचना दृष्टिक सभ सँ पैघ विशेषता अछि। मैथिलीक ओ सभटा आलोचक जिनक उपस्थिति अय छोट-छीन भाषाक थाती मजगूत करैत अछि, सभ लेखक पर गप्प करबाक काल वियोगी जी बहुलता केँ ध्यानमे अपन पोथी सभमे रखने छथि। भाषिक बहुलता आ वाचिकता दुओक प्रति ई साकांक्ष भाव वियोगी जीक आलोचनात्मक तागत अछि। कखनो काल क्रांतिकारी भाव, ओकर अभिव्यक्ति, कखनो नवमूल्यांकन परक दृष्टि, कखनो आत्मसात करबाक प्रवृत्ति वियोगी जी केँ अर्थवती बनवैत अछि। ओहि नवमूल्यांकन वा पुनर्मूल्यांकन केँ ओ प्रगतिशील विवेक आ जाग्रत चेतस सौंदर्यबोध सँ पुष्ट करैत छथि।

तारानन्द वियोगी सैद्धांतिक गप्प केँ सोझरेबाक चेष्टा करैत छथि। सैद्धांतिक निर्मिति केँ अन्हार सँ फड़िच्छ दिस अनबाक लेल व्याकुल रहैत छथि। मैथिली आलोचना पर पड़ल धूरा-गरदा झाड़बाक लेल प्रयत्न करैत छथि। विषय चुनबामे आ तकरा संग उचित गप्प करबामे ओ निधोख रहैत छथि। भाषा प्रयोग आ शब्दावली चयनमे सर्वथा साकांक्ष।

कविता करबाक काल निच्छछ कवि आ गद्य लिखै काल एहन सम्हरल गद्यकार मैथिली केँ कम भेटल अछि। सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्यमे एहन सम्हरल गप्प करबामे आलोचना एहन शुष्क विधामे सुरुचि उत्पन्न करैत छथि। तथापि आलोचनाक दोसर पोथी 'बहुवचन'मे एकटा पैघ कमी अछि। एक्के लेख 'कर्मधारय'मे छपल ओकरे 'बहुवचन'मे दोहरेनाय कतेक उचित? कने नाम बदलि क' आ ओकरे असारि-पसारि क' फेंट सिद्धांत सेहो बेर-बेर दोहराबै छथि। पैरा-पैरा 'कर्मधारय' पोथी सँ उठा क' 'बहुवचन'मे फिट केने छथि। ओना पोथी अहींक, से जे करी? हं कतेक ठाम इहो केने छथि जे पुरना लेख केँ विस्तार देने छथि आ तकरा पैघ केने छथि। एतनाक बावजूदो ई कहल जा सकैछ जे वियोगी जी अपन आलोचना दृष्टिमे बेजोड़ छथि। ❐

इतिहासक हत्यासं व्यथित एक उर्ज्जस्वल व्यक्तित्व

डॉ. भवनाथ झा

अपन मौलिक परम्परा, धर्म, इतिहास, संस्कृति आ संस्कृत-साहित्यकें सुरक्षित रखबाक उत्साहसं भरल व्यक्तित्व डॉ. वियोगी सँ घंटाक-घंटा बैसि कए आर्यमंजु श्रीमूलकल्प, शंकरदिग्विजय, ब्रह्मसिद्धि आदि संस्कृत-ग्रंथ सभ पर चर्चा कएने छी। एखनि हिनका बहुत काज करबाक छनि। मां उग्रतारासं प्रार्थना जे हिनका एहने उर्ज्जस्वल बनओने रहथिन।

डॉ. तारानन्द वियोगी जं एक दिस मैथिलीमे कविता लिखलानि, कथा लिखलनि, आलोचना लिखलनि तं दोसर दिस मिथिलाक संस्कृति, इतिहास आ धार्मिक परम्पराकें सुरक्षित रखबाक लेल अपन संस्कृत भाषाक ज्ञान केँ मुखर बनाए लिखैत रहलाह अछि।

डॉ. वियोगी मूलत: संस्कृत भाषा ओ साहित्यिक अध्येता रहलाह। ई संस्कृतक पारम्परिक शिक्षा पद्धतिसं साहित्याचार्य कएने छथि। महिषीक उग्रतारा थानमे हिनक जन्म होएबाक कारणें स्वाभाविक रूपसं ओकर इतिहास आ परम्पराक अन्वेषण हिनका लेल महत्वपूर्ण रहल। संगहि अपन गाममे मण्डन मिश्रक संबंधमे किंवदंती सभ सेहो सुनैत रहलाह। ई दुनू विषय हिनका लेल बड़ महत्वपूर्ण रहल। एक दिस संस्कृत अध्येता रहलाक कारणें मूलग्रंथक सेहो अवगति रहलनि तं दोसर दिस ओहि मूलग्रंथक भावनाक संग परस्पर विरुद्ध किंवदंती सुनैत-सुनैत हृदय सेहो व्यथित होइत रहलनि आ तें उग्रतारा आ मण्डन मिश्र एहि दुनूक इतिहास पर ई एखन धरि जे काज कएने छथि ओ महत्वपूर्ण अछि।

हमरा ओहिना मोन अछि जे एक बेर पुरातत्व विभागक दिससं डॉ. फणीकांत मिश्र उग्रतारा स्थानमे मण्डन मिश्र पर समारोह आयोजित कएने रहथि। ओहिम पटनासं हमहूं आमंत्रित रही। राति करीब 12 बजे हम सहरसा स्टेशनसं हिनकहि पठाओल वाहन सँ महिषी पहुंचलहुं। ई हमर प्रतीक्षामे व्यग्र भेल जागल रहथि। बीच-बीचमे कतेको बेर फोन पर संवाद भेल रहए। ओहिबेर हिनक घर पर हिनक स्नेहिल आतिथ्य सत्कार देखल। अगिला दिन कमसं कम दू घंटा धरि मण्डन मिश्रक संदर्भमे सत्यकें नुकाओल जाइत देखि ई अपन व्यथा सुनौलनि। कार्यक्रम तं पुर्वनियोजित उद्देश्य रहैक जे मण्डन मिश्रकें सुरेश्वराचार्यक जन्मस्थान मानि एहि गामक विकास (प्राय: एकटा अस्पतालक प्रलोभन रहैक) कएल जाए। विकासक नाम पर ग्रामीण लोकनि उत्साहित रहथि। गृहस्थ ग्रामीणलोकनि गेरुआ रंगक चद्दरि ओढ़ि अपनाकें धन्य बूझि रहल छलाह। मुदा डॉ. वियोगीजी इतिहासक हत्या कए, किंवदन्तीक जोर पर गामक विकास करबाक पक्षधर नहि छलाह। सम्पूर्ण सभामे हम दुइये गोटे रही जे मण्डन मिश्रक द्वारा शास्त्रार्थक

संपर्क : हटाढ़ रुपौली, झंझारपुर, मधुबनी

बाद संन्यास ग्रहण करबाक विरोध कएने रही। हम जखनि चित्सुखाचार्यक पंक्ति उद्धृत करैत मण्डन आ सुरेश्वरक पार्थक्यक प्रसंग उठाओल तं मंचस्थ विद्वानो सभ हल्ला कएने रहथि। बादमे जखनि डॉ. वियोगी विभिन्न उदाहरण ाक द्वारा माधवार्यक शंकरदिग्विजयमे उल्लिखित तथ्य सभक खण्डन करैत रहथि तं हिनका अपन ग्रामीणक पूर्ण विरोध सहए पड़लनि। मुदा ओ इतिहासक हत्या कएनिहारक संग नहि देलनि।

डॉ. वियोगी सत्यकें अंधकारमे पड़ल देखि व्यथित छथि। हुनक ई व्यथा-कथा हुनकहि शब्दमे एना एछि–

'सभटा सत्य उद्घाटित भेलाक बादो, आइयो, मण्डन मिश्रक वास्तविक परिचय अंधकारमे नुकाएल अछि। शांकर मठ द्वारा प्रचारित असत्य कण-कणमे व्याप्त छैक। बड़का-बड़का पंडितो, एखनो, शास्त्रार्थ आ संन्यास बला ओहि खिस्साकें निर्लज्जतापूर्वक दोहरा रहल अछि। जे सत्यकें जनितो छथि, हुनको, एकरा स्वीकार करबामे 'धक्का' लगैत छनि आ आस्था आहत होइत छनि! ई कोन धर्म भेल? शांकरमठ (तात्पर्य 'शंकर दिग्विजय') सँ झूठो बाजल तं ताहि पर पंडित लोकनिकें ततेक आस्था जे शास्त्र इतिहास आ शोधक समस्त निष्कर्ष निघेंस भ' गेल! ई कोन युगमे जीबि रहल छी हम सभ? की एहिना, एहि तरहें सनातन धर्मक रक्षा भए सकत?' (पंडित सहदेव झा स्मृति-ग्रंथ, पृ.-102)

एही व्यथासं भरल डॉ. वियोगी मण्डन मिश्रक मूलग्रंथ आ ओकर मैथिल परम्पराक अन्वेषण कएलनि। एही अन्वेषणक क्रममे हिनका भेटलथिन ठाढ़ीक निवासी पंडित सहदेव झा। 20म शतीक उत्तरार्द्धक दुर्धर्ष मैथिल दार्शनिक हिनका लेल 'पंथक पाकड़ि' भेलाह, जनिक छत्रछायामे ई मण्डन मिश्र पर बहुत काज कए सकलाह। पं. सहदेव झाकें ई मण्डन, वाचस्पति संग ओही परम्पराक वाहक विद्वानक रूपमे देखलनि आ हुनकासं 'मण्डन मिश्र और उनका अद्वैत वेदान्त' लिखओलनि आ ओकर संपादन कए सुधी समाजक सोझां रखलनि। एहि लेखनक क्रममे भलें पांच वर्षक अवधि लागल हो, मुदा ई ग्रंथ सत्यकें प्रकट करबाक लेल सक्षम रहल।

मुदा 1999 ई.मे पं. सहदेव झाक ग्रंथ प्रकाशित भेलाक बादो उग्रतारा महोत्सव आदिक अवसर पर परिणाम पूर्ववते रहलाक कारणें डॉ. वियोगी दुखिये छथि आ सत्यक स्थापनाक लेल संघर्षरते छथि। ई हुनक सत्यनिष्ठा प्रशंसनीय अछि।

एहिना उग्रतारा स्थानक इतिहास पर ई नीक काज कएने छथि। हिनक पुस्तक 'महिषी की तारा और आख्यान' हमरा सोझां अछि। तीन अध्यायमे विभक्त एहि ग्रंथक पहिल अध्याय विशुद्ध इतिहास थीक, जाहिमे बुद्धकालसं 18म शती धरिक महिषीक इतिहास लिखल गेल अछि, जकर साक्ष्यक रूपमे पालि, बौद्ध-साहित्य, शिलालेख, पुरातत्व, पंजी-प्रबंध, जनश्रुति सभक उपयोग कएने छथि। सभसं विशेष बात जे जतए ई निष्कर्ष निकालबामे ओझराए गेल अछि। ओतए प्रश्नचिन्ह ठाढ़ कए चुप भए जाइत छथि। ई स्वभाव स्वागतयोग्य अछि। उग्रताराक मूर्तिविज्ञान पर सेहो एहि ग्रंथमे पर्याप्त सामग्री अछि। तारा उपासनाक तांत्रिक परम्पराक विवेंचनाक लेल जाहि प्रकार अध्ययनक अपेक्षा छैक ताहिमे हिनक संस्कृत भाषाक ज्ञान पाथेय रहलनि आ तें उद्धरणकें स्पष्ट राखि ओहिसं उचित निष्कर्ष निकालबामे ई सक्षम रहलाह।

इतिहास आ पुरातत्वक प्रति हिनक स्नेहक एकटा घटना मोन पड़ैत अछि। 2010 ई.मे ई जखनि कैमूर जिलामे पदस्थापित रहथि तं हमरा मुण्डेश्वरी मंदिर पर पुस्तकक संपादनक क्रममे किछु पुरातात्विक अवशेषक अवलोकन करबाक आवश्यकता भेल। हम पटनासं गेलहुं, आ राति भभुआमे हिनके आवास पर रहि 21 फरवरी, रवि दिन हिनका संग मुण्डेश्वरीक लेल विदा भेलहुं। ओतए भरिदिन हमरा लोकनि विभिन्न सामग्री देखलहुं। पहाड़ पर ऊपर-नीचां चढ़ैत-उतरैत हिनकामे थाकनि नहि देखलियनि, ई सत्य खोजक प्रति हिनक उत्साह छल। ओतए एकटा जिहबीमाइक गुफा छैक, दुर्गम स्थान अछि। एकटा स्थानीय युवक संग भेलाह। गुफा धरि जेबाक लेल पहाड़क चोटी पर सँ करीब 100 फीट उतरए पड़ैत छैक, जाहिमे रास्ता बनल नै रहै। हिनक शरीरक लंबाई कम रहलाक कारणें दू-तीन ठाम उतरबामे असुविधा सेहो भेलनि, तकर बादो हमरालोकनि गुफा धरि पहुंचलहुं। ओतए ई सुंदर फोटोग्राफी कएलनि। थाकनिक बादो हिनक ओ प्रसन्न मुद्रा एखनहुं मोन अछि। भगवतीसं प्रार्थना जे सदिखन ओ ओहने प्रसन्न रहथु।

अपन मौलिक परम्परा, धर्म, इतिहास, संस्कृति आ संस्कृत-साहित्यकें सुरक्षित रखबाक उत्साहसं भरल व्यक्तित्व डॉ. वियोगी सँ घंटाक-घंटा बैसि कए आर्यमंजु श्रीमूलकल्प, शंकरदिग्विजय, ब्रह्मसिद्धि आदि संस्कृत-ग्रंथ सभ पर चर्चा कएने छी। एखनि हिनका बहुत काज करबाक छनि। मां उग्रतारासं प्रार्थना जे हिनका एहने उर्ज्जस्वल बनओने रहथिन। ❐

राजकमल चौधरीक मैथिली-कथामे स्त्री-चरित्रक विश्लेषण

धर्मव्रत चौधरी

राजकमल चौधरीक मैथिली कथा साहित्यमे विधवाक संग-संग आरो स्त्री-चरित्र केर यथार्थ चित्रण भेल छल। समुद्र'क दयामशी, कोंपलक चमेला, सती धनुकाइनक सती, घड़ीक जहूरनी, कमलामुखी बहुक, कमलमुखी, खरीद बिक्रीक शरणार्थिनी, जहएक, शकुन, पनडुब्बीक कादम ई सब पात्र विधवा नै थिनीह मुदा तैयो हिनकर जीवन परम कष्टकारी छल। स्त्रीक सौंसे जीवन अपना में बढ़िया सिद्ध करैमे बीत जाइत छल।

राजकमल चौधरी हिन्दी आ मैथिलीक सर्वाधिक विवादास्पद लेखक मानल गेल अछि। आ एकर सबसं पैघ कारण ई जे ओ अपन साहित्यमे एहन जनानी कें प्रतिष्ठित कैलखिन जे देहि बेचि कें अपन गुजर-बसर करबाक लेल अभिशप्त छल। जै जनानीकें देहे टा सम्पति अछि, ओकरा दू टा रोटीक खातिर देह बेचबाक अलाबे आर कोनो उपाय नहि। आ दमयन्ती सन जुआन छौड़ी कें त देह रहलाक बादो भूखल सुतइ पड़ैत अछि। राजकमल चौधरीक मैथिली काहानी आ उपन्यासक स्त्री-पात्र मजबूर छथि आ राजकमल चौधरी स्त्रीक एहि अवस्थाक लेल पुरुष सभ कें जिम्मेदार मानैत अछि, तें राजकमल चौधरी संभसं पैघ विवादास्पद लेखक मानल गेल। किएक तं राजकमल कथा साहित्यक प्रकाशनक बाद मैथिल समाज नीक जकां देखार भऽ गेल। समाज अपन गलती किएक देखत। ऐ सँ तं नीक जे लेखक कँ बदनाम कऽ दियौ। राजकमल चौधरी संग सैह भेल।

राजकमल चौधरी मैथिलीमे अग्रिम पंक्तिक लेखक मानल गेल अछि। ओना तं ओ मैथिलीमे कनि कम लिखने छथि। हिन्दीमे बेसी लिखने छथि। मुदा मैथिलीमे जतबे लिखने छथि, ओहिमे स्त्री, विभिन्न चारित्रिक रूपमे उपस्थित छलीह। विधवा-जीवनक संघर्ष आ देह बेचऽ बाली स्त्री सभक चित्रण हिनकर मैथिली कथा साहित्यक केन्द्रमे छनि। हिनकर मैथिली कथा साहित्यमे पारंपरिक स्त्री सेहो उपस्थित छलीह। माय कँ रूप मे। बेटी आ बहिन कँ रूप मे। भौजी आ भाभीक रूपमे सेहो।

राजकमल चौधरी रचनावली खंड-4, कँ भूमिका (लोकायन की प्रति-छवि) मे देवशंकर नवीन लिखने छथि- ''नारी जीवनके जितने रूप राजकमल चौधरी की मैथिली कहानियोंमे दर्ज है, उतना मैथिली तो क्या, किसी भी आधुनिक भारतीय भाषामे दिखना दुर्लभ है। वस्तुत: हमारा समाज जिस तरह की व्यवस्था में जीता आ रहा है, वह किसी हिसाब से मानवोचित नहीं है।'' आर-आर भाषा कँ तं नै पता मुद्दा मैथिलीमे राजकमल चौधरी सरिपहुं स्त्रीक विभिन्न रूपक चित्रण केलनि अछि। बेबस, लाचार, विधवा आ वेश्या सबहक यथार्थपरक चित्रण करबाक खातिर हुनका पर अश्लीलताक आरोप लागलनि। स्त्री समाजक दारूण कथाक चित्रणक क्रममे ओ स्त्री कँ विधवा आ वेश्या बना कँ राखबाक लेल मर्दवादी समाजक भूमिका कँ सेहो रेखांकित कयलनि। हुनकर मानब छनि जे स्त्री कँ विधवा आ वेश्या बना क' नरक सन जिंनगी चाहे ओ वृद्धा मां, दादी, नानी, भाभी, मौसी, काकी हो; जवान-प्रौढ़ा पत्नी, भौजाई, बहन, अनुज वधु हो; परिवार की अकाल-दुष्काल विधवा हो, दाई, नौकरी हो; या रखैल,

संपर्क *: शोधार्थी, हिन्दी विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया,*
नई दिल्ली, मो. 7982948955

प्रेमिका हो – सभी केँ प्रतिपालक पुरुष रहे हैं, जो इन्हें अन्न-वस्त्र, सुरक्षा देकर इनके तन-मन स्वाभिमान पर राज करते रहे हैं। निष्ठा, सुरक्षा, प्रतिपाल और सामाजिक केँ इस घोषित आवरण तले कितने अघोषित अनाचारों को मान्यता मिली हुई थी- इसका सर्वेक्षण करना लेखकों का ही दायित्व था, राजकमल चौधरी ने इस दायित्व का निर्वाह बड़ी निष्ठा से किया।''

मर्दवादी समाजमे स्त्री केँ एकटा वस्तु बुझल जाइत अछि – भोगक वस्तु। राजकमल चौधरी अपन कथा साहित्यक माध्यम सँ एहि मनोवृत्ति पर कसि केँ चोट केने छथिन्ह। एहि मर्दवादी समाजमे जतेक संख्या अछि सबटा पर मर्दवादी सोचमे डूबल परिलक्षित होइत अछि। समाज नामक संस्था हुअए, परिवार नामक संस्था हुअए कि बियाह नामक संस्था हुअए। ई सभटा संस्था द्वारा स्त्रीक खाली शोषण भेल अछि। एहि सब संस्था केँ माध्यम सँ स्त्रीक शोषणक से जाल बिछायल गेल, अपन साहित्यक माध्यम सँ राजकमल चौधरी खूब नीक जकां जीबाक लेल सभा जे बाध्य करैत अछि।

देह बेच केँ अपन गुजर-बसर करै बाली स्त्री सभ केँ अपन साहित्यक विषय बनेबाक लेल हुनका पर अश्लीलता आ कामुकता पसारबाक आरोप लगलनि। एहि संदर्भमे सुभाषचन्द्र यादव लिखने छथि- ''राजकमल का उद्देश्य पाठकों की कामुकता को भड़काना कभी नहीं रहा। वे स्त्रियों को शोषण और उत्पीड़न से मुक्ति दिलाना चाहते थे। राजकमल धर्म और नैतिकता को शोषण का हथियार मानते थे, जिसका इस्तेमाल समाज का एक वर्ग दूसरे वर्ग केँ खिलाफ करता है। यौन विषयों केँ माध्यम से राजकमल ने धर्म और नैतिकता केँ मानव-विरोधी स्वरूप को उजागर किया है।'' भारतक समाज में स्त्रीक पराधीनता किनको सँ झांपल नहि अछि। ओहियोमे मैथिल स्त्री सबहक पराधीनता तं स्थायी स्वभावक छल मिथिला आइयो बहुत पिछड़ल इलाका अछि। साले-साल आब' बला बाढ़ि ओहि ठामक लोक केँ होशे नै होय ले दैत अछि। तें ओहि ठामक लोक आइयो बड़ पिछड़ल छल। आ एहि पिछड़ापनक सबसं बेसी मारि ओहि ठामक महिला सब पर पड़ल अछि। देवशंकर नवीन लिखने छथि- मिथिलांचल में हाल-हाल तक स्त्रियों की स्थिति पालित-पोषित की ही रही है। एहि सब सँ पर्दा उठौने छथि।

जेनाकि ऊपर लिखल गेल अछि जे राजकमल चौधरीक मैथिली कथा साहित्यमे स्त्रीक विभिन्न रूप भेटैत अछि। स्त्रीक जतेक रूपक ओ वर्णन केने छथि ताहिमे विधवा आ वैधव्यक मजबूरीमे देह बेचैत विधवाक चित्रण सबसं बेसी मर्मस्पर्शी छल देवशंकर नवीन लिखने छथि- ''सबसे पहले विधवाओं केँ जीवन से बात शुरू करें। मिथिलांचल की वर्ण व्यवस्था की तरह विधवा की किस्मत भी विचित्र है, वह न जीने केँ लिए स्वतंत्र है, न मरने केँ लिए। स्त्री का भी क्या जीवन है – जब तक सधवा रहेगी, पति उसका शासक रहेगा और ज्यों ही वह विधवा होगी, पूरा परिवार, पूरा समाज उसका शासक और शोषक हो जाता है! पूरे गांव की नजर उसकी जवान देह पर रहती है। यदि अपने दैहिक शोषणमे उसने आनाकानी की, तो परिवार से लेकर समाज तक उसे वेश्या घोषित कर देगा, जवानी ढलान पर आ जाए तो वह डायन हो जाएगी, जैसे 'सहस्त्र मेनका' की निर्मला वेश्या हुई, जैसे 'कादम्बरी उपकथा' की कादम डाइन हुई।'' अपन विश्लेषणमे देवशंकर नवीन स्त्री-पराधीनताक वैघ चित्र प्रस्तुत केने छथि जे मनुस्मृतिक अनुसार पूर्वहि सँ विश्लेषित अछि। हुनकर ई कहब सत्य अछि जे स्त्री के वेश्या बनेबामे समाजक मुख्य भूमिका होइत अछि। मुदा हुनकर ई कहब जे दैहिक शोषण सँ आनाकानी केला पर अपन परिवार विधवा केँ वेश्या घोषित क' दैत अछि, स्वीकारबाक योग्य नै छनि। एनामे सवाल उठैत अछि जे कोनो परिवारमे जं कियो विधवा भ गेलीह ये तं कि ओहि परिवारक सदस्यगण जे प्राय: हुनकर पिता अथवा भाय हेताह ओ सब मिलकें ओहि स्त्री केँ वेश्या घोषित क' दैत अछि कि।

मैथिल समाजक एकटा आर विशेषता अछि जे योग्य सँ योग्य स्त्री-पुरुष सबमे सेहो कमी निकालि लेल जाइत अछि। आ एहि कमी केँ बल पर लोक सभक उपहास उड़ायल जाइत अछि। देवशंकर नवीन लिखने छथि- ''निर्मला निर्धन है, इसलिए समाज कलंकिनी कहता है, कादम सम्पत्तिशालिनी है, तो उन्हें देवरानी ही बांझ कहती है और समाज डायन कहता है। 'पात' की पतिया विधवा होने केँ बाद, वृक्ष से टूट कर गिरे सूखे पत्ते की तरह लुढ़कती रहती है – कभी कुड़े में, कभी नाली में, कभी सड़क पर। जो पाता है, वही उसके उपभोग से अपनी यौन बुभुक्षा शांत कर लेता है। प्रलोभन देकर घर ले जाता है और वहां उसका अन्यथा उपयोग करता है। पतिया यह सब सहने को विवश है। 'दीदी, अस्पताल, बनगाम...' की दीदी अपनी भौजाइयों द्वारा तिरस्कृत होती है और समाज उन्हें भूखे शेर का सुलभ आहार समझ लेता है। 'दमयन्ती हरण' की दमयन्ती और उसकी विधवा मां की स्थिति ठीक वैसी नहीं है, पर शरीर को ही जीवन-रक्षा की पूंजी मान लेने वाली इस असहाय मां-बेटी का जीवन, समाज भली-भांति नहीं चलने देता। अप्पन एहि विश्लेषण में देवशंकर नवीन, राजकमल चौधरीक मैथिली कहानी में उपस्थित विधवा पात्रक लाचारी आ बेबसी केँ विश्लेषित केने छथि। विधवा पात्र आरो कतेक कहानीमे अछि। 'आकाशगंगाक' विधवा पात्र अन्नपूर्णा पढल-लिखल महिला थिकीह। ओ स्वाभिमानी महिला छलीह। हुनकामे ई स्वाभिमान शिक्षाक माध्यम सँ आयल अछि। हुनकर पिता बड्ड पैघ जमींदार छला मुदा स्वाभिमानी अन्नपूर्णामे शिक्षाक कारण सँ जे आत्मविश्वास आयल छल ताहि बल पर ओ पिताक सहायता केँ ठुकरा दैत छलीह। 'हरिद्वार वास', 'ननद-भौजाई', 'सुगमा सगुन बिचारै ना', 'अंधकार', 'मलहटोली एक चित्र' आदि कहानीमे विधवा क कतेको

रूप प्रस्तुत भेल छल। एहि विधवा सभक बारेमे देवशंकर नवीन लिखने छथि– ''ये सारी विधवाएं यौवन की उत्तप्त दोपहरी में जीवन केँ आयाम को जिन मजबूरियों में नाप रही हैं उसका विश्लेषण सूक्ष्मता से किया गया है। किसी को देह और मन की मांगें मजबूर कर रही है, तो किसी को जीवन-रक्षा केँ साधन या इच्छा-अभिलाषा की पूति हेतु तन को पूंजी बनाना पड़ता है। जीवन की अपरिहार्य शर्तों की पूर्ति हेतु अंधेरी सड़क पर किसी मनचले पुरुष की तलाश में कोई खड़ी हो जाती है, तो किसी को विधुर श्वसुर की सारी उचित-अनुचित कामनाओं की पूर्ति करनी पड़ती है। यौवनोन्माद की उत्तप्त ज्वाला, उम्र की बसंत और मन की झूले में झुलसती, बिहुंसती और झूलती ये विधवाएं मिथिला केँ नारी परिदृश्य का ऐसा आंकड़ा इन कहानियों केँ माध्यम से उपस्थित कर रही हैं, जिसमें समाज और सामाजिक आचार संहिता केँ तार-तार अलग हो गए हैं।''

सबसं वैध प्रश्न तं ई अछि जे समाज आ शास्त्र मिल केँ विधवाक लेल किछु विधान बनेलक तं विधवा केँ विचलन सँ किएक नै बचेलक। राजकमल चौधरी अपन कथा साहित्यक माध्यम सँ यैह सब सवाल उठबै छथि। आखिर किएक कोनो विधवा केँ जवानीक ज्वाला जड़ायकें राख क' देत छैक? आखिर कोनो विधवा फेर सँ बियाह क' क' जीवनक सुख किएक नै उठा सकेत छलीह?

राजकमल चौधरीक मैथिली कथा साहित्यमे विधवाक संग-संग आरो स्त्री-चरित्र केर यथार्थ चित्रण भेल छल। समुद्र'क दयामशी, कोंपलक चमेला, सती धनुकाइनक सती, घड़ीक जहूरनी, कमलामुखी बहुक, कमलमुखी, खरीद बिक्रीक शरणार्थिनी, जहएक, शकुन, पनडुब्बीक कादम ई सब पात्र विधवा नै थिनीह मुदा तैयो हिनकर जीवन परम कष्टकारी छल। स्त्रीक सौंसे जीवन अपना में बढ़िया सिद्ध करैमे बीत जाइत छल। देवशंकर नवीन लिखने छथि– ''सतीत्व बचाने, सुरक्षित सतीत्व का प्रमाण देने, अपने को पुण्यवती-फलवती साबित करने, अपने जीवन-साथी का चुनाव अपनी सुविधा और पसंद से न करने, एक जून रोटी और एक प्याली की प्राप्ति हेतु किसी भी पराए मर्द केँ साथ हमबिस्तर होने, बेरोजगार पति की पत्नी होने केँ कारण जीवन केँ गान-मुस्कान से वंचित रहने, अनाहूत अपराध केँ दंड को चुपचाप शिरोधार्य करने और मौलिक मर्यादा की रक्षामे खुद को मिटा देने, परम्परा केँ निर्वाह में अपना अस्तित्व भूल जाने का कौशल जिस मिथिला या जिस भारत की स्त्रियां अपने पूरे जीवन में सीखती रही हैं और यह सीख लेने में अपने को धन्य मानती रही हैं, राजकमल चौधरी की कहानियों का कथ्य-शिल्प उसी ज्वालामुखी केँ गर्भ से बाहर आया है। राजकमल चौधरीक मैथिली कहानीमे मैथिल नारी सबहक दयनीय स्थितिक विशद वर्णन भेटैत अछि।

ओना देखी तं हिनकर मैथिली कहानी मिथिलांचल अतिक्रमण सेहो करेत अछि। मिथिलाक बाहरो जै समाजमे स्त्रीक पहने दुर्दशा अछि ओहि समाजक लेल सेहो ई कहानी ओतबे महत्वपूर्ण अछि जतबा महत्वपूर्ण मिथिलांचलक समाजक लेल अछि। राजकमल चौधरीक मैथिलीक कहानीक बारे में चन्द्रशेखर कर्ण केर मानव अछि जे, ''अपनी हिन्दी कहानी से भिन्न राजकमल चौधरी अपनी मैथिली कहानियों में कई सामाजिक समस्याएं सामने लाते हैं। विधवा समस्या, अनमेल विवाह, सामाजिक रूढ़ियां कुछ ऐसी ही समस्याएं हैं जो मैथिल समाज में दीमक की तरह लगी है। आज भी वैधव्य एक घाव केँ रूप में सवर्ण हिन्दू समाज की देह में टभक रहा है। छुटपन में भी विधवा होने पर पुनर्विवाह वर्जित है। यह सामंती समाज व्यवस्था का घोर अमानवीय पहलू है। यह सती प्रथा का जीवित विस्तार है। विधवा को इस समाज में अनेक विडम्बनाओं से गुजरना पड़ता है। सांझक गाछ' की भौजी को अपने बच्चों को पालने और पढ़ाने केँ लिए रखैल बनना पड़ता है। यह समाज पति केँ मरने पर पुनर्विवाह की अनुमति नहीं दे सकता है लेकिन उसे रखैल बना सकता है क्योंकि यह सामंती समाज व्यवस्था का अनिवार्य चरित्र है।'' सरिपहुं राजकमल चौधरीक कहानी एटका ऐना छल जाहिमे महिलाक प्रति निष्ठुरता में साफ-साफ देखल जा सकैत अछि।

आजादीक बाद सँ देश में विकास तं भेले अछि। मुदा स्त्रीक स्थिति में कुनु विशेष उल्लेखनीय परिवर्तन नहि आएला। छला आइयो स्त्री में निर्णय लेबल स्वतंत्रता नहि भेटल अछि। आइयो लड़की सब अपन जीवन संगी अपने सँ नहि चुनि सकैत छलीह। विजाति या दोसर धर्मक लड़का सँ बियाह केला सँ आइयो लड़की सब केँ पारिवारिक मर्यादाक नाम पर मारि देल जायत छला और करबाक बात ई जे एहेन स्थिति में लड़का में कोनो दंड नहि देल जाएत छल। समाज में एखनो स्त्री पुरुषक आधार पर बहुत विभेद अछि। राजकमल चौधरीक अपन साहित्यमे वंचित आ पीड़ित स्त्री सबहक पीड़ामे पूरा जिम्मेदारी आ गहन संवेदनशीलताक संग उठबैत अछि।

पारिवारिक आ सामाजिक स्त्रीक संग-संग राजकमल चौधरी अपन दू गोट कहानी में भिगमंगनी सभक जीवनक चित्रण केने छथि। जे हुनकर लेखकीय जिम्मेदारीक प्रमाण पत्र छल। स्त्री चाहे ओ कुनू भी जाति अथवा धर्म केँ किये नै होथि, सामाजिक आ समाज सँ बहिष्कृत किये नै होथि राजकमल चौधरी, हुनकर समस्या में विलक्षण शिल्प केँ संग आ प्रभावशाली भाषा में उठौने छथि। ❐

संदर्भ

1. राजकमल चौधरी रचनावली खंड-4, संपा. – देवशंकर नवीन, पेज-16
2. राजकमल चौधरी का सफर, लेखक- सुभाषचन्द्र यादव, पेज-58
3. राजकमल चौधरी रचनावली खंड-4, संपा. – देवशंकर नवीन, पेज-16
4. वही, पेज-16-17
5. वही, पेज-17
6. वही, पेज-18
7. वही, पेज-18
8. चन्द्रशेखर कर्ण रचनावली, खंड-3, संपा. श्रीधरम, पेज-312-313

फेसबुक आ कविता

गंगेश गुंजन

सोशल मीडियाके सब प्लेटफार्म पर मैथिली भाषामे सूचना दयके संग बड़ विचार-विमर्श भ' रहल अछि। तमाम समकालीन मुद्दा पर बेधड़क लिखल जा रहल अछि। आजुक दौरमे सभक हाथमे मोबाइल अछि आ फेसबुक पर दूपतिया सँ ल' क' कविता, ग़ज़ल, खिस्सा, बाटक चर्चा (यात्रा वृतांत) सेहो लिखल जा रहल अछि। हम 'सोशल मीडियामे मैथिली' नामक एहि कॉलममे मैथिलीक तमाम लोकक ओहि रचना के लेब जे सोशल मीडिया पर पाठकक लेल पसरल अछि आ हम निवेदन करैत छी जे जँ अहाँ के कोनो अप्पन रचना वा किनको रचना पसिन पड़ैत अछि त' सें हमरा 'तीरभुक्ति' के ई-मेल पता पर जरूर पठाऊ। एहि अंकमे साहित्य अकादेमी पुरस्कारसं सम्मानित प्रख्यात साहित्यकार गंगेश गुंजनक रचना, जे हुंकर फेसबुकक भीत (वाल) पर अछि।

- संपादक

प्रात

फल जकां सोहि रहलय ब्रह्मांड
उषाक आंगुर।
छुटि रहलय अन्हारक खोंइचा इजोत पर सं।
प्रात भ' रहलय।
ब्रह्माण्डक सोहल संतोला-सूर्य
उगलाह!

छाउर

आंखि कुटकुटाइत रहैये एखनहुं
इतिहासक छाउर सं,
एखनहुं उड़ि-उधिया क' अबैत रहैये बेसी काल,
ई छाउर कोनो ने कोनो श्मशान सं, क़ब्रिस्तान सं।

हम स्वयं छिटने छी कतेको
बेर-चूल्हि आ घूरक छाउर
दतमनिक अभाव आ
मार्निंग स्कूलक हड़बड़ीमे
कए दिन
छाउरे दातमनि करैत रही
हमरा लोकनि
गामक इसकुलिया विद्यार्थी
सब
जाइ वाटसन स्कूल
छाउरो आब लुप्त होइत
वन्य प्राणीक प्रजाति जकां
भ' रहलय
बेरा-बेरी विदा भ' चलि
जा रहल
गाममे बूढ़-पुरान लोक
जकां
मिझायल घूरक छाउरे पर
घोकरिया क'
पड़ि-सूति
जड़काला राति बितबैत
रहय
गामक अनेरुआ कुकूर
इतिहास भ' जायत

संपर्क : पारस टियरा, टावर-08, फ्लैट नं-102, सेक्टर. 137, (एक्सप्रेस मार्ग) नोएडा- 201301 (उ.प्र.), मो. 9899464576

अबैये आ करेज में पैसि क'
भरि अंतर्रात्मा बिर्ड़ो उठा दैये।
गंध सेहो कर' लगैए चिरायन-चिरायन
करिते रहि जाइए दिनक दिन।
जीह हौंड़ैत रहैये, रद्द होयबा धरि ओकाइत रहैये कंठ।
आंखिक समस्या मुदा बेसी जटिल अछि।
एना बेर-बेर आंखि कुटकुटयबाक कोन उपाय ?
आंखिक डाक्टर कहैत छथि-
'इतिहासक छाउर सँ कुटकुटाय वाला
ई आंखि अबाह भ' गेलय।
एकर आपरेशन करबाउ।
एकरा तुरंत निकलबाउ आ
दोसर लेंस लगबाउ।
नव आंखि बनबाउ।
अपना केँ अप-डेट करू।'
की करी?
मानि लेबाक चाही- डॉक्टरक सुझाव?

छाउर (दू)

हाथमे मैल आ कचकच करत छाउर।
बसातक उधियायल आंखिमे पड़ल तं
सहजहिं कुटकुटायत।
मुदा माछ बनबय में सबसं बेसी काजक रहय।
छाउरे लगा क' घीचल जाइत छल तहिया
कटाह लोकक जीह।
कहबीमे सेहो कहां बांचलए।
राति-बिराति ठाम-कुठाम क' देने
बिलाड़िक नेड़ी केँ तत्काल
झांपि देल जाइत छल, छाउरे सँ
मूत-गोबर सँ गिल रहि गेल
गाय-बड़दक थैर पर छीटल जाय छल छाउर।
जल्दी रुक्ख करै लेल माटि।
मां कहलक तं बाड़ी में
कोबी-भांटाक गाछ पर तं
हम स्वयं छिटने छी कतेको बेर-चूल्हि आ घूरक छाउर।
दतमनिक अभाव आ
मार्निंग स्कूलक हड़बड़ीमे कए दिन
छाउरे दातमनि करैत रही हमरा लोकनि
गामक इसकुलिया विद्यार्थी सब।
जाइ वाटसन स्कूल।
छाउरो आब लुप्त होइत
वन्य प्राणीक प्रजाति जकां भ' रहलय।
बेरा-बेरी विदा भ' चलि जा रहल
गाममे बूढ़-पुरान लोक जकां।
मिझायल घूरक छाउरे पर घोकरिया क'
पड़ि-सूति
जड़काला राति बितबैत रहय
गामक अनेरुआ कुकूर!
इतिहास भ' जायत।

कोदारिक काव्य

कोदारि कागत नै लीखैये।
भूमि लीखैये।
'फसिल', कोदारिक काव्य थिक।
ज'न-बोनिहार ओकर महाकवि।
अन्न सब ओकर अध्याय आ प्रकरण।
श्रम ओकर कथानक चरित्र।
कोदारिक प्रत्येक छओ थीक
जीवनक अनादि-अनन्त अक्षर!

दहेज-समाचार

सुपत प्रेम केँ तं' दुर्गंजन
बेचल प्रेमक ई पद पूजन
के मानत, बूझत आ क'रते
मिथिले!
आब अहंक अभिवंदन?

दूपतिया

1. अश्रु-अर्घ्य सँ स्मृति-स्नान!
   लगय जेना संगम पर होइ!
2. फूल गंध बिनु झरल पराग,
   अम्मट थिक प्रौढ़क अनुराग!
3. जइ एकसर एकांतमे जाय ने कोय,
   हम दोसकर बैसे छी बड़ी काल ओत।
4. कोना अपन भूगोल बदलि गेल,
   कोना बदलि गेलय इतिहास,
   अगिला पीढ़ी लोक केँ हेतै,
   मोशकिल सँ एकर विश्वास। ❐

स्वाती शाकम्भरीक चारि टा कविता

हम कतबो
प्रगति कऽ ली
छुबि ली
धरती सँ
चान केँ,
कहुना देख ली
मुदा भोगि
सकब की
गामक मचान केँ?
जिमुतवाहनक कथा तें
पैढ लेब
मोबाइल पर
सुना देबैन
सखी आ बहिनपा केँ
मुदा कतऽ भेटत
पोखरिक महार
गामक चारो
टोल सँ जूटल
परस्पर स्त्रीगनक
पारस्परिक
अपनत्वक समाद

मोन होइये

मोन होइये
खूब सुततौ
जुआनीक नीन
कातिकक मास
नञि जाड़
नञि गरमी
नञि बिर्रो
नञि बसात
निर्विकार भऽ
नेनपनक नीन जकाँ
निश्छल मनोभावना।
मुदा, दायित्वक बोध
खाइत पिबैत
सूतल जागल
सतत् माथ पर
ओ बोझ
पढबाक बोझ
जीवन केँ
गढबाक बोझ
जे सोझ भऽ
नञि चलऽ दैत अछि
नञि सूतऽ
नञि जागऽ दैत अछि
बढैत वयस केर संग
बोझक आकार-प्रकार
बढले जाइत अछि।
मोन होइये
नञि रखितहुँ
ककरो लाज लेहाज
हाथी जकां
हाथक सूढि सऽ
बाटक गरदा
सुरकि माथ पर
ढारि लेतौ।
नहेबाक काल
दलमलित कऽ देतियै
हिलकोर सऽ
धारक कोर केँ
मुदा हम तें
जानवर नञि
ओ मनुक्खक थिकौ
जकर परिभाषा थिकैक
राग-रोष
दोष-दाग
लाज-धाक
भाव- अभाव
मान-अपमान
तार-भियार
आ मनक विकार
लऽ बढैत छी
प्रगतिक बाट पर
अवरोध-विरोधक
घाट पर
अंतहीन आकांक्षाक
माथ पर बोझ नेने
सुतलोमे जागल छी
नेनपनक निर्विकार
दुनिया सऽ
जुआनीक विकार दिस
दबाड़ल छी।

दू डारि पर जिनगी

घरक लोक
कहैत छथि
पता लागत तखन
जखन होयत
अपन घर द्वार
आन हएत अप्पन
अप्पन हएत आन
राति तें राति
दिनो देखौता चान
उलहन उपराग सं
काकोक्तिक प्रयोग मे
व्यञ्जित अनुराग सं।
उठऽ परत
पैर दाबि
अहल भोरे
सेज सें
रहऽ परत
लोक लग
राति-दिन
परहेज सँ
पढ़ने से की
गढ़ने से की
विरले अछि
पुरुष एहन
निर्लोभ छथि
दहेज सँ।

संपर्क : *हटिया गाछी, मानस नगर, वार्ड नं.-32, सहरसा (बिहार) 852201*
shakambhariswati2016 @gmail.com

जे नञ भेटल एमेजॉन पर

मरुआक चिक्कस
करुआक तेल, खैर
झींगाक पात
नोनीक साग
महानगरक मैथिलानी
मोबाइल परक
एमेजॉन (amozon)
पर तकैत
थकित छैथ।
खुशी छलीह
जे आब गामक
साग आ भात
एमेजॉन पर
भेट जेएत
साँझ आ परात
आर्डर करू
पहुंचा जायत
घर के
ओहिना जेना
आर किछु
रोजमर्राक
उपयोगी आ
उपभोगी सामग्री।
आब जितियाक डाली
भरा जायत
सुगमता सँ
बाँस आ जीयलक
पात सँ
मैनाक भालैर सँ
आ जे किछु
डाली भरबाक सामग्री
सबटा भेंट जेएत।
महानगरोमे
गाम के
गामक मचान
आ दलान केँ
गायक बथान केँ
जौ उपभोगब नञि
तँ दर्शन
जरूर कऽ लेब
निश्छल प्रकृतिक
पहचान केँ
पछवरिया बाधक
बसबिट्टी में
नुका रहल
दिनमान केँ
आ पुबरिया भागक
केलबारी सँ
उगैत चान केँ।
मुदा आय
जितियाक दिन
नहाय खाय
पितरैन केँ
झींगाक पात पर
खैर आ तेल
चढेबाक लेल
पोखरि आ
ईनार पर
ॅवा कोशी
कमला बागमतीक
करेहक कछेर पर
जुटल मैथिलानी,
झुंडक संग
उमकैत नेना
की इहो
एमेजॉन पर
भेंट जाएत?

हम कतबो
प्रगति कऽ ली
छुबि ली
धरती सँ
चान केँ,
कहुना देख ली
मुदा भोगि
सकब की
गामक मचान केँ?
जिमुतवाहनक कथा तें
पैढ लेब
मोबाइल पर
सुना देबैन
सखी आ बहिनपा केँ
मुदा कतऽ भेटत
पोखरिक महार
गामक चारो
टोल सँ जूटल
परस्पर स्त्रीगनक
पारस्परिक
अपनत्वक समाद।

पूर्णिमा

गुरुनानक हो
वा बुद्ध बाल्मीकि
एहन सहस्त्रों
महान मनीषी
विद्वान केर
अवतरण तिथि
थीक "पूर्णिमा"
जे गुज-गुज अन्हरियाक
सम्पूर्णता केँ भोगैत
तिल तिल बढैत
प्रतिपदा सँ प्रारंभ कऽ
पूर्णिमा केँ
प्राप्त केने छथि।
आजुक पूर्णिमा
शरदक पूर्णिमा
अवतरण तिथि
कविकुलक बीजि पुरुष
आदिकवि "बाल्मीकि" केर।
जिनक आह सँ
प्रस्फुटित भऽ
उठल छल।
कविताक भाव
अथाह अजस्त्र श्रोत
अमृतत्व केँ नेने
नहा देने छल।
आजुक पूर्णिमाक
ज्योत्सना सँ
जगमगा देने छथि
कविकुलक संसार केँ।
संगहि पयोनिधिक सुता
लक्ष्मीक अनुगामी आय
जागरण करताह
आ नवविवाहित बड़क
होयत चुमौन।
संगहि लक्ष्मीक
भ्राता चन्द्रमा
अपन पूर्णिमा लऽ केँ
धरतीक निकटस्थ
भऽ जेताह।
हुनक स्वागत मे
पसारल जाओत पायस
जाहि पायस केँ
अपन अमृततत्व सँ
सिक्त करता चान
आसमान सँ बाँटताह
अपन प्रसाद संसार केँ।
सुख समृद्धि शांति
आयु आरोग्य
प्राप्त करौताह
मनुक संतान केँ।
जे पुनः लड़ताह
अपन अन्तः केर
आतंक सँ
अहंकार सँ
मनक विकार सँ।।

❐

किछु जीबाक लेल, किछु जिएबाक लेल

मनोज शाण्डिल्य

हम सचेत रहैत अपन परिवेश सँ जे प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप सँ अनुभव प्राप्त करैत छी से हमरा ज्ञान दैत अछि आ शिक्षित करैत अछि। एहि अनौपचारिक ज्ञान आ शिक्षाकेँ अपन समाजक संग साझा करयमे कविता हमरा एकटा कारगर उपकरण आ एकटा सशक्त माध्यम सन बुझि पड़ैत अछि। हम बहुत साकांक्ष भ' क' अपन ई प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष अनुभव अपन कविताक माध्यम सँ अपन समाजमे परसैत छी। आ जखन से करैत छी तँ ई बोध होइत अछि संभव छैक जे तनावग्रस्त जीवनमे संघर्ष करैत ककरो ने ककरो कोनो प्रश्नक उत्तर भेटतै, ककरो ने ककरो अपन संघर्षमे कनिको टा ब'ल भरोस भेटतै, ककरो ने ककरो कतहु कोनो बाट देखा जेतै। आ केओ ने केओ कनी आर जीबि लेत।

हम मूलत: एकटा कवि छी, आ तँ कविता लिखैत छी। आ से खूब लिखैत छी। मुदा एहिठाम प्रश्न ई नहि अछि जे हम कते आ की लिखैत छी, प्रश्न ई अछि जे हम कविता किए लिखै छी। आ ई प्रश्न वास्तवमे एकटा अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न अछि।

कोनो कवि लेल रचना कर्म सँ पूर्व ई सभसँ महत्वपूर्ण प्रश्न होयबाक चाही जे ओ जे किछु लिखत बा लिखैए से किए लिखैए। लिखबाक प्रयोजन की छैक? ओ जँ नहि लिखय तँ की भ' जेतै, आ जँ लिखय तँ ककरा पर केहन प्रभाव पड़बाक संभावना छैक। आ इहो जे किछु ओ लिखैए से ककरा लेल लिखैए? ओकर लेखनीक केँद्रमे के छैक? आ जखन हम कहैत छी जे ई सभ प्रश्न कोनो कविक लेल अत्यंत महत्वपूर्ण छैक, तँ स्वाभाविके जे हमरो लेल ओतबे महत्वपूर्ण अछि।

एहिमे सँ किछु प्रश्नक उत्तर हम अपन कविता संग्रह 'सुरुजक छाहरि में'क आमुखमे देने छी। आरंभमे तकरे उल्लेख एतय कयल जाय। यथा:

"कविता हमरा लेल अपन भावनाक अभिव्यक्तिक एक सशक्त आ सरस माध्यम अछि। परिस्थिति, परिवेश, अपन आसपासक क्रियाकलाप आ ताहि सँ उत्पन्न मन:स्थितिक अनुसारे भावना बदलैत रहैत अछि आ तें कविताक रंग-रुप सेहो। अपन मोनक बात कविताक माध्यमे कहि लैत छी तँ मोन हल्लुक होइए आ सृजनात्मक सन्तुष्टि सेहो भेटैए। मनुष्यक स्वभावमे परस्पर अनेक तरहक भिन्नता होइतो, बहुत किछु एहनो होइत छै जे प्राय: समाने होइत छैक। हृदय सँ झहरैत भावना एहने एक तत्व छैक जे मनुष्यकेँ मनुष्य सँ जोड़ने रहैत छैक आ मनुष्यताक प्रति विश्वास जगओने रहैत छैक। कवि अपन रचनाक माध्यम सँ सभक बात करैत अछि। हमरो प्रयास सैह रहैत अछि। एहि पोथीमे संकलित सब रचना अहीं सभक बात कहैत अछि, मात्र लिखने टा हम छी।

आधुनिक जीवन मनुष्यकेँ भैतिक सुख-सुविधा प्रदान केलकै तँ संगहि मानसिक तनाव के कए गुणा बढ़ा सेहो देलकै। आ सेहो सुख-सुविधा कतेक लोक पाबि सकलए?

संपर्क : विला सँ 150, हाइ राईज़ के.वी.आर. पैराडाइज़, मल्लमपेट रोड, बाचुपल्ली, हैदराबाद 500090, मोबाइल: 9866077693

एहन सन समयमे एकटा आम लोक के जीवन-यापन करब ततेक ने कठिन भऽ गेल छैक जे तनाव सँ मुक्तिक लेल कोनो ने कोनो अवलम्बक प्रयोजन आवश्यक भऽ जाइत छैक। हमरा लेल कविता सैह अवलम्ब अछि। एक एहन सम्बल जे हमरा एहि अनावश्यक खींचा-तानी सँ दूर लऽ जाइत अछि आ स्वस्थ जीवनक दिस प्रेरित तँ करिते अछि, संगहि सकारात्मक सोच के सेहो अक्षुण्ण रखैत अछि। हमर दृढ़ विश्वास अछि जे नीक रचनाकार होमय लेल पहिने नीक पाठक होयब आवश्यक। पढ़बा सँ रचनात्मक अभिव्यक्तिक व्यापकता बढ़बाक संग-संग भावनात्मक ऊर्जा सेहो भेटैत छैक। तैं पढ़ैत छी, देखैत छी, सुनैत छी, गुनैत छी आ तकर बाद जे हृदय आदेश करैत अछि से लिखैत छी। आ तैं भरिसक एहि तनावपूर्ण जिनगीक सामना बिहुँसैत कऽ पबैत छी।

मैथिली माय सँ भेटल उपहार अछि, मातृभाषा अछि, आ तैं सभ सँ प्रियगर अछि। जाहि भाखामे हमर हृदय हमरा सँ संवाद करैए ताहि भाखामे अपन मनोभावक संप्रेषण सभसँ सहज बुझाइत अछि तैं मैथिलीमे लिखैत छी। अपन भाखा सँ प्रेम अछि आ अपन माटि-पानिक प्रति अनुराग अछि तैं मैथिलीमे लिखैत छी आ लिखैत रहब।"

चलू आब कनी आर आगाँ बढ़ी। हमरा लेल कविता लिखब 'जीवित रहबाक अवलंब' तँ अछिए, संगहि 'जीवित रखबाक प्रयास' सेहो अछि। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होइत अछि। समाजक मध्य जन्म लैत अछि, समाजे में पलैत-बढ़ैत अछि, फरैत-फुलाइत अछि, संघर्ष करैत अछि आ अंतमे संघर्ष करैत-करैत एही समाजक मध्य माटि भ' जाइत अछि।

एनामे स्वाभाविके छैक जे ओ समाज सँ बहुत किछु लैत अछि, बहुत किछु प्राप्त करैत अछि। आ जखन एते किछु लैत अछि तँ ओकर दायित्व बनैत छैक जे ओ किछुओ एहि समाजकेँ आपस सेहो करय। कोनो कवि के कविता एकर संभावना प्रस्तुत करैत छैक। हमरो करैत अछि।

हम सचेत रहैत अपन परिवेश सँ जे प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप सँ अनुभव प्राप्त करैत छी से हमरा ज्ञान दैत अछि आ शिक्षित करैत अछि। एहि अनौपचारिक ज्ञान आ शिक्षाकेँ अपन समाजक संग साझा करयमे कविता हमरा एकटा कारगर उपकरण आ एकटा सशक्त माध्यम सन बुझि पड़ैत अछि। हम बहुत साकांक्ष भ' क' अपन ई प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष अनुभव अपन कविताक माध्यम सँ अपन समाजमे परसैत छी। आ जखन से करैत छी तँ ई बोध होइत अछि संभव छैक जे तनावग्रस्त जीवनमे संघर्ष करैत ककरो ने ककरो कोनो प्रश्नक उत्तर भेटतै, ककरो ने ककरो अपन संघर्षमे कनिको टा ब'ल भरोस भेटतै, ककरो ने ककरो कतहु कोनो बाट देखा जेतै। आ केओ ने केओ कनी आर जीबि लेत।

संगहि ई ध्यान राखब अत्यंत आवश्यक रहैछ हमरा लेल जे हम ककरा लेल लिखि रहल छी। आ ताहि लेल इहो बुझब आवश्यक जे हम किए लिखि रहल छी। एतय अपन सोचमे स्पष्ट होयब आवश्यक। आजुक कविताक धर्म ने भक्तिकालक बन्दना-अर्चना छैक आ ने रीतिकालक स्तवन-वंदन। आजुक कविताक मुख्य धर्म छैक समाजमे उपजैत नाना तरहक समस्या पर विमर्श केनाइ आ ताहि समस्या सभक समाधान तकबा लेल समाजकेँ प्रेरित कएनाइ। कविक काज प्रवचन देब नहि होइत छैक। ओ मात्र अपन चिन्तनक माध्यमे समाजकेँ एहि समस्या सभ सँ अवगत करबैए आ अपन कविताक माध्यमे ओकर मध्य किछु प्रश्न ठाढ़ करैत अछि, ओकरा वस्तुस्थिति सँ अवगत करबैत अछि। आ एकर बाद ओकर समाज सँ एतबे अपेक्षा रहैत अछि जे समाज ओहि सभ विषय पर चिंतन-मनन आ विचार-विमर्श करैत समाधान धरि पहुँचय जाहि सँ स्थितिमे किछु सुधार भ' सकै। आ से जँ कनिको सुधार, कनिको प्रगति भ' सकै तँ कवि अपन लेखनकेँ सफल मानैए। हमहूँ एही बाट पर चलैत छी, एही लेल लिखैत छी। आ तँ हम समाजक लेल लिखैत छी। समाजमे संघर्षरत प्रत्येक व्यक्ति हमर रचनाकर्मक केँद्रबिंदु होइत अछि, खाहे ओ व्यक्ति आकि ओ समाज गामक हो वा शहरक। जतय संघर्ष छैक, ततय हमर कविता अछि।

कहबाक प्रयोजन नहि जे जँ कि मूलतः मैथिलीक कवि छी, तँ लेखन ने हमर व्यवसाय अछि आ ने कहियो भ' सकैत अछि। तखन जँ लिखैत छी, आ सेहो कविता लिखैत छी तँ मात्र एहि कारणें जे जाहि समाज सँ एते किछु पओलहुँ तकरा किछुओ टा घुरा अपन सामाजिक दायित्वक निर्वाह क' सकी। कनी जीबि सकी आ कनी जीबामे सहायता क' सकी।

❐

बथान (एनिमल फार्म)

जॉर्ज ऑर्वेल
अनुवादः विनीत कुमार झा

'साथी, अहाँ सब काल्हि रातिके हमर ओहि अजीब सपना क' मादे सुनि चुकल छी। मुदा हम अप्पन सपनाक गप बादमे करब। हमरा ओकरा सँ पहिने किछु कहब अछि। हमरा नै लागैत अछि जे कॉमरेड्स, आबय बला बहुत रास मासमे हम अहाँ के संग रहि सकब आ मरहि सँ पहिने हम अप्पन ई कर्तव्य बुझैत छी जे जे किछु बुद्धिमता हम हासिल केने छी, ओकरा अहाँ सबके देत जायब। हम भरपूर जीवन जीब लेलहुं। जब हम अप्पन ठाममे असगरे पड़ल रहैत छी ते हमरा सोचबाक लेल बड़ समय भेटल आ हमरा लागैत अछि जे हम ई गप कहि सकैत छी जे हम अहि धरती पर जीवनक स्वरूप के, ढर्राक संग आ संगे-संग आब जी रहल कोनो मालजाल के बुझैत छी। अहि के ल' क' हम अहाँ सब सँ गप करै चाहैत छी।

नर फार्म यानी ताल्लुकाबाड़ा यानी बथानक मिस्टर जोंस रातिक लेल मुर्गीक दड़बामे ताला ते लगा देने छल, मुदा ओ एत्तेक बेसी पीने छल जे ओकर किवाड़ बंद करब बिसरि गेल। ओ डगमगायत अहाताक दिस चलि गेल। ओकर लालटेन सँ बनैत इजोतक घेरा ओकरा बुलय सँ इम्हर-उम्हर भ' रहल छल।

ओ अप्पन जूत्ता के पिछवाड़क दरवज्जा दिस उछालि देलक। फेर भनसा घरक कोठामे राखल पीपा में से अपना लेल बीयरक आखिर गिलास भरलक आ बिस्तर लग जा पहुंचल, जतय मिसेज जोंस पहिने सँ खर्राटा मारि रहल छली।

जहिना बेडरूमक बत्ती बन भेल, बाड़क सभटा मकान में हलचल आ सुगबुगाहट शुरू भ' गेल दिन में चारू कात ई खबर पसरि चुकल छल जे जनाब मेजर, माननीय धूसर सुग्गर के काल्हि राति एकटा अजीब-सन सपना आयल छल आ हुनकर इच्छा छलनि जे अप्पन अहि सपनाके दोसर प्राणि के बताबी। ई तय भ' चुकल छल जे जेना मिस्टर जोंस के जानय से सब किछु सुरक्षित भ' जायत, सब कियो बाड़वाला बखार में भेटल। जनाब मेजर के बाडा में एत्ते बेसी सम्मान भ' चुकल छल जे सभ प्राणी हुनकर गप सुनबाक लेल अप्पन घंटा भरि के नीनके त्याग करय लेल तैयार छल। (हुनका अहि नाम से बजाओल जायत छल, हालाँकि ओ विलिंगडन ब्यूटीक नामसे प्रदर्शित कयल गेल छल।)

पैग बखारके एक दिस एकटा चबूतरा पर मेजर पहिने सँ अप्पन पुआरक ओछाइन पर आराम सँ पसरल छल। हुनका ऊपर एक शहतीर सँ एकटा लालटेन लटकल छल। हुनक उमिर बारह बरस छल आ पिछला कुछ काल सें ओ कनि मोटा गेल छल, मुदा एकर बादो ओ एखैन राजसी ठाठ-बाटबला सुग्गर छल। ओकरा बधिया नहि केल गेल छल। हालाँकि हुनक आगुक नोकगर दाँत एखैन काटल नहि गेल छल, तकर बादो ओ देखहिमे बुधियार आ उदार लागैत छल। बड़ पहिने सँ अलग-अलग माल-जाल आयब शुरू भ' गेल छल आ अप्पन-अप्पन हिसाब सँ आराम सँ बैसैत छल। सबसें पहिने तीनों कुक्कर, ब्लू बैल, जेस्सी आ पिंचर आयल। फेर सुग्गर आयल ते चबूतराक एकदम आगू पुआर पर पसैर गेल। एकर बाद मुर्गी आयल जे खिड़कीक सिल पर जा बैसल। कबूतर फड़फड़ायत शहतीर पर बैस गेल। भेड़ आ गाय सुग्गर के पाछां अपना लेल बैसैक ठाम ताकय लागल आ बैस के पाउज करय लागल। गाड़ीबला दुनू घोड़ा बौक्सर आ क्लोवर एकसंग आराम सँ रकम-रकम चलैत आयल। ओ अप्पन पैघ-पैघ रोयाँ बला सुम एतेक सावधानी सँ राखि रहल छल जे कत्तो कोनो छोट-मोट जानवर पुआरमे नुकायल बैसल नै रहे। क्लोवर कनि मोटयल ममतामयी घोड़ी छ जे आब बुढा रहल छली। अप्पन चारिम बछड़ाक जन्म देलाक बाद अप्पन पुरना देहमे कहियो नहि घुरि सकल। बौक्सर नीक सन कद्दावर माल

संपर्क : ग्राम+पोस्टः आनंदपुरा, भायाः ग्वालपाड़ा, जिलाः मधेपुरा, बिहार-852115, मो. 9911364316

छल। ओ कोनो अठारह हाथ ऊँच छल आ ओहिमे औसत दरजाक दूटा घोड़ाक बराबर ताकत छल। ओकर नाक पर एकटा उज्जर डडीर छल, जेकर कारण ओ किछु-किछु फूहड़-सन लागैत छल। ओ नीकसें बुधियार नै छल। मुदा, एकटा गप छल, जे ओकर चरित्रक गंभीरता आ काज करयके अकूत ताकतक कारण सब हुनकर बड़ सम्मान करैत छल। घोड़ाक बाद उज्जर बकरी मुरियल आ बैंजामिन नामक गधा आयल। बैंजामिन बाड़ाक सबसे पुरना प्राणी छल आ बड़ बेसी खब्ती छल। ओ कहियो केकरो सँ गप नै करैत छल। मुदा जखन ऊ बाजैत छल ते आमतौर पर कोनो नै कोनो कटाक्ष जरूर करैत छल। उदाहरणक लेल ओ कहत जे भगवान ओकरा नंगरी अहि लेल देलक जे ओ माछी के उड़ाके ओकरा दूर राखय, मुदा जल्दिये नै ते ओकरा पास नंगरी रहत आ नै माछी। बाड़ा पर वहिटा एहन माल-जाल छल जे कहियो हँसैत नै छल। एकर कारण पूछला पर ओ ई कहैत छल जे ओकरा एहन किछु नजरि नहि आबैत अछि जाहि पर हंसल जा सकय। आउर ते आउर सबके आगू नै तो ओ बौक्सरक प्रति निष्ठावान छल। दुनू अक्सर अप्पन रविदिनक छुट्टी एक्के संगे फलोद्यानक परेवाले छोट-सं पशुबाड़ेमे, संग-संग चरैत छल, मुदा बिना कोनो गप करैत बिताबैत छल।

दुनू घोड़ा एखन बैसले छल, जे बत्तखक नेनाक झुंड कमजोर आवाजमे चिंचियात एकटा पांतिमे बखारमे घुसल। ओकर माय मरि चुकल छल। ओ झुंड इम्हर-उम्हर लपकैत-झपकैत अपना लेल एहन ठाम खोजि रहल छल, जतय सँ ओकरा कोनो पैघ जानवर अपना पइर सँ पीच नै दिये। क्लोवर अप्पन आगूक पइर सँ ओकर चारों दिस एकटा भीत ठाड़ क' देने छल। बत्तखक नेना सभ एकर भीतर दुबकि क' बैस गेल आ पलक झपकैत सुति गेल। सबसें आखिरमे मौली आयल। ओ एकटा खरदिमाग सुन्दर-सन उज्जर घोड़ी छल, जे जोंसक खचड़ा-गाड़ी खींचैत छल। ओ गुड़क भेली मुँह में चुसैत मस्तीसं आयल आ आगूमे बैस गेल। ओ अप्पन उज्जर अयाल इम्हर-उम्हर लहराबै लागल। ओ ओहि पर बान्हल लाल रिबनक दिस ध्यान आकर्षित करै चाहैत छल। एकर बाद बिलाड़ आयल। ओ सदिखन जना सबसें गरम ठामक लेल अगल-बगल देखलक, आ बौक्सर व क्लोवरक बीचक ठाम अपनाके सिकोड़ लेलक। ओतय ओ मेजरक पूरा भाषणक काल संतुष्ट भावसं घुरघुराति रहल। ओ मेजरक कहब एक्कोटा शब्द नै सुनलक।

ता धरि मोसेस, पालतू कार कव्वाक सिवाय सभ प्राणी आबि चुकल छल। ओ पिछवाड़ा दिस सँ एक दिस टाँड़ पर सुतल छल। जखन मेजर देखलक जे आब सब कियो आराम सँ अप्पन ठाम पर बैस चुकल अछि आ ध्यानसं अहि गपक इंतजार क' रहल छल ते ओ अप्पन गला खखारलक आ कहब शुरू केलक:

'साथी, अहाँ सब काल्हि रातिके हमर ओहि अजीब सपना क' मादे सुनि चुकल छी। मुदा हम अप्पन सपनाक गप बादमे करब। हमरा ओकरा सँ पहिने किछु कहब अछि। हमरा नै लागैत अछि जे कॉमरेड्स, आबय बला बहुत रास मासमे हम अहाँ के संग रहि सकब आ मरहि सँ पहिने हम अप्पन ई कर्तव्य बुझैत छी जे जे किछु बुद्धिमता हम हासिल केने छी, ओकरा अहाँ सबके देत जायब। हम भरपूर जीवन जीब लेलहुं। जब हम अप्पन ठाममे असगरे पड़ल रहैत छी ते हमरा सोचबाक लेल बड़ समय भेटल आ हमरा लागैत अछि जे हम ई गप कहि सकैत छी जे हम अहि धरती पर जीवनक स्वरूप के, ढर्राक संग आ संगे-संग आब जी रहल कोनो मालजाल के बुझैत छी। अहि के ल' क' हम अहाँ सब सँ गप करै चाहैत छी।

'साथी, अहीं कहू जे हमर अहि जिनगीक स्वरूप की अछि? ढर्रा की अछि अहिमे झांकि के देखू, हमर जिनगी दयनीय अछि, अहिमे बाद मेहनत अछि आ हम अल्पजीवी छी। जखन हम पैदा होयत छी ते हम एत्तबे टा खाय लेल देल जाइत अछि जे हमर ठठरीमे साँस भरि चलैत रहय। हमरा सँ जे साँस भरि लेबाक ताकत राखैत छैथ, हुनका देहक खूनक आखिर बूंद धरि काज करैक लेल मजबूर कैल जाइत अछि आ ओहि पलके आबैत, जखन हमर उपयोगिता खत्म भ' जायत अछि, हमरा घिन्न क्रूरताक संग काटि देल जायत अछि। इंग्लैंडमे कोनो एहन मालजाल नै अछि जे एक बरख भ' गेला के बाद खुशी के या फुरसतक अर्थ जानैत हुए। इंग्लैंडमे कोनो मालजाल आजाद नै अछि। मालजालक जिनगी दुर्गति आ गुलामीक जिनगी अछि। ई एकटा कटु सत्य अछि।

'मुदा की ई प्रकृतिक एकटा सीध-सन नियम अछि? की अपना सबके ई हालत अहि कारण अछि जे अप्पन धरती एत्ते गरीब अछि जे अहि पर रहयबलाक एकटा शानदार जिनगी मुहैया नै करा सकैत अछि? नै, दोस्त, नै। हजार बेर नै, इंग्लैंडक माटि उपजाऊ अछि, एतौका जलवायु नीक अछि, अहिमे एत्तेक क्षमता ते अछि जे आब अहि पर जतेक मालजाल रहि रहल अछि, ओहि सँ कतेक गुना बेसी मालजालक नीक जना भरण-पोषण भ' सकैत अछि। हमर असगरे बाड़ासं एक दर्जन दर्जन घोड़ा, बीस गाय, सैंकड़ों भेड़, खूब आराम सं, सम्मानक एहन जिनगी बसर क' सकैत अछि, जेकर आय हम कल्पना नहि क' सकैत छी। हम कियै अहि तंगहालीमे जी रहल छी? कियैकि हम्मर मेहनतक कमोबेश सबटा उपज हमरा सँ मनुख चुरा लइत अछि आ यैह साथी, हम्मर सभ समस्याक जवाब अछि। एकरा एकटा शब्द बयान केल जा सकैत अछि-लोक, मनुख, पुरुख। मनुख हमर असली दुश्मन अछि। मनुखक आगूसं हटा दियो आ भूख आ अतिश्रमक जड़मे सदिखन खत्म भ' जायत। मनुखे टा एकटा एहन जीव अछि जे बिना किछु पैदा केने उपभोग करैत अछि। ओ दूध नै दैत अछि, ओ अंडा नै सेवेत अछि, ओ एत्ते कमजोर अछि जे हर नै चला सकैत अछि। ओ तेज नै दौड़ सकैत अछि जे खरगोश धरि के पकड़ि सकय। तकर बादो ओ सभ मालजालक मालिक अछि। ओ ओकरा सभके काजमे जोइत दैत अछि आ ओकरा खाय लेल एतबैये दैत अछि जे ओ भूखल नै मरय। बाकी सभ किछु ओ अपना लेल राखि लैत अछि। हम अपना माटि सँ माइट गोड़ैत छी। हम्मर लीद सं, गोबर सँ माटि उपजाऊ बनाबैत छी, आ तकर बादो हमरा सभमे एहन कियो नै अछि, जेकरा लग अप्पन चमड़ाक अलावा एकटा दमड़ी सेहो हुए। अहाँ गाय सब, जे एखनि हमर आगू बैसल छी, अहाँ पिछला बरस कत्ते हजार लीटर दूध देने रही? आ की भेल ओहि

दूधके पी के अहाँ के बाछा हट्टा-कट्टा बनतिये? ओहि दूधक एक-एक बूँद अप्पन दुश्मनक गरक नीचां उतरल अछि आ अहाँ मुर्गी, पिछला बरस भरिमे अहाँ कत्तेक अंडा देने छलहूँ आ ओहिमे सँ कुल कत्तेक अंडाक अहाँ चूजा बनैलेहूँ? बाकी सभ अंडा बाजारमे बिकायल लेल पहुंच गेल, जाहि सँ जोंस आ ओकर आदमीक कमाय भ' सकय। आओर अहाँ क्लोवर, की भेल ओहि चारि बछड़ाक, जेकरा अहाँ जन्म देने रहि, आ जे बुढ़ापेमे अहाँक सहारा आ आँखिक तारा बनतिये? साल भरि के होयत ओकरा बेचि देल गेल। आब अहाँ ओहिमे से केकरो दुबारा नै देख सकब। बदलामे अहाँ के की भेटल? चारि बेर जचगि आ खेतमे मेहनतक बदला अहाँ लग मामूली राशन आ एक थानक अलावा आओर की अछि? एकर बादो हम जे कंगाली-बदहालीक जिनगी जी रहल छी, ओकरा सेहो नैसर्गिक उम्र धरि कतय जीबैक लेल देल जायत अछि? हम अपना लेल नै खीझैत या भुनभुनाबैत छी कियैकि भाग्य हमरा थोड-बेस संग देने अछि। अहि काल हम बारह बरस के छी आ हमर चारि सौ सँ बेसी बच्चा भेल। एकटा सुग्गरक यैह ते प्राकृतिक जीवन होयत अछि। मुदा अंतमे कोनो भी जानवर अहि क्रूर तलवार सँ नै बचि सकैत अछि। अहाँ सब जे नन्हा-मुन्ना बलि सुग्गर हमर आगू बैसल छी, अहाँके मौसक लेल पोसल जा रहल अछि। बरस भरि बीतैत-बीतैत अहाँ सब अप्पन जान बचबैत चिचियाइत भागब। अपना सबमे सबके यैह ख़राब हाल होयत। गाय, सुग्गर, मुर्गी, भेड़ सभके। तू बौक्सर, जाहि दिन तोहर ई मजबूत माँसपेशीक ताकत खत्म भ' जाइतो, जोंस तोरा घोड़ा कसाईक लग बेच देतौ। ओ तोहर गला रेततौ आ तोरा खदकाके तोहर बोटी सबके नरहियाक शिकार करयबला कुक्कड़क आगू द' देतौ आ जखन कुक्कड़ बुढ़ा जाइत छै, ओकर दाँत झरि जाइत छै ते जोंस ओकर गरदनसं ईटक एकटा टुकड़ा बन्हिदैत अछि आ ओकरा लग के पोखैरमे ल' ज' के डूबा देत अछि।

'की आब ई गप दिनक रोशनीक तरहे साफ नै अछि साथी जे हमर सभक अहि जिनगीक सभटा विपत्तिक पाछां मनुख जाइतक अत्याचारे अछि? मनुखटा सँ छुटकारा पाबि लियो आ अप्पन सभटा मेहनतक उपज पर अप्पन अधिकार भ' जायत। हम राइतों-राति धनवान आ आजाद भ' सकैत छी। एकरा लेल हमरा सभके की करबाक चाही? यहि जे हम सब दिन-राति लागल रहि,मन लगाके हाड़-तोड़ मेहनत करि आ एतय सँ मनुख जाइतके उखाड़ फेंकी, साथी, अहाँ सबके हमर यैह संदेश अछि। विद्रोह (बगावत), हमरा नै पता जे बगावत कहिया होयत। एकरामे एक सप्ताह सेहो लागि सकैत छी आ सौ बरस सेहो। मुदा हमरा पूरा यकीन अछि जे अपना नीचां बिछायल पुआर दिस हम साफ-साफ़ देखि पाबी रहल छी जे देर-सबेर अपना सबकें न्याय भेटत।

दोस्त, जतेक जिनगी बचल अछि अहाँ के, ओकर एक-एक पल पर अप्पन निगाह गड़ायल राखू आ अहि सँ बेसी खास गप ई अछि जे हमर अहि संदेश के ओकरा धरि पहुंचाऊ जे अहाँ के बाद अहि धरती पर आयत, ताहि सँ आबय बला पीढी ता धरि संघर्ष करैत रहत जा धरि जीत हासिल नै भ' जायत।

'आओर ख्याल राखू, कॉमरेड्स, अहाँ अहि संकल्प सें डिगू नै, कोनो भी तर्क-कुतर्क अहाँ के बरगलायत नै, अहि गप पर कान नै दियो जे लोक आ मालजाल के हित एक सन अछि आ एक्के के सम्पन्नता दोसरके सम्पन्नता अछि। ई सब झूठ अछि, बकवास अछि। लोक अपने टा स्वार्थ साधैत छैथ, कोनो आओर प्राणी के नै, हम सभ मालजाल मे, जीवमे एकता हेबाक चाही, संघर्षक लेल मजबूत भाईचारा। सभ मनुख शत्रु छै। सभ मालजाल साथी, कामरेड छी।

ई सुनैत चारो दिस गजब के शोर उठल। हर्षक ध्वनि हुए लागल। जखन मेजर कहि रहल रहय ते चारि टा मोटका मूस बिल सँ फराक भ' गेल आ उकडू बैस के हुनकर गप ध्यान सँ सुनय लागल। अचानके कुक्कड़ के नजरि ओहि सब पर परि गेल। मूस गजब के फुर्ती सँ अप्पन बिल दिस कुइद के आपन जान बचौलक। मेजर अप्पन पइर के उठा के शांति बना राखैक इशारा केलकण

'कॉमरेड्स,' ओ बाजल, 'एतय हम एकटा गप फरछाय लेबाक चाही। जंगली पशु जेना मूस आ खरगोश- ओ हमर दुश्मन अछि या दोस्त? चलू मतदान क'के तय क' लैत छी। हम बैठकक आगू ई सवाल राखैत छी जे की मूस कॉमरेड छी?'

तुरंत मतदान करा लेल गेल। 'जबरदस्त बहुमत सँ तय क' लेल गेल जे मूस कॉमरेड अछि। ओतय केवल चारिटा प्राणी असहमत छल। तीन कुक्कड़ आ बिलाय। बिलाय क' ल' क'बादमे पता चलल जे ओ दोनों दिस मतदान केने छल। मेजर अप्पन गप कहैत रहल।

'आब हमरा किछु बेसी नै कहबाक अछि। हम सिर्फ अप्पन गप दोहराबैत छी। मनुख आ ओकर सभटा कर्म, तरीकाक प्रति अप्पन दुश्मनीक गप सदिखन याद राखू। जे भी कियो दू पइर सँ चलय, ओ दुश्मन अछि, जे चारि टा पइर सँ चलैत अछि, ओ दोस्त अछि, आओर हाँ, ई सेहो ख्याल राखू जे मनुखक खिलाफ लड़ैत काल एना नै हो जे ओकरे जेना लड़य लागी। ओहि पर विजय प्राप्त करय के बादो ओकर ख़राब आदत के नै अपनायब। कोनो मालजाल कहियो केकरो घरमे नै रहय, या बिस्तर पर नै सुतय या कपड़ा नै पहिरय, या नशा-पइन नै करय, या खैनी नै खाय या पाय के हाथ नै लगाबय, या कारोबार नै करय। मनुख के ई सभटा आदत पाप छी। आओर सबसँ पैघ गप, कोनो मालजाल अप्पन भाय-भैयारी पर अत्याचार नै करय। पिद्दीसन या बरिया, चतुर या भोंदू, हम सब भाय-भाय छी। कोनो मालजाल कहियो कोनो दोसरा मालजालके नै मारय। सभटा मालजाल बराबर छै।

'साथी, आब हम अहाँ के काल्हि राति के अप्पन सपना के मादे बतायब। ई सपना हम अहाँ सब गोटा के आगू कहि नै सकैत छी। ई ओहि कालक धरतीक सपना अछि, जखन एतय लोकक नामो-निशान नै रहल होयत। मुदा यैह सपना हमरा ओ सभ किछु ख्याल पारि देलक जेकरा हम कहिया बिसरि चुकल छलहूँ। कतेक बरख बीतल, जखैन हम छोट-सन सुग्गर छलहूँ, हमर मां आ ओकर साथिन सुग्गारिन एक बड़ पुरना एहन गाना गबैत छलीह, जेकर धुन आ शुरू के तीनटा शब्द हुनका सभ के पता छल। हम अहि धुन के नेना सँ जानैत छलहुं, मुदा अरसा बीतल, ई हमर दिमागे से उतरि गेल।

अचानके काल्हि राति, वैह धुन हमर सपनामे घुरी आयल। आओर अहि सँ पैघ गप ई भेल जे गीतक बोल सेहो घुरी आयल–हमरा पूरा यकीन अछि, ई वैह बोल अछि जे कतेक रास काल सँ मालजाल गबैत छल, आ कतेक रास पीढी धरि हुनकर स्मृति सँ उतरल छल। कॉमरेड्स, आब हम ओहि गीतके अहाँ सबके गाबि के सुनायब। हम बूढ़ भ' गेल छी। हमर आवाज कर्कश भ' गेल अछि, मुदा जखन हम अहाँ के एकर धुन सिखा देब ते अहाँ सब कियो एकरा बड़ नीक सँ गा सकब। गीतक मुखड़ा अछि, 'इंग्लैंडक पशु'।

जनाब मेजर अप्पन गर खखारलक आ गायब शुरू केलक। ओ कहि चुकल छल जे ओकर आवाज कर्कश अछि, मुदा ओ बाद नीक गेलक। ओकर धुनमे कंपकंपी छल। किछु-किछु 'क्लेमैन्टाइन' आ'ला कुकुराचा' के बीच के। गीतक बोल अहि तरहे सँ छल–

इंग्लैंडक मालजाल,
आयरलैंडक मालजाल,
देश-देश आ जलवायुक मालजाल
खुशी सँ सब भरल हमर गप सुनु
स्वर्णिम भविष्यक गप सुनु।
आयत ओ दिन देर-सबेर
दुष्ट लोकके देल जायत खदेड़
आओर इंग्लैंडक फलदार खेतमे
पइर पड़त मॉलजाले टा के।
हम्मर नकेले जायत छूट,
पीठ सँ बोझ जायत छूट,
लगामें, जीन जरि जायत
नै बरसत कोड़ा क्रूर।
कल्पना सँ कत्तो बेसी अमीर
गेहूँ जौ, जई आ घास
बनमेथी, फल्ली, चुंदर-मूल
होयत इक दिन अपना पास।
चमकत रौदमे इंग्लैंडक खेत
पीयब मीठ पानि भरि-भरि पेट
बहुत मीठ सुंगधित वास
ओ दिन जखन हम सब होयब आजाद।
करू ओहि दिनक लेल मेहनत खूब
निकलय प्राण बेशक ओहि सँ पूर्व
गाय, घोड़ा, हंस आ गिद्ध
सभ करू मेहनत आजादीक लेल।
इंग्लैंडक मालजाल,
आयरलैंडक मालजाल,
देश-देश आ जलवायुक मालजाल
ध्यानसं सुनु आ खूब पसारू
स्वर्णिम भविष्यक हमर गप सुनाऊ।

अहि गीतक गाबैत सभटा मालजाल चरम उत्तेजना सँ भरि गेल। मेजर एखैन गाना खत्म नै केने छल कि सभटा मालजाल गायब शुरू क' देलक। सबसें भोंदू जालमालक जुबान पर एकर धुन चढि गेल आ ओ सेहो कुछेक शब्द सीखि गेल। जतय धरि बुधियार जानमाल जेना सुग्गर आ कुक्कड़क सवाल छल,किछु कालमे ओकरा सभके पूरा गाना याद भ' गेल। आ फेर कनि काल बाद शुरुआती अभ्यास सँ पूरा बाड़ा जबर्दत स्वर मेलक संग 'इंग्लैंडक जानमाल' गीत गाबय लागल। गाय ओकरा रम्भाके गैलक। कुक्कड़ रिरियाके। भेड़ सभ मिमियाके अप्पन स्वर देलक ते घोड़ा हिनहिनाके संग देलक। बत्तख सभ काँ-काँ केलक। गीत सबके एत्तेक उल्लास सँ भरि देलक कि ओ एकरा लगातार पाँच बेर गेलक। ओ एकरा राति भरि गायत रहतिये, जों बीचमे रुकावट नै आबि जैतिये।

दुर्भाग्य सँ हल्ला-गुल्लासं मिस्टर जोंसक नीन टूटि गेल। ओ बिछौना सँ उछलल। ओकरा पक्का यकीन भ' गेल छल जे बाड़ामे कोनो नरहियाघुसि आयल अछि। ओ अप्पन बेडरूमक कोनमे सदिखन पड़ल रहय बला बंदूक उठेलक आ अन्हारमे तड़ातड़ छौ टागोली चलैलक। बंदूकक गोली बखारक भीतमे जा धँसल। बैसकी अफरा-तफरीमे खत्म भ' गेल। सभ कियो अप्पन माथ नुकबैक लेल ठाम दिस भागल। चिड़ै सभटा टाँड़ पर जा उड़ल, जालमाल पुआलमे पसरि गेल आ पल भरिमे पूरा बाड़ा नींदक आगोशमे छल।

2

तीन राति बाद जनाब मेजर नींनमे चलि बैसल। ओकर शव बगीचाक आगू गाइर देल गेल।

मार्चक मास शुरू भ' गेल छल। अगला तीन मासक काल ओतय बड़ भागा-दौड़ी रहल। मेजर भाषणमे बाड़ाक बेसी बुधियार जानमाल के जीवनक एकटा नजरिया सँ परिचित करा देने छल। ओकरा पता नै छल जे मेजर जाहि बगावतक भविष्यवाणी केने छल, ओ कहिया होयत। ई सोचबाक कोनो कारण ओकरा सभ लग नै छल जे बगावत ओकरा सभ के जीते-जी होयत या नै, मुदा एकटा गप बिलकुल साफ़ छल जे अहि बगावतक लेल अपना के तैयार राखब ओकर फर्ज अछि। स्वाभाविक छल जे दोसरा के सिखायब-पढायबक आ संगठित करय के काजक भार सुग्गरक कान्हा पड़ आबि गेल छल। वैह छल जेकरा आमतौर पर सभ मालजाल सँ बेसी चतुर मानल जायत छल। सुग्गरमे जे भी बेसी नीक छल, ओ स्नोबॉल आ नेपोलियन नामक दूटा जवान सुग्गर छल जकरा बधिया करल गेल छल। ओकरा मिस्टर जोंस बेचबाक ख्याल सँ पालि रहल छल। नेपोलियन कद-काठीमे पैघ, देखयमे खूँखार बर्कशायरक सुग्गर छल। ओ बाड़ामे बर्कशायरक असगरे जीव छल। ओ बेसी गप नै करैत छल, मुदा अप्पन मरजीक मालिकक रूपमे विख्यात छल। स्नोबॉल नेपोलियनक तुलनामे बेसी नीक सुग्गर छल। गपमे तेज आबड़ आविष्कारशील। मुदा ओकरा ल' क' यैह बुझल जायत छल जे ओकर चरित्रमे ओतेक गहराई नै अछि। बाड़ा पर जतेक सुग्गर छल, ओ सब माँसक लेल पालय जाय बला सुग्गर यानी पोर्क छल। ओहिमे जे सबसें नामी-गिरामी छल, एकटा छोट स्क्वीलर नामके मोटका सुग्गर। ओ भरि-भरि गाल, मिचमिचाबैत आँखि आ फुर्ती बला देह आ कनफट्टू आवाजक मालिक छल। ओ गपशप करयमे उस्ताद छल, ओ जखैन कखनो कोनो मोश्किल मुद्दा पर बहस करैत छल ते फुद्कैत रहैत छल आ अप्पन नागैर के तेजी सँ हिलबैत रहैत छल। ओना ओकर नांगरि देखयमे बड़ नीक छल। स्क्वीलरक' ल' क' दोसरा सभके कहना छल जे ओ एत्ते माहिर अछि जे करिया के उज्जरमे बदैल सकैत अछि। अहि तीनो टा मिलके जनाब मेजरक उपदेश के एकटा पूर्ण विचारधाराक रूपमे परिष्कृत केने छल आ ओकरा ओ पशुवादक नाम देने छल। मिस्टर जोंसके सुति गेला के बाद सप्ताहमे कतेक राति जगि के ओ बयानमे चुपका बैसकी करैत रहल आ पशुवादक सिद्धांत एक-दोसरा के बुझाबैत रहल। शुरू-शुरूमे ओकरा सभके बड़ मूर्ख आ उदास बला मनक सामना करैक पड़ल। किछु मालजाल मिस्टर जोंस, जेकरा ओ मालिक कहैत छल, ओकरा प्रति कर्तव्यक, निष्ठाक वास्ता देलक आ अहि

तरहक मौलिक टिप्पणी जे 'मिस्टर जोंस हमर भरण-पोषण करैत अछि, जे ओ चलि गेल ते हम भूखल मरि जायब। दोसर अहि तरहक सवाल केलक जे हम अहि गपक चिंता कियै करि जे हमर मरलाहक बाद की होयत अछि? या जों कोनो तरह ई बगावत होयत अछि जे एकरा सँ की फर्क पड़ैत अछि जे हम एकरा लेल काज केलहुं या नै। हुनका भेजामे इ गप बैसबयमे सुग्गर के बड़ मेहनत करय पड़ल जे एहन होचब पशुवादक भावनाक खिलाफ अछि। सबसें बेसी मुर्खाहा बला सवाल उज्जर घोड़ी मौली पूछने छल। स्नोबॉल संसबसें पहिने सवाल वैह केने छल जे की बगावतक बाद गुड़ भेटत?'

'नै,' 'नै,' स्नोबॉल कड़ा भ' के उत्तर देलक, 'अहि बाड़ामे गुड़ बनाबैक लेल हमरा लग कोनो साधन नै अछि। एकर अलावा, तोरा गुड़के की जरुरत? तोरा जतेक चाही जई आ सूख्खल दुभरी भेटतौ।'

'आओर', 'की हम तखनो अप्पन अयाल पर रिबन लगा सकब?' मौली पूछलक।

'कॉमरेड', स्नोबॉलक जवाब छल, 'ई रिबन जेकर पाछां तू एतेक पागल रहैत छी, गुलामीक बिल्ला छियो। तोरा एतबे-टा गप बुझायमे नै आबय छौ जे स्वतंत्रता रिबन सँ बेसी दामी होयत छैण'

मौली सहमत ते भ' गेल मुदा ओ बेसी संतुष्ट नै बुझा राहल छल।

सुग्गर के पालतू कारी कव्वा मौसेस द्वारा पसरल गेल झूठ गपक खंडन करयमे बड़ मेहनत करय पड़ल। मौसेस, जे मिस्टर जोंसक मुँहलगा छल, असलमे जासूस छल आ चुगली करैत रहैत छल। एकर बादो, ओ गपशप करयमे माहिर छल। ओकर दावा छल जे ओ एक एहन रहस्यमय पहाड़के मादे जानैत अछि जकर नाम मिसरी पर्वत अछि आ मरलाहके बाद सभ जानवर ओतय पहुँचैत अछि। ई पहाड़ मेघक ऊपर आकाशमे कत्तो अछि। मौसेसक कहना छल जे मिसरी पर्वत पर सप्ताह के सातों दिन रवि रहैत अछि और तिपतिया दुभरी ते ओतय सालक सभ मौसममे उगैत अछि। गुड़क भेली आ अलसीक खली ते ओतय बाड़ा पर उगैत अछि। सभ मालजाल मौसेससं नफरत करैत छल कियैकि ओ बात बड़ बनाबैत छल मुदा काज किछु नै करैत छल। मुदा किछु एहनो छल जे मिसरी पहाड़ पर विश्वास करैत छल। सुग्गर के तर्क द' क' ओकरा मनाबयमे बाद मेहनत करय पड़ल जे कत्तो एहन ठाम नै अछि।

ओकर सबसें बेसी निष्ठावान चेला गाड़ीमे जोतय जाय बला दूटा घोड़ा, बौक्सर आ क्लोवर छल। अहि दुनूक संग यैह सबसे पैघ दिक्कत छल जे कि ओ अपना आप सँ किछु नै सोचि सकैत छल। मुदा एक बेर सुग्गर के अपना गुरु मानलाके बाद ओकरा सभ के जे किछु बताओल गेल, ओकरा सभके ग्रहण क' लेलक। आ ओकरा सरल तर्क सँ दोसर मालजाल धरि पहुंचैलक। ओ बखारमे होयबला गुप्त बैसकीमे बिना नागा आबैत छल आ इंग्लैंडक मालजाल बला गीत गबैत छल। बैसकी सदिखन अहि गीतसं समाप्त होयत छल।

आब भेल ई जे बगावत कोनो उम्मीद सँ बाद पहिने आ आसानी सँ हासिल क' लेल गेल। पिछला बरख मिस्टर जोंस कठोर मालिकक संग एकटा समर्थ किसान सेहो छल। मुदा इम्हर किछु काल सँ ओकर दुर्दिन चलि रहल छल। एकटा मुकदमामे पाय गंवाबयके बाद ओकर दिल टूटि गेल छल। ओ अप्पन सेहतक परवाह केने बिना बड़ शराब पीब शुरू क' देने छल। ओ भरि दिन भंसाघरमे अप्पन विंडसर कुर्सी पर पसरल रहैत छल। अखबार पढ़ैत छल, पीयत रहैत छल आ कखनो-कखनो बीयरमे भीजल डबलरोटीक टुकड़ा मौसेस के खुवाबैत छल। ओकर नौकर-चाकर सुस्त आ बेईमान छल। खेत-पथारमे खर-पतवार उग आयल छल। मकानक छत मरम्मतिके जरुरत छल, बाड़ा देखभाल मंगेत छल आ मालजालके पूरा खाना नै भेटि रहल छल।

जून आबि चुकल छल आ सूखल घासक फसल कटय लेल एकदम तैयार छल। गर्मी मासक बीचक राति यानी 24 जून के शनि दिन मिस्टर जोंस विलिंगडन गेल आ 'रेड लॉयन बार' मे बैस के एत्ते पीलक जे रविक दुपहरिया धरि घुरि के नै आयल। ओकर नौकर-चाकर भोरम-भोर गायक दूध दुहिके खरगोशक शिकार करहि लेल निकलि गेल। हुनका सभके अहि गपक रत्ती भरि परवाह नै छल जे जानमालक दाना-पानी सेहो करबाक अछि। मिस्टर जोंस घुरि के तुरंत ड्राइंग रूमक सोफा पर सुतहि के लेल चलि गेल। अप्पन मुंह ओ 'न्यूज ऑफ द वर्ल्ड' अखबार सँ ढेक लेलक। ताहि सँ जखन साँझ भेल तखनो मालजाल सब बिना चारा-पइनके ठाड़ छल। हालत ई भ' गेल जे ओकरा सँ रहल नै गेल। एकटा गाय भंडारघरक दरवज्जा के अप्पन सींग सँ तोड़ि देलक। आ सभटा मालजाल डिब्बा, पीपामे सँ अपने से खाना ल' क'खायब शुरू क' देलक। ओहि काल मिस्टर जोंसक आँखि खुलि गेल। अगला पल ओ आ ओकर चारूटा नौकर भंडार घरमे छल। ओकर सभके साथमें कोड़ा छल। आबैक संगे ओ चारू दिस कोड़ा बरसायब शुरू क' देलक। भूखल-प्यासल मालजाल एकरा सँ बसे बर्दास्त नै क' सकैत छल। एक आम सहमति सं, हालांकि अहि क' ल' क' पहिने से किछु तय नै कल गेल छल, सब जानमाल अप्पन अत्याचारी पर हमला क' देलक। मिस्टर जोंस आ ओकर लोक अचानके पाओल जे ओकरा सभ पर चारू दिस सँ घूँसा, लाइतक बरसात भ' रहल अछि। स्थिति पूरा तरहे नियंत्रण सँ बाहर भ' चुकल छल। ओ सभ कहियो जानमाल के अहि तरहक बर्ताव करैत नै देखने छल। आय धरि ते ओ जखैन मन चाहलक अहि प्राणी सभ पर कोड़ा फटकारेत आ मरबाक आदी भ' गेल छल। अहि तरहे अचानके अहि सभ प्राणी के ठाड़ हय सँ ओहि सभ लोकक होश ठिकाना लागि गेल। ओकरा सभके डरा देलक।

एक-दू पल के बीतैत आ नै बीतैत ओ पांचो मुख्य सड़कक दिस जाय बला बैलगाड़ीक बाट पर जान बचबैत सरपट दौड़ि रहल छल। ओकर पाछां विजय के हुंकार भरैत मालजाल बढ़ल चलल आबि रहल छल।

जखन मिसेज जोंस अप्पन खिड़की सँ ई सब होयत देखलक ते ओ लपैक के एकटा थैला उठैलक, ओहिमे फटाफट किछु काजक चीज ठुसलक आ नुकाके सँ दोसर बाट सँ बाड़ा सँ बाहर निकलि गेल। मौसेस अप्पन टाँड़ सँ फुदकल आ जोर-जोर सँ काँव-काँव करैत ओकर पाछां-पाछां पंख फड़फड़ाबय लागल। अहि बीचमालजाल मिस्टर जोंस आ ओकर लोक के सड़क पर खदेड़ देलक आ ओकर पाछां पाँच

सलाखबला गेट भड़ाक सँ बंद क' देलक। आ अहि तरहे एकरा सँ पहिने कि ओ बुझि सकैत छल कि ई की भ' गेल, बगावतक विजय केर बिगुल बजि चुकल छल। जोंस खदेड़ल जा चुकल छल। मैनर फार्म आब ओकर सबहक छल।

पहिने किछु काल धरि ते जानमाल के अप्पन सौभाग्य पर विश्वासे नै भेल। ओ पहिने काज ई केलक जे एकटा झुंड बनाके ई देखय के लेल बाड़क चहारदीवारीक चक्कर लगैलक जे कत्तो कोनो लोक अहिमे नुका के ते नै बैसल अछि। एकर बाद ओ दौड़ के बाड़क मकान दिस आयल जे ओतय सँ जोंसक क्रूर शासनक चीजक आखिरी नामो-निशान मिटा देल जाय। अस्तबलक सिरे पर बनल साज-सामानक कमरा तोड़ि के खोलि देल गेल। लगाम, नकेल, कुक्कुड़क जंजीर, ओ डराबय बला चक्कू-छुरी, जाहि सँ मिस्टर जोंस सुग्गर आ मेमनाके बधिया करैत छल, अहि सभ चीज के इनार मे फेकि देल गेल। सभटा डोरी, गल-फासी, घोड़क आँखि पर बान्हल जाय बाली पट्टी, अपमानजनक तोबड़ा जेहन चीज के आँगनमे जड़ैत धूरक आगि में ध' देलक। यैह हाल कोड़ा के भेल। जखन जानमाल कोड़ामे आगि के लपट देखलक ते सभ खुशीसं उछले लागल। स्नोबॉल ओहि रिबनों के सेहो आगि में द' देलक जाहि सँ हाट-बाजारक दिनमे घोड़ाक अयाल आ पूँछ के अकसर सजाओल जायत छल।

ओकर कहब छल जे,'रिबन के वर्जित मानल जेबाक चाहि, ई मनुख जाइतक निशानी अछि। सभ मालजालके नागैट रहबाक चाही।'

जखन बॉक्सर ई सुनालक ते लपकि के घास-फूसक बनल अप्पन छोट-सं हैटल' आनलक आ ओकरा सेहो बाकी चीजक संग आगि में झोंकी देलक। अहि हैट के लगाके ओ सभ गर्मीमे माछी सँ अप्पन कान के बचबैत छलण

किछु क्षणमे जानमाल ओ सभटा चीज नष्ट क' देलक जे ओकरा सभके मिस्टर जोंसक याद दियाबैत छल। नेपोलियन तब सभके भंडार घरमे ल' गेल आ सबके मकई के डबल राशन देलक। कुक्कड़ के दू-दूटा बिस्कुट भेटल। एकर बाद ओ शुरू सँ आखिरी धरि लगातार सात बेर 'इंग्लैंडक मालजाल' बला गीत गैलक आ फेर सभ सुतय लेल चलि गेल। आय जेहन नींन ओकरा सभके पहिने कहियो नै आयल छल।

मुदा अगला भोर ओ हमेशा जेना उथल। ओकरा सभमे अचानक अप्पन जीवनमे घटल अहि शानदार घटनाक ख्याल आयल। ओ सभ चरागाह दिस लपकल। चरागाहसं कनि आगू एकटा टेकरी छल जाहि सँ लगभग पूरा बाड़ाक नजारा लखाह देत छल। सभ जानमाल अहि टेकरी पर चढि गेल आ प्रभात वेलाक साफ इजोतमे चारू कात निहारय लागल। हाँ, ई अप्पन अछि। जतय धरि नजरि जायत छल, ओतय धरि सभ किछु अप्पन अछि। अहि विचारमे भावविभोर भ' के ओ गोल-गोल घुमय लागल। आनंद आ उल्लासक मारि हवामे अपना के उछालय लागल। उछलय लागल। ओस सँ भीजल जमीन पर लोटय लागल। ओ गर्मीके मीठगर दूब मुंह भरि के खैलक।

ओ सभ करिया माइट के हवामे उछालैत आ एकर मदमस्त गंधके अप्पन फेफड़ामे भरलक। एकर बाद ओ पूरा बाड़ाक निरीक्षण करय के नीयत सँ दौरा केलक आ खेती के जोगर जमीन, डूब के मैदान, बगीचा, जंगल-झाडक मुआयना केलक। एना लागैत छल जे अहि चीजक ओ कहियो पहिने नै देखने छल। एखनो ओकरा सभके जेना विश्वास नै भ' रहल छल जे ई सभ किछु ओकर अप्पन अछि।

एकर बाद ओ पांतिमे ठाड़ भ' के बाड़ाके मकान दिस घुरि के आयल आ फर्म हॉउसक दरवाजा पर आबि के चुपचाप ठाड़ भ' गेल। ई सेहो आब ओकरे सभके छल, मुदा ओ भीतर जायक लेल डरायत छल। अलबत्ता, किछु कालक बाद स्नोबॉल आ नेपोलियन अप्पन कान्हा सँ धकेल क'दरवाजा खोलि देलक आ जानमाल इकहरी पांति बना के भीतर आबि गेलण ओ चलैत काल एत्ते सजग छल जे कत्तो कोनो चीज अस्त-व्यस्त न भ' जाय। ओ एक कमरा सँ दोसर कमरामे पंजाक बल चलैत रहल। ओ फुसफुसा सँ बेसी ऊँच आवाजमे गप करय सँ सेहो डरैत छल। ओ अविश्वसनीय विलासिता, पंखबला गुदगुदा गद्दा बला बिछावन, आइना, घोड़ाक केस सँ बनल सोफा, ब्रुसेल्सक कालीन, ड्राइंगरूममे तिपाई पर राखल रानी विक्टोरियाक तस्वीर, अहि सभ चीज कें विस्मय सँ निहारि रहल छल। ओ एखन सीढ़ी सँ नीचां उतरि रहल छल जे पता चलल जे मौली गायब अछि। वापस जाके ओ पाओल जे ओ सबसं नीक बला बेडरूममे रुकल रहि गेल। ओ मिसेज जोंसक श्रृंगारक मेजसं एकटा नीला रिबन उठा लेने छल आ ओकरा अप्पन कान्हाक आगू राखि अपना के शीशामे बड़ फूहड़ तरीका सँ निहारि रहल अछि। दोसर मालजाल ओकरा जोर सँ बिगरल आ बाहर चलि गेल। भनसाघरमे छींक पर सुग्गरक किछु सूखल मौस टांगल छल। ओकरा बाहर आनि के जमीनमे गाइर देलक। भनसाघरक कोठीमे बीयरक पीपाके बौक्सरक एड़ीक ठोकर सँ लुढ़का देल गेल। एकर अलावा, कोनो चीज के हाथो नै लगायल गेल। हाथों-हाथ बहुमत सँ ई संकल्प लेल गेल जे फार्म हाउस के संग्रहालयक रूपमे सुरक्षित राखल जाय। सभ कियो ई गप सँ सहमत भ' गेल जे कहियो भी कोनो मालजाल अहिमे नै रहत।

मालजाल नाश्ता केलक। फेर स्नोबॉल आ नेपोलियन सभके दोबारा बजैलकण

'संगी,' स्नोबॉल बाजल, 'एखैन साढ़े छह बाजल अछि आ अपना सभके आगू पूरा दिन पड़ल अछि। आय हम सभ सूखल दूबक फसल काटब शुरू करैत छी। मुदा अहि सँ पहिने एकटा आओर मामला अछि, जेकरा हमरा सभके पहिने सलटाना अछि।'

आब सुग्गर रहस्योद्घाटन केलक जे पिछला तीन मासमे ओ कूड़ाक ढेरमे भेटल जोंसक बच्चाक अक्षर ज्ञानक एकटा किताबमे सँ पढ़ब आ लिखब सीखी लेने अछि। नेपोलियन कारी आ उज्जर रंग-रोगनक डिब्बे मंगबैलक आ सबके मुख्य सड़कक दिस पाँच सलाखा बला गेट दिस ल' गेल। फेर स्नोबॉल (ओकर हस्तलिपि नीक छल) अप्पन पइरक दू गाँठक बीच कूची थामलक आ गेटक ऊपरबाली पट्टी सँ मैनर फार्म पर रंग फेर क' ओकरा मेटा देलक आ ओहि ठाम पशुबाड़ा पेंट क' देलक। आब अहि बाड़ाक नाम सेहो रखबाक छल। एकर बाद ओ बाड़ाक मकान दिस घुरल। ओतय स्नोबॉल आ नेपोलियन एकटा सीढ़ी मँगबैलक। ओकरा अहि पैघ बखारक आखिरी भीतक संग ठाड़ क'

देलक। ओ स्पष्ट केलक जे पिछला तीन मासक अध्ययन सँ ओ पशुवादक सिद्धांत के सात धर्मादेशमे ढालयमे सफल भ' गेल अछि। आब अहि सात धर्मादेश के भीत पर अंकित कैल जायत। ओ धर्मादेश कहियो नै बदलय बला कानून होयत आ बाड़ाक सभटा जानमाल के मरैत दम धरि एकर पालन करय पड़त। कनि-टा मोश्किलक बाद (आखिर एकटा सुग्गर के सीढ़ी पर संतुलन बनाके राखब आसान नै होयत अछि) स्नोबॉल सीढ़ी पर चढि गेल आ काज शुरू क' देलक। स्क्वीलर दू-तीन पाए नीचां ठाड़ रंगक डिब्बा थामल रहल। भीत पर पैघ-पैघउज्जर अक्षरोंमे धर्मादेश लिखि देल गेल। ओकरा तीस गजक दूरी सँ सेहो पढ़ल जा सकैत छल।

सात धर्मादेश

1. जे कियो दू पइर सँ चलैत अछि, ओ शत्रु अछि।

2. जे कियो चारि पइर पर चलैत अछि, या जेकरा लग पंख अछि, ओ मित्र अछि।

3. कोनो जानमाल कपडा नै पहिरत।

4. कोनो जानमाल शराब नै पीयत।

5. कोनो पशु कोनो दोसर पशु के नै मारत।

6. कोनो पशु बिस्तर पर नै सुतत।

7. सभ पशु बराबर अछि।

सभ किछु बिलकुल साफ़-साफ़ लिखल गेल छल। सिर्फ मित्रक ठाम मितर लिखल गेल आ एकठाम ग उल्टा लिखला गेल छल। बाकी सभ ठाम वर्तनी ठीक छल। स्नोबॉल धर्मादेश ऊँच आवाजमे पढिक' सुनैलक जाहि सँ सब जानि सकय। सभ जानमाल पूर्ण सहमतिमे अप्पन मुंडी हिलैलक, आओर जे बेसी बुधियार छल, ओ तत्काल धर्मादेश के कंठस्थ करब शुरू क' देलक।

'आब, साथी' स्नोबॉल रोगन-कूची एक दिस फेकैंत बाजल, 'सुखल घास दिस चलू। हम ओकरा अप्पन इज्जतक सवाल मानि लिओ जे जोंस आ ओकर नौकर-चाकर जतेक काल लगबैत छल ओहि सँ पहिने हम सब ओहि फसल के काटि लेब।'

तखने तीनटा गाय जोर सँ रंभैलक। एहन लागल, जे ओ बड़ काल सँ बेचैन छल। हुनका सबके पिछला चौबीस घंटे सँ दूहल नै गेल छल। हुकर थन फाटय बला छल। कनि काल सोचय के बाद सुग्गर बाल्टी मंगबैलक आ बाद नीक सँ गाय सभके दुह लेलक। ओकर गोड़ अहि काजक लेल एकदम अनुकूल छल। जल्दिये ओतय झागदार मलाईदार दूध सँ भरल पाँचटा बाल्टियाँ नजरि आबय लागल। कतेक जानमाल ओहि बाल्टी के निहारि रहल छल, 'अहि सभटा दूध के की कायल जायत?' कियो पूछलक।

'जोंस कहियो-कहियो कनि-टा दूध हम्मर सानीमे मिला देत छल।' मुर्गीमे सँ एकटा बाजल।

'दूधक चिंता छोडू, कॉमरेड्स,' नेपोलियन गरजल, ओ बाल्टीक आगू आबि गेल,'एकरो ठौर-ठिकाना लगा देल जायत। फसल बेसी जरूरी अछि। कॉमरेड स्नोबॉल अहाँके बाट देखाओत, हम बस आबि रहल छी। आगू बढ़ू, कॉमरेड्स सुखल घास अहाँ के इंतजार क' रहल अछि।'

आओर अहि तरहे सभटा जानममल घासक मैदान दिस मार्च करैत चलल। साँझ के जखन ओ घुरि के आयल ते पायल जे दूध गायब छल।

3

ओ सभ सुखल घासके काटय लेल बड़ मेहनत केलक। खून-पसीन एक क' देलक। मुदा हुनकर सभहक मेहनत रंग अनलक। सुखल घासक फसल हुनकर सभहक उमेद सँ कत्तो बेसी भेल छल।

कतेक बेर काज बाद मुश्किल होयत अछि। औजार लोकक इस्तेमालक लेल बनाओल जायत अछि, नै कि मालजालक लेल, आओर एकरा सँ तकलीफक गप ई छल जे कोनो मालजाल एहन औजारक इस्तेमाल नै क' सकैत छल, जेकरा पिछला दू टांग पर ठाड़ हैय के जरूरत पड़ल हुए। मुदा सुग्गर एत्तेक चतुर छल जे सभ मोश्किलक कोनो नै कोनो उपाय खोजि निकलैत छल। जतय धरि घोड़ाक सवाल छल, ओ खेतक चप्पा-चप्पा सँ वाकिफ छल आ सत ते ई छल जे निराई-कटाईमे ओ जोंस आ ओकर नौकर सभ सँ बेसी माहिर छल। सुग्गर असलमे कोनो काज नै करैत छल, मुदा दोसराके काज बताबैत छल आ ओकर काज देखैत छल। अप्पन विशिष्ट ज्ञानक कारण हुनका लेल ई स्वाभाविके छल जे ओ नेतृत्व सँभालि लैत छल। बॉक्सर आ क्लोवर अपना के कटाई मशीनमे लगा दैत छल या घोड़ा गाड़ीमे जोइत लैत छल (ओहि कालमे चाबुक या कोड़ाक कोनो जरूरत नै रहि गेल छल) आ खेतमे गोल-गोल घुमैत मड़ाई करैत छल। हुनका पाछां-पाछां एकटा सूअर चलैत रहैत छल जे मौकाक अनुसार, 'आओर तेज कॉमरेड्स' या 'शाबाश! कॉमरेड्स!' के आवाज निकलैत रहैत छल।' छोटसं छोट प्राणी सेहो सुखल घास काटय आ बटोरयमे लागल रहल। एतय धरि जे मुर्गी आ बत्तख सेहो तापैत रौदमे दिन-भरि बुइल-बुइल के मेहनत करैत आ अप्पन चोंचमे घासक छोट-छोट सँ तिनका आनैत छल आ ल' जायत छल। जखन ओ फसलक कटाईक काज ख़त्म केलक ते ओ जोंस आ ओकर नौकरके के लागय बला समय सँ दू दिन कम्मे लागल। एतबे टा नै, बाड़ा एत्तेक फसल आय धरि कहियो नै देखने छल। रत्ती भरि बर्बादी नै भेल। मुर्गी आ बत्तखो अप्पन तेज नजरि सँ आखिरी तिनका धरि बेन लेलक आ कोनो मालजाल मुट्ठी भरि अनाजक चोइर नै केलक।

भरि गर्मी बाड़ाक काज घड़ीक सूइया जेना चलैत रहल। जानमाल खुश छल, कियैकि ओ कहियो कल्पना नै केने छल जे ई संभव भ' सकैत अछि। अन्नक दाना-दाना सँ हुनका बेपनाह जुड़ाव महसूस भ' रहल छल। खुशी भ' रहल छल। आब ई सतमे हुनकर सभहक अन्न छल। एकरा ओ अपना आ अप्पन लोकक लेल उगेने छल। कोनो डाह बला मालिक ओकरा ई ओहिना नै देलक। दू कौड़ीक परजीवी लोकके चलि गेलाहक बाद हुनका सभहक खायके लेल बड़ रास चीज छल। आब हुनका लग फुर्सत नै छल, मुदा मालजालके एकर अनुभव नै छल। हुनका आगू कतेक रास कष्ट आयल। उदहारणक लेल, अगला बरख जेखन ओ मकईक फसल काटलक ते हुनका एकर मड़ाई पुरना तरीका सँ करय पड़ल आ भुस्सी निकलैक ले फूँकें मारिके काज करय पड़ल, कियैकि बाड़ामे भूसी निकालैल लेल कोनो मशीन नै छल। मुदा सुग्गर अप्पन बुधियारी आ बॉक्सर अप्पन गजब ताकत सँ काज निकालि लैत छल। बॉक्सर सबहक

आँखक तारा छल। ओ जोंसक कालमे सेहो कठोर परिश्रमी छल। मुदा आब लागैत छल, ओहिमे तीन घोड़ाक ताकत आबि गेल अछि। एहनो दिन रहल जखन पूरा बाड़ाक सभ टा काज ओकर मजबूत कान्हा पर आबि गेल प्रतीत भेल। भोरी सँ राती धरि ओ खटैत रहल। कखनो धकेलैत, कखनो खींचैत। ओ हमेशा ओहि ठाम नजरि आयल, जतय काज बाद मोश्किल होयत। ओ एकटा मुर्गा सँ ई तय क' लेने छल जे ओ भोरे-भोर दोसरा सँ आध घंटा पहिने जगा दिये। ओ दिनक नियमित काज शुरू होय संपहिने, जतय कत्तो बेसी जरूरी हुए,स्वेच्छा सँ किछु काज क' देत। सभटा समस्या, सभटा बाधाक लेल ओकर एक्केटा जवाब होयत छल,'हम आओर बेसी परिश्रम करब' ,एकरा ओ अप्पन व्यक्तिगत लक्ष्य जेना अपना लेने छल। मुदा सभ कियो अप्पन क्षमताक अनुसार काज करैत छल। उदाहरणक लेल, मुर्गी आ बत्तख फसलक काल इम्हर-उम्हर दाना बीन क' पाँच किलो वजन मकई बचैलक। कियो चोइर नै केलक। कियो अप्पन खुराक पर भुनभुनैलक नै। पुरना दिनक झगड़ा, चुगलखोरी, जलब-भुनब, ओहि जीवनक सबटा सामान्य गप गायब भ' चुकल छल। कियो कोनो काज सँ जी नै चुरबैत छल। ई सत अछि जे मौली भोरमे उठय के आदी नै छल आ अहि आधार पर काज जल्दी छोड़ि के आबि जायत छल जे ओकर सुममे कोनो कंकड़ फँसि गेल अछि। एकर अलावा, बिलायक व्यवहार किछु अजीब-सं छल। जल्दिये ई पाओल गेल जे जखन कोनो काजक काल होयत छल, बिलाय कत्तो नजरि नै आबैत छल। ओ लगातार कतेको घंटा गायब रहैत छल, आ फेर खायके काल या एकदम साँझके सभटा काज निपैट गेलाके बाद नजरि आबैत छल, जेना किछु भेले नै हुए। मुदा ओ एक-सं एक नीक बहाने मारैत छल। ओ इत्ते प्यार सँ घुरघुर करैत छल जे ओकर साफ नीयत पर अविश्वास करब संभव नै होयत छल। बेचारा बैंजामिन गधा, बगावतक बाद गधे रहल। ओ पहिने के तरहे, जेहन ओ जोंसक वक्त करैत छल, कनि-कनि अड़ियल तरीका सँ अप्पन काज क' देत छल। नै कखनो जी चुरायब आ नै कोनो बेसी काज करय के लेल स्वेच्छा सँ आगू आयब। ओ बगावत आ ओकर परिणाम क' ल' क' कोनो राय जाहिर नै करैत छल। ई पूछला पर की ओ आब जोंसक चलि जाय सँ बेसी खुश अछि, ओ कहैत छल, 'केवल गधे टा लंबे काल जीबैत अछि।' आय धरि अहाँ सभ कियो मरल गधा नै देखने होयब, आ दोसरा के ओकर अहि गोलमाल उत्तर सँ संतुष्ट रहि जा पड़ैत छल।

रवि दिन कोनो काज नै होयत छल। नाश्ता आओर दिन जेनाक तुलनामे एक घंटा देर सँ भेटैत छल आ नाश्ताक बाद एकटा उत्सव होयत छल। ई उत्सव हर हफ्ता बिना नागा मनाओल जायत छल। सबसें पहिने झंडा फहरायल जायत छल। स्नोबॉलके औजार-घर सँ मिसेज जोंसक एकटा पुरना, हरियर रंगक मेजपोश भेंट गेल छल। ओ ओहि पर एकटा सुम आ एकटा सींग उज्जर रंगसं पेंट क' देने छल। ओहि फार्म हाउसक बगीचामे सभ रविक भोर ध्वज डंडा पर चढ़ाके फहरायल जायत छल। स्नोबॉल स्पष्ट केने छल जे झंडा अहि लेल हरियर अछि कियैकि ई इंग्लैंडक हरल-भरल खेतक प्रतीक अछि, जखन कि सुम आ सींग मालजालक अहि भावी गणतंत्र दिस इशारा करैत अछि, जखन मनुख जाइतके पूरा तरहे खदेड़ देल गेल। झंडा फहराबै के बाद सभटा पशु बड़का बखारमे मार्च करैत जायत छल आ आम सभाक लेल जमा होयत छल। एकरा बैसकी कहल जायत छल। इत्ते अगला सप्ताहक काजक योजना बनाओल जायत छल। संकल्प आगू राखल जायत छल आ ओहि पर बहस होयत छल। सदिखन सूअर संकल्प आगू राखैत छल। मालजाल वोट देब ते सीख गेल मुदा अपना दिस सँ कोनो संकल्प राखय के गप कहियो नै सोचि सकलक। स्नोबॉल आ नेपोलियन बहसमे सबसें बेसी बढ़ि-चढ़िके हिस्सा लेत छल, मुदा ई पाओल गेल जे ओ दुनू कहियो एक-दोसरा सँ सहमत नै होयत छल। ओहिमे सँ कोनो एक गोटा सुझाव राखैत छल, दोसर हर हालतमे ओकर विरोध करैत छल। एतय धरि जे जखैन ई संकल्प लेल गेल जे बगीचाक पाछां एक छोट-सन बाड़ा ओहि मालजालक आरामघरक लेल फराक राखल जाय जे काज करय के उम्र पार क' चुकल अछि, ई एहन गप छल जाहि पर केकरो कोनो एतराज नै भ' सकैत छल, मुदा अहि गप पर धुरछार बहस भेल जे जानमालक प्रत्येक जाइतक सेवानिवृत्तिक सही उम्र की राखल जाय। बैसकी सदिखन 'इंग्लैंडक जानमाल' गीतक संग समाप्त होयत छल, दुपहर काल मनोरंजनक लेल रखल जायत छल।

सुग्गर साज-सामानक कोठलीके अप्पन मुख्यालय के रूपमे चुनि लेने छल। ओतय, साँझके काल ओ बढ़ईगीरी, लुहारगीरी आ दोसर जरूरी कला सभके अध्ययन ओहि पोथीसं करैत छल जे फार्म हाउस सँ उठा आनले छल। स्नोबॉल अपनाके दोसर जानमाल के संगठित करहिमे उलझाके राखैत छल। एकरा ओ पशु समिति कहैत छल। ओ अहि काजमे बिना थाकल जुटल रहैत छल। ओ मुर्गीक लेल अंडा उत्पादन समिति (एकर उद्देश्य मूस आ खरगोश के पालतू बनाबैक छल), भेड़क लेल धवल ऊन आंदोलन आ अहि तरहे के कतेक रास समितियाँ बनौलक। एकर अलावा, ओ पढ़य-लिखय लेल कक्षा चलैलक। कुल मिलाके ई सभटा परियोजनाएँ टायँ-टायँ फिस्स भ' गेल। उदाहरणक लेल, जंगली जीव-जंतु के पालतू बनाबैक कोशिशते ओहि काल चूँ बाजि गेल। ओ पहिने के तरहे बर्ताव करैत रहल आ जखन हुनका सँ उदारता सँ पेश आयल गेल ते ओ एकर फायदा उठायब शुरू क' देलक। बिलाय पुनर्शिक्षा समितिमे शामिल भ' गेल। किछु दिन धरि ते ओ अहिमें बड़ उत्साहित रहल। एक दिन ओ छत पर बैस गौरैयासं गप करैत लेखाह देलक ओ बिलाय के पहुंचसं बाहर छल। ओ बता रहल छल जे सभ पशु-पक्षी आब मित्र अछि आ कोनो भी गौरैया ओकर पंजा पर आबि के बैस सकैत अछि, मुदा गौरैया अप्पन दूरी बनाके राखलक।

अलबत्ता, पढय-लिखयके कक्षा खूब सफल रहल। शरद ऋतुके आबैत-आबैत बाड़ाक सभटा पशु किछु हद धरि साक्षर भ' चुकल छल।

सुग्गर ते पहिने सँ नीक जेकां पढि आ लिखि सकैत छल। कुक्कड़ किछु हद धरि पढ़ब सीखी लेने छल, मुदा ओ सात धर्मादेशक अलावा, किछु पढ़ब आ सीखबाक लेल इच्छुक नै छल। मुरियल बकरी कुक्कड़ सँ कनि नीक जेना पढ़ि लैत छल, आ कतेक बेर साँझक काल घूरक

ढेरमे से भेटल अखबारक कतरन के पढिकें दोसरा कें सुनबैत छल। बैंजामिन सुग्गर जेना पढि लैत छल, मुदा ओकरा लेल ओ कहियो कपाड नै खपैलक।

ओकर कहब छल जे, जतय धरि ओ जानैत अछि, किछु पढ़य लायक नै अछि। क्लोवर पूरा वर्णमाला सीख लेलक, मुदा ओ अक्षरके एक संग नै राखि सकैत छल। बॉक्सर ई सँ आगू नै बढ़ि पायल, ओ अप्पन बड़का सुम सँ धूलमेअ, आ, इ, ई उकेरैत छल आ फेर कान ठाड़ क' ओहि अक्षरके घुरैत रहैत छल। कखनो-कखनो अप्पन भालकेशके हिलाबैत छल, अप्पन कपाड़ पर पूरा जोर लगाके ख्याल पारय के कोशिश करैत छल जे एकर बाद की आबैत अछि, मुदा कहियो सफल नै भ' सकल। कतेक बेर ओ सतमे उ, ऊ, ए, ऐ धरि ख्याल पारि लेलेक, मुदा जा धरि अहि अक्षरके जानि सकैतिये, हमेशा यैह पता लागल जे ओ अ, आ, इ, ई सेहो बिसरि चुकल अछि। आखिरकार ओ तय क' लेलक जे ओ पहिने अप्पन चारिटा अक्षरों सँ संतुष्ट रहत। ओ अप्पन याददाश्त ताजा करहि के लेल दिनमे एक-दू बेर लिखि लैत छल। मौली अप्पन नामक अक्षरक अलावा किछु सीखबाक लेल मना क' देने छल। ओ किछु गाछक डंठी ल' क' बड़ साफ सँ अप्पन नामक अक्षर बनाबैत छल आ फेर फूल सँ सजबैत छल। तखन ओ आत्ममुग्धा-सं एकर चारु काट चक्कर काटैत छल।

बाकी जानमालमे सँ कियो अ अक्षर सँ आगू नै पहुंच सकल। ई सेहो पाओल गेल जे भोंदू किस्मक प्राणी, जेना भेड़, मुर्गी आ बत्तख ई सात धर्मादेश के कंठस्थो न क' सकल। बड़ सोचला-बिचारलाक बाद स्नोबॉल घोषणा केलक जे देखल जाय ते अहि सात धर्मादेशके असगरे सूत्रवाक्यमे गूथल जा सकैत अछि। ओकरा घटायल जा सकैत अछि,चार टाँगे नीक, दू टाँग खराब। ओकर कहना छल जे अहिमे पशुवादक आवश्यक सिद्धांत आबि गेल अछि। जे भी एकरा नीक सें ग्रहण क' लेत, ओ लोकक प्रभावसं बचल रहत। शुरू-शुरूमे चिड़य सभके अहि पर आपत्ति छल कियैकि हुनका ई लागल जे हुनको सभके दूए टा टाँग अछि, मुदा स्नोबॉल सिद्ध क' देलक जे एहन नै अछि।

'कॉमरेड्स,' ओ बाजल, 'चिड़ियाके पर फड़फड़ाबय बला यानी देहक आगू लय जाय बला अंग अछि, नै की स्वार्थ साधैक अंग। ताहि सं पंख के पइर मानल जेबाक चाहि। लोकक सबसं खास निशानी ओकर हाथ अछि। अहि के संग ओ दुनिया भरि के छल-कपट करैत अछि।'

चिड़ियों के स्नोबॉलक भारी-भरकम शब्दावली बुझयमे नै आयल, मुदा ओ एकर व्याख्या स्वीकार क' लेलक। सभ छोट, निरीह प्राणी नव सूत्रवाक्यके रटब शुरू क' देलक। 'चारि टाँग नीक, दू टाँग खराब' के बखारक आखिरी भीत पर, 'सात धर्मादेश' के ऊपर आ पैघ-पैघ अक्षर मे खुदवा देने छल। एक बेर ओकरा कंठस्थ क' लेलाक बाद भेड़मे अहि सूत्रवाक्यक लेल बड़ प्रेम उमड़ल। ओ अकसर बाधमे पटायल-पटायल अचानक मिमियाबै लागैत छल- 'चारि टाँग नीक, दू टाँग खराब, चारि टाँग नीक, दू टाँग खराबण' एकरा ओ घंटा धरि अलापैत रहल छल। कखनो ओगताबैत नै छल।

नेपोलियनके स्नोबॉलक समितिमे कोनो दिलचस्पी नै छल। ओकर कहब छल जे छोट सभहक पढ़ाई पैघ भ' चुकल प्राणियोंक लेल किछु करबाक सँ बेसी महत्वपूर्ण अछि। भेल ई जे जेस्सी आ ब्लूबैल, दुनू सुखल घासक फसलक तुरंत बाद पिल्ला जनमलक। दुनू कुल मिलाके नौटा तगड़ा पिल्लाक जन्म देलक। ओकर दूध छुड़ाके जायत नेपोलियन ओकर मां सँ ई कहैत ल' गेल जे ओ ओकर पढ़ाय-लिखायक जिम्मेदारी उठायत। ओ ओकरा सभके एकटा टाँड़ पर ल' गेल। अहि पर साज-सामानक कोठली सँ एकटा सीढ़ी सँ चढ़ल जा सकैत छल। ओ ओकरा सभके ओतय इत्ते एकांतमे राखलक जे बाड़ाक बाकी प्राणी जल्दिये ओकर सभके अस्तित्व क' ल' क' बिसुरि गेल।

दूध कतय गायब भ' जायत अछि, एकर रहस्य सँ जल्दिये परदा उठि गेल। एकरा रोज सुग्गरक सानीमे मिलाओल जायत छल। मौसमके शुरू बला सेब आब पाकय लागल छल। बगीचाक घास अपने आप गिरेबला सेब सँ पाटल छल। सभ मालजाल ई मानि के चलि रहल छल जे वास्तवमे ई सेब सभमे बराबर बांटि देल जायत। अलबत्ता, एक दिन एकटा आदेश जारी करल गेल जे नीचां गिरल सेब इकट्ठा क'साज-सामानबला कोठलीमे सुग्गरक इस्तेमालक लेल आनैक अछि। अहि पर किछु मालजाल भुनभुनैलक मुदा कोनो फायदा नै भेल। सभटा सुग्गर एतय धरि स्नोबॉल आ नेपोलियन सेहो, अहिमुद्दा पर पूरा सहमत छल। स्क्वीलर के दोसराक आगू व्याख्या करहिके दृष्टि सँ भेजल गेल।

'कॉमरेड्स', ओ चिकरलक, 'हमर खयाल अछि जे अहाँ कल्पना नै क' सकैत छी जे हम सुग्गर सभ ई सभ किछु स्वार्थ आ सुविधाक भावना सँ कहि रहल छी। हमरामे से कतेक रास गोटा के ते दरअसल दूध आ सेब पसंद नै अछि। हम अपने एकरा नापसंद करैत छी। अहि चीज के आनय के पाछां हमर उद्देश्य सिर्फ यैह टा अछि जे हम अप्पन सेहत बनाके राखब। दूध आ सेवमे सुग्गर के नीक स्वास्थ्यक लेल बड़ जरूरी माने बला सभटा तत्व मौजूद अछि। (एहि गपके विज्ञान सिद्ध केने अछि, कॉमरेड) हम सुग्गर सभ दिमाग सँ काज करय बला लोक छी। अहि पूरा बाड़ाक व्यवस्था आ संगठन हम पर निर्भर करैत अछि। हम दिन-राति अहाँ सभक लेल माथ खपाबैत छी। की अहाँ जानैत छी जे जों हम सुग्गर सब अप्पन कर्तव्यमे असफल भ' जाय ते की गजब भ' जायत! जोंस घुरि के आबि जायत। हाँ, जोंस घुरि के आबि जायत। ई तय अछि, कॉमरेड्स, स्क्वीलर, बिलकुल चिरौरी करैत गरजल। ओ बाम-दहिन फुदकय लागल। ओकर पूँछरी तेजी सँ हिलय लागल। निश्चिते अहाँ सभमे कियो नै चाहत जे जोंस वापस आबै?'

जों कोनो गप छल जाहि पर मालजालक पूर्ण सहमति छल ते ओ यैह छल जे कियो जोंसक घुराब नहि चाहैत छल। ओ पूरा गप अहि आलोकमे बुझायल गेल, ते हुनका लग कहबाक लेल किछु नै बचल। सुग्गरके नीक सेहतमे रहैक महत्ता एकदम स्पष्ट भ' गेल छल। ताहि सँ ई तय भेल जे आओर बहस केला बिना दूध आनीचां गिरल सेब (आओर पाकि गेला पर सेबक मुख्य फसल सेहो) सिर्फ सुग्गरटा लेल आरक्षित रखल जाय। ❐

शोध पत्र जमा करबाक लेल दिशा-निर्देश

- शोध-पत्र एमएस वर्डमे मंगल बा कृतिदेव फॉण्टमे 14 पॉइंट साइजमे टंकित करायके ई-मेल करू।
- शोध-पत्र लिखैत काल सन्दर्भक स्पष्ट उल्लेख करू। पुस्तकक सन्दर्भ, पत्र-पत्रिकाक सन्दर्भ, प्रकाशन वर्ष आ संस्करणक अंकित हेब अनिवार्य अछि। सन्दर्भक लेल ए.पी.ए. -छठम शैली (APA 6th Edition) के उपयोग करब अनिवार्य अछि।
- शोधपत्र पूर्ण रूपेण मौलिक हेबाक चाही, जेकर घोषणा-पत्र संलग्न हेबाक चाही, नहि त' शोध-पत्र पर विचार नहि कयल जायत।
- शोध-पत्रक प्रकाशन संपादक-मंडल पर निर्भर अछि। संपादक-मंडल केँ संतुष्ट हेबाक बादे शोध-पत्र प्रकाशित कयल जायत।
- शोध-पत्रक आरंभ शोध-सारांश (बेसी सं बेसी 100 शब्द) आ अंतमे निष्कर्ष अवश्य लिखू।
- पोथी-समीक्षाक लेल संपादकक लग कार्यालय के पता पर पठाबी।

पाठकसं अनुरोध

'तीरभुक्ति' मिथिला आओर अहि सं जुड़ल मुद्दा पर मैथिली मे प्रकाशित हुअय बला जर्नल अछि। अहिमे मैथिली आओर मिथिला सं जुड़ल अकादमिक विशेषज्ञ, लेखक, पत्रकार आ विश्लेषक के शोध रचना पढ़ल जा सकैत अछि। 'तीरभुक्ति' के अहाँ के सहयोग आ समर्थन भेटैत रहय, अहिमे 'तीरभुक्ति' के सफलता छै। हम चाहैत छी जे अहाँ अपन अहि जर्नल के आओर बेसी लोकप्रिय बनाबैक लेल मिथिला, मैथिली आ अहि सं जुड़ल विषय पर रूचि राखय बला पाठक के 'तीरभुक्ति' के वार्षिक सदस्यता लेबाक लेल प्रेरित करी। 'तीरभुक्ति' सालमे चारि बेर प्रकाशित होयत।

मूल्यः एक प्रतिः 25 टाका, वार्षिक मूल्यः 100 टाका (चारि अंक),
पांच वर्ष (20 अंक): 500 टाका

(पत्रिका डाक वा कूरियर माध्यमे वा रजिस्टर्ड एयरमेल सं पठाओल जायत,
जेकर शुल्क अहि मूल्यक संग जुड़ल अछि)
सदस्यता लेल अपन पूरा नाम, पता (पिन कोड सहित), मोबाइल नंबर,
*चेक/ड्राफ्ट सहित **'अखिल भारतीय मिथिला संघ'** के नाम पर कार्यालय के पता पर पठाबी।*

हार्दिक शुभकामनाक संग

डॉ. ममता ठाकुर, एम.डी.

स्त्री रोग विशेषज्ञ

MCI No. 12999, DMC Reg. No. 10440

ठाकुर मेडिकेयर सेंटर

शालीमार गार्डेन, साहिबाबाद,
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

मो. 9717258787

29 दिसंबर 2017 को प्रकाशति

RNI Reference No. : 1322786
Title Code : DELMAI00042

अखिल भारतीय मिथिला संघ
विविध वार्षिक सम्मान

अखिल भारतीय मिथिला संघ हर साल मिथिला विभूति स्मृति सम्मान समारोहक आयोजन करैत आबि रहल अछि। वर्ष 2015 सँ एहि समारोह केँ किछु विशिष्ट स्वरूप देबय केँ प्रयास शुरू कएल गेल। एहि क्रममे तीन टा विशिष्ट सम्मान, नामतः, सर गंगानाथ झा सम्मान, बाबू साहेब चौधरी सम्मान आ भोगेन्द्र झा सम्मान आरंभ कएल गेल। अगिला वर्ष अर्थात् 2016 मे एहि कड़ीमे यात्री सम्मान सेहो जुटि गेल। एहि चारु पुरस्कार सँ एखन धरि सम्मानित विभूति सबहक सूची नीचा प्रस्तुत अछि:

सर गंगानाथ झा सम्मान

अकादमिक क्षेत्रमे उत्कृष्ट योगदानक लेल
(वर्ष 2015 सँ आरंभ)

2015 : श्री संदीप झा, संदीप फाउंडेशन, मुम्बई
2016 : श्री उदयनारायण सिंह नचिकेता, कोलकाता
2017 : श्री मानस बिहारी वर्मा, दरभंगा

बाबू साहेब चौधरी सम्मान

मिथिला-मैथिलिक लेल संघर्षरत व्यक्तिक सम्मान
(2015 सँ आरंभ)

2015 : श्री अशोक झा, कोलकाता
2016 : श्री कमलेश झा, मधुबनी
2017 : श्री लक्ष्मण झा 'सागर', कोलकाता

भोगेन्द्र झा सम्मान

राजनीति समाजमे उल्लेखनीय योगदानक लेल
(2015 सँ आरंभ)

2015 : मैथिली पुत्र प्रदीप, दरभंगा
2016 : श्री एन. के. झा, सीए, पटना
2017 : श्री वीरेन्द्र मल्लिक, दिल्ली

यात्री सम्मान

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ट योगदानक लेल
(2016 सँ आरंभ)

2016 : श्री जगदीश मंडल, दिल्ली
2017 : श्री भीमनाथ झा, दरभंगा

प्रकाशक आ मुद्रक विजयचंद्र झा द्वारा अखिल भारतीय मिथिला संघक दिशसँ मकान नंबर एच-435, गली नं. 7, ई-ब्लॉक, संगम विहार, नई दिल्ली-110062 सं प्रकाशित आ जे.के. ऑफसेट, बी-278, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्लीसँ मुद्रित।
संपादक : विनीत कुमार झा 'उत्पल'